हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश

जिसमें विषयों के अनुसार समस्त व्यावहारिक शब्दों के पर्य्यायों का वर्गीकरण ४ खण्ड और ३७ वर्गों में बड़ी उत्तमता के साथ हुआ है।



लेखक

पंडित श्रीकृष्ण शुक्ल-विशारद

अध्यापक, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, बनारस।



प्रकाशक

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

विक्रमाब्द १९९२

प्रकाशक—
कैलाशनाथ भार्गव
भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस।

प्रथम संस्करण	जून, सन् १९२५ ईस्वी०	मूल्य २॥) सजिल्द

मुद्रक—
मा० रा० काले
श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी।



समर्पण

भूत-भावन भगवान् शंकर ! आपकी ही प्रेरणा
से एक दिन इस ग्रन्थ का लिखना आरम्भ
हुआ था और आज भी आपकी ही
प्रेरणा से यह समाप्त होकर आपके
अभयप्रद श्रीचरणों में सादर
समर्पित होता है ।

लेखक

परिचय



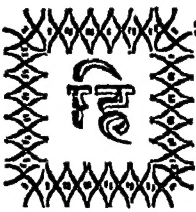
जकल हिन्दी के कई छोटे-बड़े शब्द-कोश बन गये हैं जिनका संकलन अक्षर क्रम से होने के कारण ज्ञात शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने में बहुत सुबीता रहता है। पर शब्द-कोश-संकलन की एक और पुरानी पद्धति हमारे यहाँ प्रचलित थी, जिसमें वस्तुओं के वर्गीकरण के अनुसार शब्द रखे जाते थे। वह पद्धति सर्वथा अनुपयोगी नहीं कही जा सकती। अक्षर-क्रम से संकलित आधुनिक ढंग के कोशों में हम ज्ञात शब्दों के अर्थ निकाल सकते हैं। पर यदि किसी को कोई वस्तु या पदार्थ ज्ञात है, पर उसके लिये ठीक शब्द उसके ध्यान से उतर गया है, तो उसका काम अक्षर क्रम वाले कोशों से नहीं निकल सकता। उसके लिये वस्तुओं के वर्ग-विधान वाले कोश ही काम दे सकते हैं। ऐसे कोशों से कविता या लेख लिखने का अभ्यास करने वाले भी लाभ उठा सकते हैं। किसी दृश्य के वर्णन के लिये उन्हें बहुत से वृक्षों, पशुओं या नगर की वस्तुओं के लिये अनेक प्रकार के शब्द एकत्र मिल सकते हैं। यही बात किसी प्रसंग के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। किसी शब्द के अनेक पर्य्यायवाचक शब्द भी चुनाव के लिये एक जगह मिल जायँगे।

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायँगे उतनी ही सुगमता शब्द ढूँढ़ने वालों को होगी। हिन्दी में "अनेकार्थ नाममाला" ऐसे कुछ पद्यबद्ध पुराने कोश बने थे, पर पद्य-बद्ध होने के कारण उनके पर्य्याय शब्दों के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की संभावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमें केवल पर्य्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्यौतिष इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह स्तुत्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है। आशा है जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी
१८-५-२५

रामचन्द्र शुक्ल
प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,
हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी।

प्राक्कथन



न्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते है। शब्द-कोशों मे समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इने-गिने शब्दों को लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होते हैं और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द-दारिद्रय का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्य्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यलम् समझ कर चुप बैठते हैं।

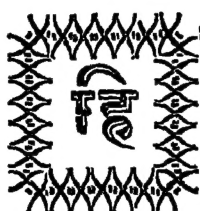
इस प्रकार की कठिनाइयाँ हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्य्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्य्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्य्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश'

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायँगे उतनी ही सुगमता शब्द ढूँढ़ने वालों को होगी। हिन्दी में "अनेकार्थ नाममाला" ऐसे कुछ पद्यबद्ध पुराने कोश बने थे, पर पद्यबद्ध होने के कारण उनके पर्य्याय शब्दो के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की संभावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमे केवल पर्य्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्यौतिष इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह स्तुत्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है। आशा है जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी
१८-५-३५

रामचन्द्र शुक्ल
प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,
हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी।

प्राक्कथन


न्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते हैं। शब्द-कोशों में समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इने-गिने शब्दों को लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होते है और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द-दारिद्रय का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्य्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यलम् समझ कर चुप बैठते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयाँ हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्य्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्य्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्य्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश'

नामक अत्यन्त व्यापक और प्रचलित संस्कृत कोश से ही मिल जाती है। हिन्दी-संसार के इस समुन्नत क्षेत्र में इस प्रकार का अभाव मेरे लिये असह्य हो गया। मैं दिन-रात इसी चिन्ता में व्यग्र था कि किस प्रकार हिन्दी के माथे से इस अभाव का कलङ्क मिटाया जाय। मैंने एक बार अपनी यह चिन्ता गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान दीनजी के समक्ष प्रकट की और उनसे प्रार्थना की कि वे इस अभाव को दूर करके हिन्दी के भण्डार की एक वृहत् पर्य्याय कोश से अभिवृद्धि करें। पहिले तो लालाजी ने मेरी प्रार्थना पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब मैं इसी बात को लेकर उनके पीछे पड़ गया और कई बार अपनी आकांक्षा प्रकट की तब एक दिन आपने मुझसे झिझक कर कहा कि "मुझे तो समय नहीं है, तुम्हीं क्यों नहीं लिख डालते ?"

मेरे हृदय में इस विचार का बीजारोपण तो पहिले ही से हो चुका था, उसपर "गुरोराज्ञा गरीयसी" का सिञ्चन पाकर पूर्वारोपित बीज अंकुरित हो उठा। "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है" इस सिद्धान्त के अनुसार मैं अपने कार्य के साधनों का जुगाड़ करने लगा और विश्वेश्वर की अनुकम्पा एवं गुरुवर के आशीर्वाद से विक्रमाब्द १९७८ की गुरुपूर्णिमा को मैंने इस कार्य का आरम्भ किया। प्रायः तीन महीने के परिश्रम से प्रथम खण्ड समाप्त करके मैंने गुरुवर लालाजी के सामने अपना सङ्कलन रखा, जिसे देखकर उन्हें आश्चर्य और अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने मेरी पीठ ठोंकी और अपने अन्तःकरण की रत्नमञ्जूषा से निकाल कर शुभाशीर्वाद-रत्न का पुरस्कार दिया। मेरा उत्साह और साहस बढ़ा। मैंने सहायक ग्रन्थों का संग्रह करना आरम्भ किया। कुछ ही साधक ग्रन्थ जुट पाये थे कि अनेक सांसारिक झंझटों के कारण कई वर्षों तक यह कार्य स्थगित रहा। इसी बीच में मेरे प्रोत्साहक गुरुवर लालाजी का स्वर्गवास हो गया। परन्तु उनका दिया हुआ सत्साहस एवं आशीर्वाद-रत्न मेरे हृदय के एक कोने में सुरक्षित रहा, जिसके दिव्यालोक में

मैंने पुनः लिखना आरम्भ किया। कार्य की अधिकता एवं समय का अभाव होते हुए भी मैं अपने अनुष्ठान में लगा रहा और इधर प्रायः तीन वर्षों के अविरत परिश्रम से आषाढ़ कृष्ण एकादशी सं० १९९१ वि० को यह "हिन्दी-पर्य्यायवाची-कोश" समाप्त होकर सर्वान्तर्यामी भगवान शंकर के चरणारविन्द में समर्पित हुआ।

विषयों के अनुसार इस ग्रन्थ का विभाजन चार खण्डों में किया गया है। प्रथम खण्ड में देवादि शब्दों के पर्य्याय दिये गये हैं, जिसमें देवता, देवतुल्य विशिष्ट व्यक्ति, तीर्थ, आकाश के ग्रहोपग्रह नक्षत्रादि, दिशाकालादि के नामों के पर्य्याय कुल छः वर्गों में विभाजित हैं, जिनमें मूल शब्दों की संख्या २६७ है। द्वितीय खण्ड में स्थल एवं जल के विभिन्न विभागों के साथ-ही-साथ उद्भिज, खनिज और जलजादि सम्बन्धी शब्दों के पर्य्यायों का वर्गीकरण १५ वर्गों में हुआ है, जिनमें कुल ५८६ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। तृतीय खण्ड में मानव जगत के शब्दों का विभाजन ११ वर्गों में किया गया है, जिनमें कुल ९९८ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं, चतुर्थ खण्ड में मानवेतर जीवों (पशु-पक्षी-कीट-पतङ्गादि) एवं कुछ चुने हुए क्रियापदों के पर्य्याय दिये गये हैं, जिसमें कुल ५ वर्गों में विभाजित ४०० मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। इस प्रकार यह सम्पूर्ण ग्रन्थ विषयानुसार ३७ वर्गों में विभाजित है, जिनमें कुल २२५१ मूल शब्दों के पर्य्याय हैं। ग्रन्थ का वर्गीकरण करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि हमारे व्यवहार में आनेवाले विषय एवं उनके अन्तर्गत उपयोगी शब्द यथासम्भव न छूटने पावें। फिर जहाँ इन्द्रादिक देवता भी शब्द-वारिधि का पार न पा सके वहाँ हमारी तुच्छ बुद्धि उसके अवगाहन में कहाँ तक समर्थ हो सकती है?

वर्गों के अनुसार शब्द-संग्रह करने में मुझे विभिन्न विषयों के ग्रन्थों से सहायता लेनी पड़ी। हिन्दी-शब्द-कोशों में अर्थ-विचार से इने-गिने शब्द रखे जाते हैं, उनसे पर्य्याय का पूरा मतलब हल नहीं हो पाता।

सुतरां संस्कृत कोशों की सहायता के बिना शब्द-भाण्डार सर्वथा अपूर्ण ही रहता है। अतः मैंने संस्कृत के अमरकोश, वैजयन्ती कोश, मेदिनी कोश, शब्दकल्पद्रुम से, एवं हिन्दी के शब्दसागर शब्दार्थपारिजात, नाममाला (नन्ददास) और विश्वकोश से शब्दों के पर्य्यायों का संग्रह किया। जब इतने ग्रन्थों से शब्द-संग्रह करने पर भी मुझे आयुर्वेद, ज्यौतिष सम्बन्धी शब्दों के यथेष्ट पर्य्याय नहीं मिल सके तब मैंने आयुर्वेद और ज्यौतिष के ग्रन्थों से शब्द संग्रह करना आरम्भ किया। इस प्रकार मैंने शालिग्राम निघण्टु, राजनिघण्टु, हरीतक्यादि निघण्टु, बृहन्निघण्टु रत्नाकर, भाव-प्रकाश, माधव-निदान आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों एवं सूर्य्य-सिद्धान्त, ग्रह लाघव, मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि ज्यौतिष ग्रन्थों से एत-द्विषयक शब्दो का सङ्कलन किया।

यद्यपि यह ग्रन्थ केवल पर्य्याय के अभिप्राय से लिखा गया है, तथापि पाठकों की विशेष जानकारी के लिये मैंने यथास्थान उपयोगी पादटिप्प-णियों का भी समावेश कर दिया है। इन टिप्पणियों में अनेक शास्त्रो एवं पुराणादिकों के मतानुसार कहीं तद्विषयक विस्तृत व्याख्या, कहीं परिभाषा, कहीं परिचय और कहीं वस्तुओं के आकार प्रकार, भेद, गुण दोषादि का विवेचन किया गया है। जैसे 'दुर्गा' का पर्य्याय देते हुए टिप्पणी में देवी के अन्तर्गत पञ्चदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा, नवकन्यका, नवशक्ति, दश महाविद्या और चौंसठ योगिनियों के नामों का उल्लेख कर दिया गया है। 'अग्नि' शब्द की टिप्पणी में वैद्यक मत से अग्नि के तीन प्रकार एवं कर्म-काण्डानुसार अग्नि के छ- भेदों का उल्लेख हुआ है। 'वायु' शब्द पर शरीरस्थ पञ्चवायु एवं उनचासो पवनों के नाम दिये गये हैं। सूर्य और चन्द्र की क्रमशः बारह और सोलह कलाओं के नाम दिये गये हैं। खनिज वर्ग मे गन्धक, हरिताल, अभ्रक और शिलाजीत के भेद, उत्पत्ति, लक्षण और गुणो की व्याख्या पुराण और वैद्यक दोनों मतानुसार की गई है। इसी प्रकार संस्कार, विद्या, व्यसन और कलाओं के भेदों के नाम, नाट्यशास्त्रा-

नुसार रूपकों और उपरूपकों के भेद, गायन-वादन कला के अनुसार स्वर-तालादि के भेदोपभेद वर्णित हैं। इस प्रकार पाद टिप्पणियों के समावेश से ग्रन्थ की उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। मेरा विश्वास है कि ये पाद टिप्पणियाँ पाठकों को मनोरञ्जन के साथ ही साथ अपनी उपयोगिता से सन्तुष्ट करेंगी।

मुझे इस बातका अवश्य दुःख है कि शब्दो के जितने पर्य्याय मैंने दिये हैं, वे सबके सब अपने मूल शब्द के आन्तरिक भावों के द्योतक नहीं हो सके। बहुत से ऐसे शब्द हैं जो वास्तविक पर्य्याय न होकर पर्य्यायाभास मात्र कहे जा सकते हैं। परन्तु उनके प्रयोगों की रूढ़ि पर्य्याय रूप से ही चली आ रही है, अतएव वे अब पर्य्याय ही में परिगणित हो रहे हैं। ऐसे शब्दों के सङ्कलन करने में मेरा विशेष दोष नहीं। हम संस्कृत कोशों में भी ऐसे दोष पर्य्याप्त रूप मे पाते हैं। वास्तव में उन कोशकारों ने भी शब्दों के पर्य्याय देने में वस्तुओं के आकार-प्रकार, गुण-दोष, एवं व्यवहारादि के अनुसार पर्य्याय दिये हैं। अतः कहीं-कहीं तो शब्द वाच्यार्थ बोधक और कही लक्ष्यार्थ बोधक हो गये हैं। जैसे 'शंखाहुली' का पर्य्याय 'मेध्या' है। यह वास्तविक पर्य्याय नहीं, प्रत्युत यह नाम शंखाहुली में मेधा शक्ति बढ़ानेवाले गुण के अनुसार है। अतः यह शंखाहुली का वाचक नहीं लक्षक शब्द कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'तरबूज़' नामक फल का पर्य्याय उसके आकार-प्रकार के अनुसार माँसफल, माँसल, सुवर्त्तुल दिया गया है एवं उसके स्वाद के अनुसार 'सुखाश' नाम पड़ा है।

ऐसे ही बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके पर्य्याय किसी अन्य शब्द के पर्य्याय से मिलते हैं। यथा 'हलदी' शब्द के जितने पर्य्याय हैं उनसे 'रात्रि' का एवं 'रात्रि' के पर्य्याय से हलदी का परस्पर समान बोध होता है। इसी प्रकार 'भिलावाँ' और 'अग्नि' शब्द के पर्य्याय परस्पर एक दूसरे के अर्थ बोधक हैं। विज्ञजन प्रसंगानुसार वास्तविक अर्थ लगा लेते हैं।

अनेकार्थ बोधक बहुत से ऐसे शब्द भी मिलते हैं ,जो कई शब्दों के पर्य्याय हैं। जैसे 'हरि' शब्द सिंह, बन्दर, विष्णु भगवान और सुवर्ण का; 'शिव' शब्द सियार, शंकर भगवान और कल्याण का एवं 'पुष्कर' शब्द आकाश, जल और पोखर (तालाब) का बोधक होता है। अस्तु अनेक शब्दों के अनेक अर्थ होने पर भी प्रसंगानुसार उनसे एक ही अर्थ का बोध किया जाता है।

हमारी व्यावहारिक हिन्दी भाषा में पर्य्यायों का प्रयोग प्रायः नहीं होता, इसलिये हमें अर्थ मे एक ही शब्द का प्रयोग जो परम्परा से चला आता है, करने का अभ्यास पड़ गया है। कहीं-कहीं एक अर्थ में एक से अधिक दो या तीन शब्द भी प्रयोग में आते हैं, बस इतना ही बहुत है। जैसे पानी के लिये पानी या जल इन्हीं दो शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा भाषियों में प्रचलित है। अब इनके अतिरिक्त किसी अन्य पर्य्याय जैसे घन, रस, अमृत, वारि तोय, जीवन आदि का प्रयोग करें तो वह एक हँसोड़ मात्र होगा। हाँ, पद्य रचना में हम पर्य्यायों का स्वेच्छया प्रयोग करते हैं और वह परम्परित प्रथा होने के कारण कुछ बुरा भी नहीं जान पड़ता। किसी देश, प्रान्त वा समाज की बोलचाल की भाषा प्रायः सरल एवं परम्परित होती है किन्तु उसी देश वा समाज के साहित्य की भाषा बोलचाल की भाषा की अपेक्षा कुछ क्लिष्ट और अप्रचलित हो सकती है। कारण इसका केवल यही जान पड़ता है कि बोलचाल की भाषा पठित एवं अपठित समाज में समान रूप से व्यवहृत होती है, इसी लिये उसका एक सरल व्यापक और परम्परित रूप ही व्यवहार में आता है और साहित्य की भाषा पठित समाज के सामने आती है इसलिये उसका क्षेत्र बोलचाल की भाषा से अधिक व्यापक और रूप कहीं-कहीं क्लिष्ट भी होता है। इसमे ही हम एक अर्थ का बोध कराने वाले अनेक पर्य्यायों का प्रयोग करते हैं। हमें अपने भावों के व्यक्त करने में कभी-कभी शब्दों के लक्षक एवं व्यञ्जक रूपों का भी प्रयोग करना पड़ता है, और उस समय उनसे

वाच्यार्थ न निकाल कर लक्ष्यार्थ वा व्यङ्गयार्थ ही का बोध करना श्रेयस्कर होता है। जैसे 'तुमतो पूरे नारद हो', वह बड़ा कौआ है, वह तो सूख कर काँटा हो गया है, इनमें नारद का लक्ष्यार्थ झगड़ालू, कौआ का चेष्टावान और काँटा का अत्यन्त कृश ही होगा। यहाँ वाच्यार्थ कहनेवाले का भाव कदापि स्पष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार जब हम दूब नामक घास का प्रयोग साधारणतः घास के अर्थ में करना चाहते है तब तो दूब वा दूर्वा भले ही कहलें, परन्तु जब उसका प्रयोग किसी मंगल सूचक अर्थ मे किया चाहते हैं तब उसे मंगल्या, अमृता, गौरी, गुणा, विजया, शिवा, शिवेष्टा, शुभा, स्वच्छा, सुरवल्लभा, अनन्ता, महावरा आदि अनेक मंगल वाचक शब्दों से बोधित करते है। क्योंकि ये शब्द दूर्वा में मंगलात्मक गुणों का लक्ष्य कराते हैं, अतः ये दूब के लक्षक पर्य्याय हैं। इसी प्रकार शब्दों के विभिन्न पर्य्याय उनके गुण, दोष, बल, वीर्य, विपाक, आकार, प्रकार, आदि के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में प्रयुक्त हो सकते हैं। अब इन पर्य्यायों का उचित उपयोग उनके प्रयोग करने वाले की योग्यता पर निर्भर है वह चाहें उसका उचित प्रयोग करें वा अनुचित, इसके लिये यश वा अपयश के भागी वे ही हो सकते हैं। पर्य्याय तो सभी ठीक हैं।

इस कोश में विभिन्न ग्रन्थों से ऐसे भी शब्द संकलित हुए हैं। जिनमें से अधिकांश हमारे व्यवहार और प्रयोग से दूर हो गये हैं। अतः उनके ठीक ठीक रूपकरण में मुझे सन्देह है। मैंने उन ग्रन्थों में,—जिनसे शब्द-संग्रह किया है, जैसा रूप देखा ज्यों का त्यों वैसा ही दिया है, यदि कहीं उनके रूप अशुद्ध रह गये हों तो विद्वज्जन सुधार कर मुझे उसकी सूचना देने का कष्ट करेंगे। मैं उनके इस उपकार का आभारी रहूँगा। इसके अतिरिक्त कुछ प्रूफ संशोधन में भी भूलें रह गई हैं, जिनके लिये ग्रन्थारम्भ से पूर्व "शुद्धि-पत्र" देकर उनका सुधार कर दिया गया है। पाठक कृपया उसके अनुसार संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन करें।

"हिन्दी-पर्य्यायवाची-कोश" लिखने में जिन २ ग्रन्थों से मैंने सहायता ली है, उनके नाम नीचे दिये जाते हैं—

संस्कृत-ग्रन्थ—

१. अमरकोश
२. मेदिनीकोश
३. वैजयन्तीकोश
४. जटाधर
५. शब्दकल्पद्रुम
६. माधवनिदान
७. भावप्रकाश
८. शालिग्राम निघण्टु
९. हरीतक्यादि निघण्टु
१०, राज निघण्टु
११. बृहन्निघण्टु रत्नाकर
१२. सूर्यसिद्धान्त
१३. ग्रहलाघव
१४. मुहूर्त्त चिन्तामणि
१५. अग्निपुराण
१६. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण
१७. देवीपुराण
१८. राजवल्लभ
१९. गारुड़ी
२०. कामसूत्रम् (वात्सायन)
२१. काव्य-प्रकाश
२२. संगीत दामोदर
२३. मनुस्मृति
२४. चाणक्यनीति
२५. शुक्रनीति

हिन्दी-ग्रन्थ—

२६. रामचरितमानस
२७. काव्य-प्रभाकर
२८. रूपक-रहस्य
२९. शब्द-सागर
३०. विश्वकोश
३१. नाममाला
३२. नाम-रामायण
३३. शब्दार्थ पारिजात
३४. मङ्गलकोश
३५. पाक-प्रकाश

जिन ग्रन्थों से मैंने इस कोश-रचना में सहायता ली है, उनके लेखकों एवं अपने प्रथम प्रोत्साहक गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान 'दीन' जी को अभिवादन पूर्वक धन्यवाद देता हूँ। साथही मैं आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल (प्रोफेसर हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) का अत्यन्त

उपकृत हूँ जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थ का 'परिचय' लिख कर इसकी पद्धति एवं उपयोगिता का समर्थन किया है। मैं उन विद्वानों का भी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी शुभ सम्मति द्वारा ग्रन्थ की उपयोगिता प्रमाणित की है। अन्त में मैं अपने अभिन्न मित्र पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा 'रसिकेश' एम० ए० (प्रोफेसर, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जो सर्वदा हमारे सभी कार्यों में सत्परामर्श दाता रूप से सहायक रहते हैं। इस कोश की रचना में आपने ही प्रायः सभी सहायक ग्रन्थों का संग्रह करके मुझे कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहित किया है।

मैंने इस कोश का सङ्कलन अपनी बुद्धि के अनुसार यथा-साध्य बहुत कुछ खोज और परिश्रम से किया है। मेरा विश्वास है कि इस छोटे से कोश से हमारे व्यवहार के प्रायः सभी वर्ग के शब्दों के पर्य्याय मिल सकते हैं। साथही जो थोड़ी बहुत पाद टिप्पणियाँ दी गई है, उनसे भी मनोरञ्जन पूर्वक लाभ की सम्भावना है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह "हिन्दी पर्य्यायवाची-कोश" कवि, लेखक, समालोचक, शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग का एक विश्वस्त मित्र के समान सहायक, एवं सुयोग्य शिक्षक के समान शब्द-पथ-प्रदर्शक का काम देगा। यदि यह गुणग्राही पाठकों की दृष्टि में कुछ भी उपयोगी जँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। मैं सहृदय उदार विद्वज्जनों का अत्यन्त आभारी होऊँगा यदि वे इस कोश में किसी प्रकार की त्रुटि दिखाने की कृपा करेंगे, अथवा इसके संकलन का कोई इससे उत्तम सरल और अधिक उपयोगी मार्ग बताने का अनुग्रह करेंगे। मैं यथा सम्भव द्वितीय संस्करण में उनके सुधारने का प्रयत्न करूँगा।

ज्येष्ठ गङ्गादशहरा
विक्रमाब्द १९९२

विनम्र निवेदक,
श्रीकृष्ण शुक्ल

प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मति



कविसम्राट् पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी।

"हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ। ग्रन्थ उपयोगी और उपकारक है, परिश्रम से लिखा गया है। उसके प्रकाशन और संकलन के लिये आपको बधाई है। यह कवियों और विद्यार्थियों के लिये विशेष उपकारक है। आपका श्रम सार्थक है। ग्रन्थ पाकर मैं आल्हादित हुआ। आशा है हिन्दी संसार में इसका उचित आदर होगा।"



पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शर्मा एम्० ए०
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी।

"प्रस्तुत हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव सभी कर रहे थे, परन्तु पण्डित श्रीकृष्णशुक्ल ने जिस अध्यवसाय एवं लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार किया है वही इस बात का प्रमाण है कि उनके हृदय में वाङ्मय की यह न्यूनता अत्यधिक खटकती रही। आठ-दस वर्षों के सतत प्रयास से जो यह ग्रन्थ तैयार किया गया है, वह अनेक प्रकार से प्रशंसनीय है। इसकी पाद टिप्पणियाँ लेखक के विशेष ज्ञान एवं परिश्रम की ही केवल परिचायक नहीं हैं, वरन् पढ़ने वालों के लिये विशेष उपयोगी हैं। वर्तमानकाल में यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। इसका लेखक सभी प्रकार से साधुवाद का पात्र है।"



हिन्दी साहित्य के महारथी श्रद्धेय आचार्य
पण्डित महावीर प्रसाद जी द्विवेदी।

सम्मति

हिन्दी-पर्यायवाची कोश-
बड़े महत्व की पुस्तक है।
हिन्दी में ऐसी एक भी पुस्तक
अब तक मेरे देखने में न
आई थी। इस पुस्तक ने उस
अभाव की पूर्ति कर दी।
लेखक और प्रकाशक दोनों
बधाई के पात्र हैं।

म० प्र० द्विवेदी

दौलतपुर
१२-५-३५

हिन्दी के अनन्य भावुक कवि एवं सफल नाट्यकार बाबू जयशंकर 'प्रसाद' जी, काशी ।

"वर्गानुक्रम से संगृहीत शब्द कोश संस्कृत वाङ्मय में बहुत हैं। विषयानुकूल शब्दों का ज्ञान कराने में उनकी विशेष उपयोगिता है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल जी का पर्य्यायवाची कोश हिन्दी में उस शैली का प्रथम प्रयास है। इसमें उपयोगी टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। इसे देख कर मुझे प्रसन्नता हुई। आशा है कि इसके आगामी संस्करण में कुछ छूटे हुए वर्ग और भी संगृहीत होंगे और अधिक टिप्पणियाँ बढ़ाई जायँगी।

अध्यापक श्री रामदासजी गौड़ एम्० ए० अवैतनिक सम्पादक "विज्ञान" काशी ।

"मैंने पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का लिखा 'हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश' देखा। इस ढंग का हिन्दी में यह पहला ही कोश है जिसमें इतने शब्दों का गद्य मे संग्रह है। यह 'अमरकोश' की तरह वर्गानुक्रम से है। शुक्ल जी ने इसमे बहुत ही परिश्रम किया है। यह आरंभिक काम है। औरों के लिये आपने मार्ग दिखा दिया है। लेखकों, कवियों और शिक्षकों के लिये तो यह एक अनमोल चीज है। हिन्दी साहित्य के भाण्डार की शुक्ल जी ने एक अमूल्य रत्न से वृद्धि की है। आपकी पादटिप्पणियाँ बड़े काम की हैं। इस सत्संग्रह के लिये आप सर्वथा बधाई के पात्र हैं।"

पंडित रामनारायण जी मिश्र बी० ए०, पी० ई० एस्०, हेडमास्टर, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, काशी।

"पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का "हिन्दी पर्य्यायवाची कोश" देखकर मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। आश्चर्य इस बात से कि अनेक झंझटों के रहते हुए भी वे इतने महत्त्व का काम कर सके। यह उनकी बरसों की तपस्या का फल है।

प्रसन्नता इस बात से कि यह कोश हिन्दी की एक बड़ी आवश्यकता को पूरा करता है। इससे पहिले ऐसे शब्दों का कोई संग्रह मैंने हिन्दी में नहीं देखा था।

मुझे आशा है कि यदि शुक्ल जी का उत्साह बढ़ाया जायगा तो वे इसके दूसरे संस्करण में यह भी बतला सकेंगे कि इन पर्य्यायवाची शब्दों के अर्थ में क्या भेद है। शुक्ल जी को मैं इस परिश्रम की सफलता के लिए बधाई देता हूँ।



विशाल-भारत ।

अगस्त १६३५

हिन्दी पर्यायवाची कोश ।

लेखक—पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल, विशारद ।

हिन्दी मे अभिधान ग्रन्थों की प्रचुरता नही है उनकी संख्या उँगलियो पर गिनी जा सकती है प्रायः सभी अभिधान ग्रन्थों मे केवल शब्द और उनके अर्थ संग्रह किये जाते हैं । किसी-किसी शब्द के अर्थ में यदा कदा दो एक पर्यायवाची शब्द दे दिये जाते हैं । प्रस्तुत कोश की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के पर्यायवाची शब्द ले लीजिये, साधारण अभिधान ग्रन्थ में कौवा शब्द के आगे केवल इतना ही लिखा मिलेगा, एक प्रकार का बड़ा काला पक्षी काक। परन्तु प्रस्तुत पुस्तक से आपको कौवे के दो दर्जन से अधिक पर्यायवाची शब्द मिल जायँगे । हमारे यहाँ पर्यायशब्दो की कमी नहीं, हाँ लोग उन्हें जानते कम हैं इसलिये उनका व्यवहार कम करते हैं—

पर्यायवाची कोश विद्यार्थियों, शिक्षकों, कवियों और लेखकों के वड़े काम की चीज है । पर्याय शब्दों के ज्ञान और व्यवहार से भाषा समृद्धिशाली होती है यह कहने की जरूरत नहीं। लेखक और प्रकाशक ने इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी की एक कमी की पूर्ति की है जिसके लिये धन्यवाद के अधिकारी हैं ।

पृष्ठ संख्या ६४-२८८-४८ सजिल्द मूल्य २।)

मासिक

विश्वमित्र।

नवम्बर १९३

हिन्दी पर्यायवाची कोश।

लेखक—पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल 'विशारद'

संस्कृत में 'अमर कोष', 'मेदिनी कोष' आदि कोषग्रन्थ शब्दों के वर्णानुक्रम के अनुसार जिस रूप मे हैं उसी रूप में इस कोष की हिन्दी भाषा में रचना की गयी है। इसमें शब्दों के पर्याय वर्गीकरण की पद्धति पर दिये गये हैं जिससे एक ही अर्थ के विभिन्न शब्दों का संग्रह एक ही स्थान पर मिल जाता है। जहाँ शब्दों का चुनाव करना होता है वहाँ निस्सन्देह इस प्रकार का कोष बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों के व्यावहारिक शब्द भी इस कोष में सगृहीत हैं जिससे इसकी उपयोगिता और बढ़ गयी है। जहाँतक हम जानते है, हिन्दी मे यह सर्वप्रथम ही प्रयास है और इसमें सन्देह नहीं कि इसके प्रणयन में इसके विद्वान् प्रणेता को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। पुस्तक महत्त्वपूर्ण और बड़े काम की है। विद्यार्थी, कवि, लेखक आदि इससे अमित लाभ उठा सकते हैं।

महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा एम्० ए० डी० लिट्,
भूतपूर्व वाइस् चॉन्सॅलर् इलाहाबाद युनिवर्सिटी की

सम्मति—

जीवन पर्यन्त "अमरकोश" तथा राजेंट् कृत "थिसरस् ऑव् इङ्लिश् वड्ड्स् ऑन्ड् फ्रॅज़ॅज़्" का व्यवहार करते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक बड़े ही उपकार की होगी। हिन्दी के उन लेखकों को जो शुद्ध शब्दों के प्रयोग मे विशेष ध्यान देते हैं यह पुस्तक सर्वदा अपने पास रखना चाहिये।

४-८-'३५। गङ्गानाथ झा।

विनोदसङ्कर व्यास।

पर्य्यायवाची कोश देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस तरह का कोई भी कोश अब तक हिन्दी में नहीं था। लेखकों और कवियों के लिए तो अत्यन्त उपयोगी है।

दौलतपुर (रायबरेली)

महावीर प्रसाद द्विवेदी

४-८-३५

श्रीमान् !

पर्य्यायवाची-कोश की कापी मिली। कृतज्ञ हुआ। धन्यवाद। इस कोश ने एक बहुत बड़े अभाव का दूरीकरण कर दिया। पुस्तक बड़े महत्त्व की है। परमात्मा करे इसका खूब प्रचार हो।

माधुरी।

अप्रैल १९२६

हिन्दी-पर्यायवाची कोश।

लेखक, पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल, विशारद।

जब से "शब्दार्थ-पारिजात" और 'हिन्दी-शब्द-सागर" जैसे कोश लिखे गये, तब से हिन्दी-भाषा-भाषियों की अनेक असुविधाएँ दूर तो अवश्य हो गईं; पर इनकी उपादेयता थी एकांगी ही। अक्षरानुक्रम की दृष्टि से तो अब तक अनेक प्रयास किये गये, पर किसी ने भी शब्दानुक्रम की ओर कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश इस क्षेत्र में सर्वप्रथम और सफल प्रयास है। मान्यवर महावीरप्रसादजी द्विवेदी, कविवर अयोध्यासिंहजी हरिऔध तथा प्रख्यात नाट्यकार श्रीजयशंकरप्रसादजी जैसे महानुभावों ने इस पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पुस्तक की उपादेयता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण यही है।

पुस्तक के लेखक श्रीकृष्णजी शुक्ल और प्रकाशक कैलासनाथजी भार्गव दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

बा० पुरुषोत्तमदास टंडन प्रयाग।

आपका भेजा "हिन्दी पर्य्यायवाची कोश" आपके पत्र के साथ मिला। अपने मित्र पं० श्रीकृष्ण शुक्ल के इस परिश्रम को देखकर मैं प्रसन्न हुआ। ऐसे कोष की हिन्दी मे बहुत आवश्यकता थी। वास्तव मे वर्गों के विभाग के अनुसार इससे भी बडे कोश की आवश्यकता है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल ने यह काम उठा लिया है इससे मुझे आशा है कि वह आगे परिश्रम कर अन्य बहुत शब्दों और वर्गों का समावेश कर सकेंगे। मेरी ओर से उनको बधाई।

महामहोपाध्याय हरनारायणशास्त्री
विद्यासागर, देहली।

मैंने पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का बनाया हुआ 'हिन्दीपर्य्यायवाची कोष' देखा। सस्कृत में इस प्रकार के कोष होते हुए भी हिन्दी में इस ढंग का कोष न होना मुझे बहुत दिन से खटकता था। मैं चाहता था कि कोई सुयोग्य विद्वान् इस विषय में परिश्रम करे। आनन्द की बात है कि शुक्लजी ने इस अभाव की पूर्त्ति कर दी। जहाँतक मै समझता हूँ हिन्दी में इस प्रकार के कोष का निर्माण पहिला ही प्रयास है इससे विद्यार्थियों को और कविता करने वाले विद्वानों को भी बहुत कुछ सहायता मिलेगी। इसके फुटनोट ग्रन्थकर्त्ता के गम्भीर ज्ञान के परिचायक हैं और पाठको के लिय विशेष उपयोगी होंगे ऐसी आशा है। इसके लिये ग्रन्थकर्त्ता और प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद और बधाई के पात्र है। इत्यलम्।

सरस्वती ।

मार्च १९३५

हिन्दी-पर्य्यायवाची कोष ।

हिन्दी में यह कोष अपने विषय का पहला है, साथ ही उत्कृष्ट भी है । इसके रचयिता पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद ने इसकी रचना में काफ़ी परिश्रम किया है और इसको उपयोगी बनाने मे उन्होंने अपनी ओर स कुछ उठा नहीं रक्खा । इसकी रचना संस्कृत कोषों के आधार पर की गई है और सभी शब्दों के उपलब्ध पर्याय संकलित करने का खासा प्रयास किया गया है । प्राचीन कविता-पुस्तकों के अध्ययन में तथा संस्कृत-बहुल नई रचना करने में इस कोष से पूरी सहायता मिल सकती है । यह कोष विषय के अनुसार ३७ वर्गों में विभाजित है तथा इसमें २,२५१ शब्दों के पर्याय दिये गये हैं । हिन्दी-कोष होने के कारण हिन्दी-पर्याय संकलित करने में भी परिश्रम किया गया है, यहाँ तक कि कहीं-कहीं प्रान्तीय शब्द भी आ गये हैं । इसी प्रकार कहीं-कहीं हिन्दी का पर्याय ग़लत भी दे दिया गया है, जैसे 'सभा-भवन' का पर्याय 'पञ्चायती जगह' लिखा गया है, जो पंचायत-स्थान होना चाहिए । कहीं-कहीं हिन्दी का पर्याय नहीं भी दिया गया है, जैसे कि 'बाजार' का 'पैंठ', हालाँ कि 'पैंठ' शब्द हिन्दी में प्रयुक्त शब्द है । परन्तु ऐसी दो-चार त्रुटियों से इस ग्रन्थ के महत्त्व या उपयोगी होने में कोई अन्तर नहीं पड़ता । सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) है ।

हिन्दी पर्य्यायवाची कोष

हिन्दी-पर्य्यायवाची कोश

की

वर्ग-सूची

—:o:—

पूर्ण संख्या—खण्ड ४, वर्ग ३७, मूलशब्द २२५१

वर्गानुक्रम शब्द-सूची



प्रथम खण्ड

४. दिशादि वर्ग

५. आकाशादि वर्ग

द्वितीय खण्ड

तृतीय खण्ड

४. भावादि वर्ग

चतुर्थ-खण्ड

४. कीट-पतङ्गादि वर्ग

[नोट—अकारादि क्रमकी सूची ग्रन्थके अन्तमें देखिये ।]



शुद्धि-पत्र

[सूचना—कृपया इस "शुद्धिपत्र" के अनुसार पहिले संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन कीजिये।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१	अदि तिनन्दन	अदिति नन्दन
१२	१९	विण्णु·प्रिया	विष्णु·प्रिया
१५	१०	आशु शिक्षणि	आशु शुक्षणि
"	११	ससर्चि	ससार्चि
"	१२ – १३	ऊष। बुध	उषर्बुध
१६	१	वर्हिशुष्मा	शुष्म
२०	५	माँझू	माँझ
२५	१२	जन्हाई	जुन्हाई
२९	३	साँझू	साँझ
४५	६	रत्नावती	रत्नवती
६३	२२	तापना	तापन
६५	४	कनीयस	कनीपस
७१	१८	कुटली	कुलटी
७४	१३	आढ़तकी	आढ़की
"	१५	मृदाह्वाया	मृदाह्वया
७६	१९	चौहर कोड़ा	चौहार कोड़ा
८८	६	अयोदिका	अपोदिका

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	१७	गुण योगफल	गुड़ योगफल
८९	१६	लघुघिर्भिटा	लघुचिर्भिटा
९०	३	मूलत्र	मूत्रल
९३	१७	लुलाय कन्द	लुलाय कन्द
९५	६	नरौषधि	नगरौषधि
”	१७	विश्वमित्र प्रिय	विश्वामित्र प्रिय
९६	२०	दन्त शट	दन्तशठ
९८	५	मुगूद्र	मुद्गर
१०१	१४	मदनाफ फल	मदनाभ फल
१०५	१०	कुसुमाधिय	कुसुमाधिप
”	१२	स्थिर गन्ध	स्थिर गन्ध
१०६	१	कण्ट	कण्ठ
”	५	मधुमोद	मद्यमोद
”	८	लुपुष्प	शुक्ल पुष्प
”	१०	अह पुष्पक	अट्टपुष्पक
१०८	५	जया कुसुम	जपाकुसुम
१२६	२१	गन्ध बीना	गन्धबीजा
१३२	२०	रसगर्म	रसगर्भ
१३७	१९	कलयस	कलयज
१४४	१०	मधुतृग	मधुतृण
१५७	१५	पातक	पोतक
१६०	२२	पुत्री	पुत्र
१६२	१०	स्वस	स्वम
१७१	३	सूखा	रूखा
१८०	५	अग्रजन्ना	अग्रजन्मा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	७	द्विजन्न	द्विजन्म
"	८	वामन	बाभन
१८७	२०	सूजान	सुजान
१९२	१३	तपुषी	तपुषी
१९४	११	आज्ञानान्धकार	अज्ञानान्धकार
१९७	१२	मिरान	सिराना
२०५	५	प्रधान लक्ष्य	प्रधान लक्ष्य
२२५	१२	संख्याना	संख्यान
२३७	१	जावन	जीवन
२३९	१३	(धातु गलानेका घटिका)	(धातु गलाने की)
२४२,२४३	पृष्ठाङ्क	१४२, १४३	२४२, २४३
२५६	१९	छामन्ध	कामान्ध
२७७	१०	रक्षा लरना	रक्षा करना
२७९	२१	करना	अलग करना
२८४	१०	"चकमना"	"चमकना"

प्रथम खण्ड

१. स्वर्गादिवर्ग

स्वर्ग—स्वः। अव्यय। त्रिदिव। त्रिविष्टप। त्रिदशालय। द्यौ। सुरलोक। नाक। दिव। मन्दर। अवरोह। गौ। फलोदय। देवलोक। स्वर्लोक। ऊर्ध्वलोक। सुखाधार। सौरिक। शक्रभुवन। दिवान।

ईश्वर—ईश। परमेश्वर। परमात्मा। ब्रह्म। परब्रह्म। सच्चिदानन्द। ॐ। शिव। शर्व। अलख। अगोचर। अज। अनादि। अनन्त। गुणातीत। निर्गुण। व्यापक। महेश्वर। सर्वेश्वर। शंकर। प्रभु। महाप्रभु। स्वामी। परमपिता। पति। साहब। साईं।

देवता*—अमर। निर्जर। देव। विबुध। सुर। सुपर्वा। सुमना। त्रिदिवेश। लेख। दिवौकस। आदितेय।

---

* देवजातिके अन्तर्गत—

(१) देवयोनि—विद्याधर। अप्सरा। यक्ष। रक्ष। गन्धर्व। किन्नर। पिशाच। गुह्यक। सिद्ध। भूत।

(२) गण देवता—द्वादश आदित्य—१. विवस्वान। २. अर्यमा। ३ पूषा। ४ त्वष्टा। ५ सविता। ६ भग। ७ धाता। ८ विधाता। ९ वरुण। १० मित्र। ११ शक्र। १२ उरुक्रम।

अदितिनन्दन । आदित्य । ऋभव । अस्वप्न । अमर्त्य । दानवारि । अमृतान्धा । वर्हिर्मुख । क्रतुभुक् । गीर्वाण । वृन्दारक । अग्निमुख । अमृतेश । भट्टारक । अग्निजिह्व ।

[नोट—कश्यप की स्त्री दिति से दैत्यों की और अदिति से देवताओं की उत्पत्ति हुई ।]

देवसभा—सुधर्मा । शुभा । देवसमाज । सुधर्मी ।

असुर—दनुज । दैत्य । दानव । दैतेय । इन्द्रारि । शुक्रशिष्य । दितिसुत । सुरद्विष । पूर्वदेव । राक्षस । निश्चर । तमीचर । निशाचर । मनुजाद ।

किन्नर—तुरङ्गमुख । मयु । किंपुरुष । गीतमोदी । हरिण नर्तक ।

[नोट—देवताओं की एक जाति जिनका मुख घोड़े की तरह होता है ।]

गन्धर्व*—देवजन । सुरगायक । विद्याधर । गातु । दिव्य गायन ।

---

(३) अष्टवसु—१ धर । २ ध्रुव । ३ सोम । ४ विष्णु [सावित्र] । ५ अनिल । ६ अनल । ७ प्रत्यूप । ८ प्रभास ।

(४) दश विश्वेदेव—१ क्रतु । २ दक्ष । ३ वसु । ४ सत्य । ५ काम । ६ काल । ७ ध्वनि । ८ रोचक । ९ आद्रव । १० पुरूरवा । [वह्निपुराण-गणभेद नामाध्याय ।]

(५) गणदेवता—आभास्वर, अनल, साध्य, तुषित, महाराजिक आदि गणदेवताओं के भी अनेक भेद हैं । ग्रन्थों में प्रायः इनके प्रयोग न होने के कारण नाम नहीं दिये गये ।

* अग्निपुराण में गन्धर्वों के ११ गण माने गये हैं—अभ्राज्य ।

अप्सरा*—स्ववेंश्या। स्वर्गवेश्या। अरुणप्रिया। परी। हूर।

इन्द्र†—मघवा। बिडौजा। पाकशासन। शक्र। पुरन्दर। वज्री। वासव। वृषा। वृत्रहा। आखंडल। सहस्राक्ष। हरि। पुरुहूत। मेघवाहन। बलाराति। सुरपति। शचीपति। पाक-रिपु। शुनासीर। जिष्णु। गोत्रभिद्। ऋभुक्षा। दिशिराज। देवराज। शतक्रतु। संक्रन्दन। वृद्धश्रवा। लेखर्षभ। दिवस्पति। वास्तोष्पति। शतमन्यु। सुत्रामा। जम्भभेदी। मरुत्वान्। तुषाराट्। दुश्च्यवन। महेन्द्र। कौशिक। पूतक्रतु।

इन्द्राणी—शची। पुलोमजा। इन्द्रवधू। पूतक्रतायी। माहेन्द्री। जयवाहिनी। ऐन्द्री। शतावरी। पौलोमी।

इन्द्रपुरी—अमरावती। देवपुरी। इन्द्रलोक। देवलोक।

इन्द्र का पुत्र—पाकशासनि। जयन्त। ऐन्द्रि। उपेन्द्र।

इन्द्र का हाथी—अभ्रमातङ्ग। गजेन्द्र। ऐरावत।

अंधारि, वंभारि। शूर्यवर्चा। कृधु। हस्त। सुहस्त। स्वन्। मूर्धन्वा। विश्वावसु। कृशानु। इनमें ये प्रधान गन्धर्व माने गये हैं:—हाहा। हूहू। हंस। चित्ररथ। विश्वावसु। गोमायु। तुंबुरु। नंदि। (—"जटाधर")

* उर्वशी। रंभा। मेनका आदि स्वर्ग की वेश्याएँ हैं।

† चतुर्दश इन्द्र—इन्द्र। विश्वभुक्। विपश्चित। विभु। प्रभु। शिखि। मनोजव। तजस्वी। बलिर्भाव्य। त्रिदिव। सुशान्ति। सुकीर्ति। कृतधाता। दिवस्पति।—देवीपुराण-कालव्यवस्थाध्याय।

इन्द्र के घोड़े को "उच्चैःश्रवा", सारथी को "मातलि", महल को 'वैजयन्त", और वन को "नन्दनवन" कहते हैं।

ऐरावण। अभ्रमुवल्लभ। श्वेतहस्ती। चतुर्दन्त। मल्लनाग। सदादान। सुदामा। गजाग्रणी।

इन्द्र का वज्र—कुलिश। वज्र। पवि। अशनि। भिदुर। गो। ह्रादिनी। शतकोटि। स्वरू। भेदी।

इन्द्र का विमान—व्योमयान। विमान।

वरुण*—यादसाम्पति। प्रचेता। पाशी। अप्पति। जलेश। पाथपति। पाशधर। अपांपति। जम्बुक। मेघनाथ। जलेश्वर। परञ्जय। जीवनावास। नन्दपाल। दैत्यदेव। सुखाश। वारिलोम। राम। कुण्डली।

कुबेर†—किन्नरेश। यक्षराज। धनद। धनाधिप। गुह्यकेश्वर। राजराज। धनेश। त्र्यम्बकसखा। पौलस्त्य। वैश्रवण। मनुष्यधर्मा। पुण्यजनेश। ऐलबिल। सख। यक्ष। नरवाहन। एकपिङ्ग। श्रीद। हर्य्यक्ष। अलकाधिप।

कुबेर का पर्वत—कैलाश पर्वत। कुबेराद्रि। कुबेराचल।

---

* वरुण पश्चिम दिशा के स्वामी हैं। अदिति के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं। जल के प्रधान अधिष्ठातृ देव हैं।

† कुबेर को इन्द्र का भण्डारी और महादेव जी का मित्र मानते हैं। यह विश्रवस् ऋषि के पुत्र और रावण के सौतेले भाई हैं। यह उत्तर दिशा के स्वामी हैं। इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत हैं। यह सम्पूर्ण धन के स्वामी हैं। इनके पुत्र का नाम नलकूबर है। कुबेर की पुरी को "अलकापुरी", उद्यान को चैत्ररथ" और विमान को 'पुष्पक' कहते हैं।

कुबेर का ऐश्वर्य*—विभूति । भूति । ऐश्वर्य ।

कुबेर का खजाना—निधि । शेवधी । कोष । भण्डार । भाण्डार ।

यम†—वैवस्वत । मृत्युपति । सूर्यपुत्र । महिषध्वज । काल । नरदण्डधर । जीवनपति । अन्तक । कृतान्त । धर्मराज । कोपन्त । शमन । पितृपति । यमुनाभ्राता । समवर्ति । श्राद्धदेव । परेतराट् । धर्म । जीवितेश । यमराज । औडम्बर । दण्डाधर । कीनाश । दध्न । महिषवाहन । शीर्णपाद । भीमशासन । कङ्क । हरि । कर्मकर ।

राक्षस—कौणप । निशिचर । निशाचर । पुण्यजन । यातुधान । क्रव्याद । मनुजाद । अस्रप । आशर । निकषात्मज । रजनीचर । अदेव । कर्बूर । नैऋत । यातु । रक्ष । क्षपाट । सन्ध्याबल । कीलाप । नृचश । पलाश । पलाशी । भूत । नीलाम्बर । कल्माष । कटप्रू । अगिर । कीलालय । नरधिष्मण । असुर ।

[नोट—'असुर' शब्द के पर्य्याय 'राक्षस' के भी पर्य्याय हो सकते हैं]

---

* कुबेर के ऐश्वर्य के अन्तर्गत अष्टसिद्धियाँ और नवनिधियाँ हैं—

अष्टसिद्धि—१. अणिमा, २. महिमा, ३. लघिमा, ४. गरिमा, ५. प्राप्ति, ६. प्राकाम्य, ७. ईशत्व और ८. वशित्व ।

नवनिधि—१. पद्म, २. महापद्म, ३. कच्छप, ४. नील, ५. मकर, ६. मुकुन्द, ७. शंख, ८. खर्व और ९. नन्द ।

† चतुर्दश यमों के नाम—१. यम, २. धर्मराज, ३. मृत्यु, ४. अन्तक, ५. वैवस्वत, ६. नील, ७. दध्न, ८. काल, ९. सर्वभूतक्षय, ११. परमेष्ठि, ११. वृकोदर, १२. औदुम्बर १३. चित्र, १४. चित्रगुप्त ।

दानव*—द्विमूर्द्धा । तापन । शम्बर । अरिष्ट । हयग्रीव । विभावसु । अयोमुख । शङ्कुशिरा । स्वर्भानु । कपिल । अरुण । पुलोमा । वृषपर्व्वा । एकचक्र । विरूपाक्ष । धूम्रकेश । विप्रचित्ति । दुर्जय ।

राक्षसी—कौणपी । निशिचरी । सिंहिका । दानवी ।

नरक†—यमालय । यमलोक । यमपुर । निरय । नारक । दुर्गति । संघात । कालसूत्र । रौरव ।

नरक-भोगी—नारकी । पापी । पतित ।

नरक-जीव—प्रेत । अग्निमुख ।

नरक-पीड़ा—यातना । तीव्रवेदना । पीड़ा । बाधा । व्यथा । दुःख । कृच्छ्र । आमनस्य । प्रसूतिज । तैलहृत । कारणा ।

---

* [१] कश्यप ऋषि के वीर्य से दक्षकन्या दनु के गर्भ से उत्पन्न ६१ दानवों में से प्रधान १८ दानवों के नाम ये ही हैं । ये नाम 'दानव' शब्द के पर्य्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं, इसी कारण पर्य्याय में भी लिखे गये हैं । वास्तव में ये पर्य्याय नहीं, बल्कि 'दनु' के पुत्रों के नाम हैं ।

[२] 'असुर' 'राक्षस', और 'दानव'—इन सबके नाम पृथक् होते हुये भी परस्पर एक दूसरे के पर्य्याय माने जाते हैं ।

† नरक के भेदः—[१]पापवास, [२]तामिस्र, [३]अन्धतामिस्र, [४]महारौरव, [५]कुम्भीपाक, [६]असिपत्रवन, [७]शूकरमुख, [८]अन्धकूप, [९]कृमिभोजन, [१०]सन्दंश, [११]तप्तभूमि, [१२]वज्रकण्टक, [१३]शाल्मली, [१४]पूयोद, [१५]प्राणरोध, [१६]लालाभक्ष, [१७]सारमेयादन, [१८]अवीचिरयपान, [१९]क्षारकर्दम, [२०]रक्षोगण, [२१]शूलप्रोत, [२२]दन्तशूक, [२३]अवनिरोधन, [२४]पर्यावर्तन, [२५]सूचीमुख ।

ब्रह्मा*—आत्मभू। स्वभू। सुरज्येष्ठ। स्वयंभू। चतुरानन। परमेष्ठी। पितामह। हिरण्यगर्भ। लोकेश। विधि। विधाता। धाता। स्रष्टा। अब्जयोनि। नाभिजन्म। कमलासन। अण्डज। पूर्वनिधन। कमलोद्भव। प्रजापति। प्रजाधिप। सृष्टिकर्ता। रजोमूर्ति। सदानन्द। सत्यक। वेधा। द्रुहिण। विरंचि। हंसवाहन। अज। विश्वसृज। कर्तार।

ब्रह्मा का वाहन—हंस। मराल। मुक्ताभुक्। श्वेत गरुत्। चक्राङ्ग। मानसौकस। कलकण्ठ। सितच्छद। सितपक्ष। सरकाक। पुरुदंशक। मानसालय।

विष्णु†—नारायण। कृष्ण। वैकुण्ठ। माधव। धरणीधर। जनार्दन। हरि। मुरमर्दन। मुकुन्द। विश्वरूप। जलशायी। श्रीवत्सलाञ्छन। विधु। कैटभजित। विश्वंभर। अधोक्षज। कंसाराति। बलिध्वंसी। वनमाली। पुरुषोत्तम। देवकीनन्दन। शौरी। श्रीपति। त्रिविक्रम। वासुदेव। मधुसूदन। मधुरिपु। चतुर्भुज। पद्मनाभ। चक्रपाणि। उपेन्द्र। गोविन्द। गरुडध्वज। पीताम्बर। अच्युत। शार्ङ्गी। हृषीकेश। केशव।

---

* ब्रह्मा = सृष्टिकर्त्ता, रक्तवर्ण, चतुर्मुख, कमलासन, हंसवाहन, विष्णु के नाभि से उत्पन्न और रजोगुण की मूर्ति हैं। कहते हैं कि वेद सबसे पहले ब्रह्माजी के ही मुखश्री से उच्चरित हुए।

† त्रिदेव मेंसे एक, सतोगुण के अधिष्ठातृदेव। विष्णु के उपासक को वैष्णव कहते हैं। विष्णु के शख को 'पाञ्चजन्य', चक्र को 'सुदर्शन', गदा को 'कौमोदकी', खड्ग को 'नन्दक', धनुष को 'शार्ङ्ग', छाती के चिन्ह को 'श्रीवत्स', मणि को 'कौस्तुभ', सारथी को 'दारुक' तथा मंत्री को उद्धव कहते हैं।

पुराणपुरुष । यज्ञपुरुष । नरकान्तक । दैत्यारि । दामोदर । सनातन । पुरुष पुरातन । मनुजाद निकन्दन । अनन्त । भगवान । श्रीश । इन्द्रवरज । शेषशायी ।

नोट—(१) ये सब नाम श्रीकृष्ण जी के लिये भी प्रयुक्त हो सकते है ।

(२) 'लक्ष्मी' शब्द के किसी पर्य्याय के साथ 'पति' शब्द वा उसका पर्य्याय जोड़ देने से विष्णु शब्द का बोधक होता है ।

विष्णु का घोड़ा—शैव्य । सुग्रीव । मेघपुष्प । बलाहक ।

विष्णु का वाहन—गरुड़ । गरुत्मान् । नागान्तक । तार्क्ष्य । सुपर्ण । वैनतेय । विष्णुरथ । पन्नगाशन । खगेश्वर । खगपति । पक्षिराज । खगकेतु । खगेश । उरगारि । उरगाद । हरियान । शाल्मलिस्थ । अमृताहरण । तरस्वी । (तरस्वी) । पक्षिसिंह । शाल्मली । महावीर ।

[नोट—ये विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं]

महादेव*—शंभु । शंभू । ईश । पशुपति । शिव ।

---

* महादेव—(१) गौरी या पार्वती शब्द के किसी पर्य्यायवाची शब्द के साथ पति-वाचक शब्द जोड़ देने से 'महादेव' का बोधक हो जायगा ।

(२) ईश्वर शब्द के जितने पर्य्याय हैं, वे सब 'महादेव' के बोधक हैं ।

(३) महादेव त्रिदेव में से एक देव हैं । यह तमोगुण के अधिष्ठातृ देवता हैं । यह दिगम्बर वेषी (नग्न) हैं । इनका आसन व्याघ्रचर्म तथा ओढ़ना गजचर्म है । त्रिशूल इनका अस्त्र है । इनके ललाट पर कालरूप एक तीसरा नेत्र है जो किसीको नाश करनेके समय खुलता है ।

(४) शिव की अष्टमूर्त्ति मानी गई है—१. क्षितिमूर्त्ति=सर्व । २. जल-

शूली। महेश्वर। ईश्वर। शर्व। ईशान। शंकर। चन्द्रशेखर। भव। भूतेश। खण्डपरशु। गिरीश। हर। मृड। कृत्तिवास। पिनाकी। प्रमथाधिप। उग्र। कपर्दी। श्रीकण्ठ। शितिकण्ठ। कपालभृत्। वामदेव। विरूपाक्ष। त्रिलोचन। पञ्चानन। कृशानुरेत। सर्वज्ञ। धूर्जटि। प्रभु। स्थाणु। उमापति। त्र्यम्बक। भर्ग। त्रिपुरारि। रुद्र। गंगाधर। अन्धकरिपु। नन्दीश्वर। भूतनाथ। नीलकण्ठ। अग्निकेतु। क्रतुध्वंसी। भगवान। स्मरहर। मदनारि। नटराज। अहिर्बुध्न्य। अष्टमूर्ति। महानट। चन्द्रमौलि। गौरीपति। गिरिजापति। कापालिक। कैलाशनाथ। भोलानाथ। रेरिहाण। भगाली। पांशुचन्दन। दिगम्बर। अट्टहास। कालञ्जर। पुरद्विट्। वृषाकपि। महाकाल। बराक। नन्दिवर्द्धन। हीर। वीर। खरु। भूरि। कटप्रू। भैरव। ध्रुव। गुड़ाकेश। देवाधिदेव। कङ्कालमाली। सिद्धदेव।

मूर्त्ति=भव। ३. अग्निमूर्त्ति=रुद्र। ४. वायुमूर्त्ति=उग्र। ५. आकाशमूर्त्ति=भीम। ६. यजमान मूर्त्ति=पशुपति। ७. चन्द्रमूर्त्ति=महादेव। ८. सूर्य-मूर्त्ति=ईशान।

(५) एकादश रुद्र=१. अज। २. एकपात ३. अहिर्बुध्न्य। ४. अपराजित। ५. पिनाकी। ६. त्र्यम्बक। ७. महेश्वर। ८ वृषाकपि। ९. शम्भु। १०. हरण। ११. ईश्वर।

(६) शिव के नन्दीगण=भृङ्गी, भृङ्गी, रिटि, तुण्डी, नन्दिक, नन्दिकेश्वर।

(७) शिव की पुरी को 'कैलाश', जटाजूट को 'कपर्द', धनुष को 'पिनाक' वा 'अजगव', और परिषद को 'प्रमथ' कहते हैं। शिव के उपासकों को शैव कहते हैं।

विश्वेश्वर। विश्वनाथ। चन्द्रापीड़। काशीनाथ। अस्थिमाली। श्मशानेश्वर। हिण्डी। विषमाक्ष। खेचर। रसनायक। अर्द्ध-नारीश। यमान्तक। ऊर्ध्वरेता। अर्घीश। कुलेश्वर। शिपिविष्ट। वृषाङ्क।

सरस्वती*—ब्राह्मी। भारती। भाषा। वाचा। गो। गिरा। सुष्टु। वाणी। शारदा। इला। वीणापाणि। वागीश। महाश्वेता। विधात्री। ब्रह्माणी। श्री। वाक्। इरा। ईश्वरी। वर्णमातृका। सन्ध्येश्वरी। वाक्येश्वरी।

लक्ष्मी†—कमला। पद्मा। पद्मालया। पद्मासना। रमा। हरिप्रिया। श्री। इन्दिरा। लोकमाता। मा। क्षीरोद तनया। समुद्रजा। भार्गवी। क्षीरसागरकन्यका। विष्णुवल्लभा। जगन्माता। सम्पत्ति। सम्पदा। विभूति। भूति। लच्छि। माया। शोभा।

पार्वती‡—उमा। कात्यायनी। गौरी। काली। हैमवती। ईश्वरी। शिवा। भवानी। रुद्राणी। शर्वाणी। सर्वमंगला। अपर्णा। दुर्गा। मृडानी। चण्डिका। अम्बिका। आर्या।

---

* सरस्वती=ब्रह्मा की स्त्री (शक्ति), विद्या बुद्धि को देनेवाली हैं। संगीत एवं वादन कला की अधिष्ठातृ देवी हैं। इनका वाहन हंस है।

† लक्ष्मी=विष्णु-प्रिया। धन-वैभव-स्वरूप को देनेवाली हैं। सम्पूर्ण दरिद्रता को दूर कर सुख-शान्ति-धन-धान्य-प्रदायिनी हैं। इनका वाहन उल्लू (उलूक) है।

‡ पार्वती=हिमाचल की कन्या, शिव की अर्द्धाङ्गिनी हैं। सौभाग्य दायिनी हैं। इनका वाहन सिंह है।

दाक्षायणी । गिरिजा । मेनकात्मजा । हिमाचलसुता । हिमगिरिसुता । शंकरप्रिया । दक्षसुता । सती । शैलसुता । शैलनन्दिनी । पतिव्रता । इला । शिवार्द्धाङ्गिनी । अम्बा । माया । विश्वकारिणी । सिंहवाहिनी । मैनासुता । भवा ।

दुर्गा*—दुर्गविनाशिनी । अनन्तशक्तिका । चण्डिका ।

---

* देवी के अन्तर्गतः—

(१) पञ्चदेवी—दुर्गा । लक्ष्मी । राधा । वाणी । शाकम्भरी ।

(२) सप्तमाता—१ ब्राह्मी । २ माहेश्वरी । ३ कौमारी । ४ वैष्णवी । ५ वाराही । ६ इन्द्राणी । ७ चामुण्डा ।

(३) नवदुर्गा—१ शैलपुत्री । २ ब्रह्मचारिणी । ३ चन्द्रघण्टा । ४ कूष्माण्डा । ५ स्कन्दमाता । ६ कात्यायनी । ७ कालरात्रि । ८ महागौरी । ९ सिद्धिदात्री ।

(४) नव कन्यका—१ कुमारी । २ त्रिमूर्त्ति । ३ कल्याणी । ४ रोहिणी । ५ कालिका । ६ शांभवी । ७ दुर्गा । ८ चण्डिका । ९ सुभद्रा ।

(५) नवशक्ति—१ वैष्णवी । २ ब्रह्माणी । ३ रौद्री । ४ माहेश्वरी । ५ नारसिंही । ६ वाराही । ७ इन्द्राणी । ८ कार्तिकी । ९ सर्वमङ्गला ।

(६) दश महाविद्या—१ काली । २ तारा । ३ षोडशी । ४ भुवनेश्वरी । ५ भैरवी । ६ छिन्नमस्ता । ७ धूमावती । ८ बगला । ९ मातङ्गी । १० कमला ।

(७) ६४ योगिनी—नारायणी । गौरी । शाकम्भरी । भीमा । रक्तदंतिका । पार्वती । दुर्गा । कात्यायनी । महादेवी । चन्द्रघण्टा । महाविद्या । महातपा । भ्रामरी । सावित्री । ब्रह्मवादिनी । भद्रकाली । विशालाक्षी । रुद्राणी । कृष्णपिङ्गला । अग्निज्वाला । रौद्रमुखी । कालरात्रि । तपस्विनी । मेघस्वना । सहस्राक्षी । विष्णुमाया । जलोदरी । महोदरी । मुक्तकेशी । घोररूपा । महाबला । श्रुति । स्मृति । धृति । तुष्टि । पुष्टि । मेधा । विद्या । लक्ष्मी । सरस्वती । अपर्णा ।

चण्डमुण्डविनाशिनी । कालिका । शाम्भवी । रक्तबीजविनाशिनी (प्रभञ्जनी) । कुमारी । कल्याणी । कामाक्षी । त्रिमूर्ति । रोहिणी । सुभद्रा । महागौरी । चामुण्डा । वाराही । सिंहवाहिनी । वागीश्वरी । नारसिंही । भगवती । विन्ध्यवासिनी । पार्वती । उमा । माया । विश्वकारिणी । शक्ति । महाशक्ति । धूम्रमर्दिनी । सौभाग्यदायिनी । विधातृ । धात्री । कूष्माण्डा । स्कन्दमाता । अजा । ब्राह्मी ।

[टिप्पणी में दिये हुये जितने नाम हैं वे सब दुर्गा के पर्य्याय हो सकते हैं]

गणेश—लम्बोदर । हेरम्ब । द्वैमातुर । एकदन्त । मूषकवाहन । गजवदन । गणपति । शिवसुत । विनायक । गजास्य । विघ्नराज । गजानन । वक्रतुण्ड । महाकाय । धूम्रकेतु । गणाध्यक्ष । भालचन्द्र । विघ्न नाशक । विकट । मोदकप्रिय । मोददाता । विद्यावारिधि । बुद्धिविधाता । जगवन्द्य । आदिपूज्य । भवानीनन्दन । परशुपाणि । आखुग । शूर्पकर्ण ।

कार्तिकेय*—महासेन । शरजन्मा । षडानन । पार्वतीनन्दन । स्कन्द । सेनानी । गुह । अग्निभू । बाहुलेय । क्रौञ्च-

---

अम्बिका । योगिनी । डाकिनी । शाकिनी । हारिणी । हाकिनी । लाकिनी । त्रिदशेश्वरी । महाषष्ठी । सर्वमङ्गला । लज्जा । कौशिकी । ब्रह्माणी । ऐन्द्री । नारसिंही । वाराही । चामुण्डा । शिवदूती । विष्णुमाया । मातृका । कार्तिकी । विनायकी । कामाक्षी ।

* महादेव जी के पुत्र हैं । कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण कार्तिकेय नाम पड़ा । इनके छः मुँह हैं । यह देवताओं के सेनानायक हैं ।

दारण। शक्तिधर। शिखिवाहन। कुमार। श्रीविशाख। तारकाजित। षाण्मातुर। अग्निकुमार। स्वामि कार्तिक।

भैरव—भूतनाथ। श्वानवाहन। रुद्रमूर्ति। भयङ्कर। भीम। कराल। कालमूर्त्ति। विकराल। भयानक।

[नोट—अष्ट भैरवों के नाम—१. महाभैरव, २. संहार भैरव, ३. असिताङ्ग भैरव, ४. रुरु भैरव, ५. काल भैरव, ६. क्रोध भैरव, ७. ताम्रचूड़ भैरव, ८. चन्द्रचूड़ भैरव।]

अग्नि*—वह्नि। वीतिहोत्र। धनञ्जय। कृपीटयोनि। ज्वलन। जातवेद। तनूनपात्। पावक। अनल। रोहिताश्व। वायुसख। आशुशिक्षणि। हिरण्यरेत। हुतभुक्। दहन। हव्यवाहन। सप्तर्चि। दमुन। शुक्र। चित्रभानु। विभावसु। शुचि। वैश्वानर। (अप० वैसन्दर) अपित्त। हुताशन। दव। ऊष। बुध। धूम्रकेतु। आग। तपन। निर्जर जीभ। दग्धद्रुम। वृक।

शिव जी के वीर्य्य को अग्निदेव ने कबूतर का रूप धर कर पान कर लिया था, इन्हीं से स्कन्द की उत्पत्ति हुई। इनका वाहन मोर है।

* वैद्यक मत से अग्नि ३ प्रकार की मानी गई है, यथा—१. भौमाग्नि, जो पदार्थों के जलने से उत्पन्न होती है। २. दिव्याग्नि, जो आकाश में बिजली से उत्पन्न होती है। ३. जठराग्नि, जो पित्त रूप से हृदय और नाभि के बीच में रहती है। कर्मकाण्ड में अग्नि छ: प्रकार की मानी गई है, यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि। इनमें आरम्भ की तीन प्रधान हैं। ऋग्वेद का प्रादुर्भाव अग्नि से ही माना जाता है। अग्नि की सात जिह्वाएँ मानी गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता।

कुन्त । कुतप । शिखि । सप्तजिह्वा । पांचजन्य । वर्हिशुष्मा । बर्हि ।

बड़वानल—(जल में लगने वाली आग), और्वि । बाड़व । बड़वाग्नि ।

वन की अग्नि—दव । दावा । दावानल । दावाग्नि । दवारी । वनहुताशन ।

पेट की अग्नि*—जठराग्नि । पाचकाग्नि ।

अग्निकण—स्फुलिंग । अनल-कण । चिनगी । चिनगारी ।

अग्नि ज्वाला—ज्वाला । कील । शिखा । अग्निशिखा । वर्चिस । हेति । उल्का । भूति । भस्मनी । क्षार । लूक । लुकारी । अग्नि कुक्कुट । लपट । लवर । लौ ।

अग्नि सन्ताप—संज्वर । सन्ताप । दाह । भस्मीभूत । डाढ़ा । झुलस । जलन ।

वायु†—१. श्वसन । २. स्पर्शन । ३. मातरिश्वा । ४. सदागति । ५. पृषदश्व । ६. गन्धवह । ८. अनिल । ९. आशुग ।

---

* जठराग्नि—हृदय और नाभि के बीच में उत्पन्न होने वाली अग्नि जो भोजन को पचाती और क्षुधा उत्पन्न करती है । कार्तिक शु० ८ से अग्रहण कृष्ण ८ के भीतर नवीन जठराग्नि की उत्पत्ति होती है ।

† शरीरस्थ वायु—पाँच प्रकार की होती है—

(१) प्राणवायु—मुख्य स्थान शिर है । छाती और कण्ठ तक विचरण करती है । बुद्धि, हृदय और चित्त को धारण करती है ।

(२) उदानवायु—मुख्य स्थान छाती है । नासिका, नाभि और गला विचरने के स्थान हैं । भोजन प्रवेश करना, छींक, डकार और जँभाई लाना इसके मुख्य कर्म हैं ।

१० समीर। ११. मारुत। १२. मरुत्। १३. जगत्प्राण।
१४. समीरण। १५. नभस्वान्। १६. वात। १७. पवन।
१८. पवमान। १९. प्रभंजन। २०. अजगत्प्राण। २१. खश्वास।
२२. वाह। २३. धूलिध्वज। २४. फलिप्रिय। २५. वाति।
२६. नभप्राण। २७. भोगिकान्त। २८. स्वकम्पन। २९. अक्षति।
३०. कम्पलक्ष्मा। ३१ शसीनि। ३२. आवक। ३३. हरि।
३४. वास। ३५. सुखाश। ३६. मृगवाहन। ३७. सार।
३८. चञ्चल। ३९. विहग। ४० प्रकम्पन। ४१. नभस्वर।
४२. निश्वासक। ४३. स्तनून। ४४. पृषतां पति। ४५. प्राण।
४६. अपान। ४७. समान। ४८. व्यान। ४९. उदान।

सूक। सरिमन। सरण्य। हवा। सर्वंग। सरट। खग। बयार।

[नोट—ये ही "उनचास पवन" के नाम से भी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि ये अदिति के पुत्र हैं। इनके कोई सन्तान नहीं हुई। इन्द्र ने इन्हे देव-पद दिया है। सवृष्टिक वायु को झञ्झा कहते हैं।]

(३) व्यानवायु—मुख्य स्थान हृदय है। यह सब शरीर में व्याप्त रहता है। अपक्षेपण, उत्क्षेपण, निमेष, उन्मेष आदि इसके कर्म हैं।

(४) समानवायु—मुख्य स्थान नाभि है, विचरणस्थान कोष्ठ है। अन्न ग्रहण करना, पकाना, विवेचन करना और त्यागना इसके मुख्य कर्म हैं।

(५) अपानवायु—मुख्य स्थान गुदा है, विचरणस्थान कटि, बस्ति, लिङ्ग और जाँघ है। मल, मूत्र, वीर्य, आर्तव और गर्भ आदि निकालना इसके मुख्य कर्म हैं।

आँधी—आँधी। महावात। प्रकम्पन। अंधड़। तूफ़ान। बवण्डर (चक्राकार वायु)।

वायुवेग—तरस्। रहस्। रय। स्पद। जव।

कामदेव *—मदन। मन्मथ। मार। प्रद्युम्न। कन्दर्प। मीनकेतन। दर्पक। अनङ्ग। काम। पञ्चशर। शम्बरारि। मनसिज। कुसुमेषु। अनन्यज। पुष्पधन्वा। रतिपति। मकरध्वज। आत्मभू। मैन। अतनु। कुसुमसर। मन्थि। नवरंगी। मनोभव। मनजात। मकरकेतु। स्मर। हरि। विरहविदार। पुष्पचाप। कुसुमायुध। ब्रह्मसू। विश्वकेतु। कामद। कान्त। कान्तिमान्। कामग। कामचार। कामी। कामुक। कामवर्द्धन। राम। रम। रमण। रतिप्रिय। रममाण। नन्दक। नन्दन। नन्दी। रतिसखा। भ्रामक। भृङ्ग। मोहन। मोहक। मोह। मोहवर्द्धन। मातङ्ग। खेलक। विलास।

अश्विनीकुमार†—स्ववैद्य। अश्विनीसुत। आश्विनेय।

---

* (१) कामदेव के पंचवाण—१. सम्मोहन, २. उन्मादन, ३. शोषण, ४. तापन, ५. स्तम्भन। कामदेव का धनुष पाँच प्रकार के पुष्पों से बना है—अरविन्द, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलकमल। इसे पुष्पधनु भी कहते हैं।

(२) कामदेव की स्त्री का नाम 'रति' है।

† प्रभा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्रों को अश्विनीकुमार कहते हैं। एक बार सूर्य के तेज को सहन करने में असमर्थ होकर प्रभा घोड़ी बन कर भाग गई और तप करने लगी। तब सूर्य भी घोड़ा बन कर उसके पास गये। इसी संयोग से अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई।

अश्विनि । नासत्य । दस्र । नासिक्य । गदागद । पुष्करस्रज ।

जप—भजन । स्मरण । नाम स्मरण । जपन । मन्त्रोच्चारण । मन्त्रस्मरण । मन्त्रोद्धरण ।

तप—व्रत । अनुष्ठान । तपस्या । योग । योगाभ्यास । योगसाधन । ध्यानोपासना ।

पूजा—अर्चा । नमन । अर्हण । अपचिति । आराधन । पूजन । आराधना । आदर । सम्मान ।

यज्ञ *—याग । मख । क्रतु । अध्वर । सव । सप्ततंतु । इष्टि । वितान । मन्यु । आहव । हव । हवन । सवन । अभिषय । होम । मह ।

दान—त्याग । विहापित । उत्सर्जन । विसर्जन । अंहति । विश्राणन । वितरण । स्पर्शन । प्रतिपादन । प्रादेशन । निर्वपन । अपवर्जन । दाय । प्रदान । अतिसर्जन । विसर्ग । स्पर्श । क्षणन । प्रदेशन ।

उपासना—शुश्रूषा । सेवा । परिचर्य्या । वरिवस्या ।

व्रत—(देखो 'तप' शब्द)

सन्यास—वैराग । वैराग्य । त्याग । चतुर्थाश्रम । निर्वाण । परिव्रजन ।

---

* पञ्च महायज्ञ—१. स्वाध्याय । २. अग्निहोत्र । ३. आतिथ्य । ४. पितृतर्पण और ५. वलिवैश्व ।

यज्ञ के चार ऋत्विज् होते हैं—होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ।

सन्यासी--त्यागी। वैरागी। दण्डी। निर्वाणपथी। चतुर्थाश्रमी। यती। परिव्राज। भिक्षु। कर्मन्दी। पाराशरी। मस्करी। भिक्षुक। न्यासी। स्वामी। गोस्वामी। जितेन्द्रिय। योगी।

तपस्वी-तापस। तपी। पारिकांक्षी।

ब्रह्मत्वभाव-ब्रह्मभूय। ब्रह्मत्व। ब्रह्मसायुज्य।

विवेक--पृथगात्मता। ज्ञान। सद्विचार। सद्बुद्धि। प्रबोध।

दर्शन--निर्वर्णन। निध्यान। आलोकन। ईक्षण। निभालन। देखाव।

दर्शनयोग्य--दर्शनीय। द्रष्टव्य।

धर्म *—पुण्य। श्रेय। सुकृत। वृष। आचार। स्वभाव।

मुनि—तपी। साधक। तापस। पारिकांक्षिन्। मुनि। ऋषि। व्रती। संयमी। साधु। योगी।

ब्रह्मज्ञानी—ज्ञाता। दार्शनिक। तत्वज्ञ। तत्वविद्। ब्रह्मज्ञ। ब्रह्मपरायण। ब्रह्मपर।

मुक्ति—कैवल्य। निश्रेणी। निर्वाण। मोक्ष। अक्षय। स्वर्ग। अपवर्ग। अमृत। अपुनर्भव। महासिद्धि।

---

* धर्म के दस लक्षण—१. धृति, २. क्षमा, ३. दम, ४. अस्तेय, (चोरी न करना) ५. शुचि, ६. इन्द्रियनिग्रह, ७. बुद्धि, ८. विद्या, ९. सत्य, १०. अक्रोध (क्रोध न करना वा क्रोध को रोकना)।

अमृत—पीयूष। अमृत। सुधा। सोम। मधु। अगदकार। सुरभोग। अमी। अमिय। शशिरस। (अप० इमिरित, अमरित)।

स्वर्णाचल—मेरू। सुमेरु। हेमाद्रि। रत्नसानु। सुरालय। हेमकूट।

देववृक्ष—कल्पद्रुम। कल्पवृक्ष। मन्दार। पारिजातक। सन्तान। कल्पतरु। सुरद्रुम। हरिचन्दन।

देवनदी—मन्दाकिनी। वियद्गङ्गा। स्वर्णदी। सुरदीर्घिका। देवसरि। स्वर्गापगा। देवगङ्गा। स्वर्गङ्गा।

कामधेनु—सुरधेनु। कामधुक धेनु। सुरसुरभी। कामदुहा।

वेद *—ब्रह्म। श्रुति। निगम। धर्ममूल। छन्द। आम्नाय। प्रवचन।

शास्त्र†—आगम। विद्या। ग्रन्थ।

---

* वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद। इन्हीं वेदों से चार उपवेद निकाले गये, यथा—धन्वन्तरि ने ऋग्वेद से आयुर्वेद निकाला, विश्वामित्र ने यजुर्वेद से धनुर्वेद निकाला, भरत मुनि ने सामवेद से गन्धर्ववेद निकाला और विश्वकर्मा ने अथर्वणवेद से स्थापत्य निकाला।

वेदाङ्ग छः हैं, यथा — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।

† शास्त्र १८ हैं, यथा—४ वेद + ६ वेदाङ्ग तथा मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थशास्त्र।

२. देवावतार वर्ग

रामचन्द्र *—राम। दाशरथि। रघुबर। रघुपति। रघुराज। रघुनन्दन। रघुराय। सीतापति। खरारि। रावणारि। अवधेश।

जानकी †—जानकी। वैदेही। सीता। भूतनया। भूमिजा। जनकनन्दिनी। जनकात्मजा। रामप्रिया।

परशुराम ‡—रेणुकात्मज। परशुधर। राम। यामदग्नि। भार्गव।

कृष्ण—श्याम। साँवले। सँवलिया। नन्दनन्दन।

---

* अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे। लव और कुश इनके दो पुत्र हुए।

† मिथिला के राजर्षि महाराज जनकजी की पुत्री थी। इनकी उत्पत्ति पृथ्वी से हुई है।

‡ महर्षि यमदग्निजी के पुत्र थे। इन्होंने सहस्रबाहु को मार कर २१ वार हैहयवंशी क्षत्रियों का नाश किया था। इनकी माता का नाम रेणुका था।

जनार्दन। यदुनन्दन। देवकीनन्दन। कंसारि। मुरमर्दन। मुरलीधर। वंशीधर। गिरिधर। द्वारिकाधीश। माधव। केशव। हृषीकेश। मुकुन्द। मधुसूदन। गोपीनाथ। राधारमण। पुरुषोत्तम। भगवान। चक्रपाणि। यादवेश। योगीन्द्र। ब्रजभूषण। वासुदेव।

[नोट–विष्णु के सभी नाम कृष्ण के पर्यायवाची हो सकते हैं।]

राधा—राधिका। वृषभानुजा। हरिप्रिया। वृषभानुनन्दिनी। कीर्तिकिशोरी। ब्रजरानी।

यशोदा—जसुमति। यशुदा। नँदरानी।

बलराम—बलदाऊ। दाऊ। बलदेव। हलदेव। हलधर। रौहिणेय। बलभद्र। संकर्षण। नीलाम्बर। रेवतीरमण। मूशल-पाणिक। राम। कामपाल। हलायुध। अच्युताग्रज। प्रलम्बघ्न। मुसली। हली। तालाङ्क। सीरपाणि। कालिन्दीभेदन। बल। बलबीर। तालध्वजी।

अनिरुद्ध—उषापति। ब्रह्मसू। ऋष्यकेतु।

नृसिंह—नरहरि। नरसिंह। नारसिंह।

गौतम बुद्ध—शाक्यसिंह। सर्वार्थ। गौतम। मायासुत। अर्कबन्धु। शाक्यमुनि। शौद्धोदनि। सर्वज्ञ। सुगत। बुद्ध। धर्मराज। तथागत। जिन। भगवत। दशबल। मारजित्। लोकजित्। समन्तभद्र। षडभिज्ञ। अद्वयवादी। विनायक। मुनीन्द्र। श्रीघन। शास्ता। सिद्ध। महाबोधि। आर्य। दशार्ह। महामैत्र। अर्हण।

गायत्री—वेदमाता। सावित्री। ब्राह्मी। ब्रह्मबीज। सरस्वती।

हनुमान—पवनसुत। अञ्जनीकुमार। महाबीर। महाबली। विक्रम। बज्राङ्गी (अप० बजरंगी) कपिकेशरी। कपीश। जितेन्द्रिय। वातात्मज। आञ्जनेय। रामदूत। वरिष्ठ। प्रभंजनजात। मारुति। अक्षहन्त।

नारद्—देवर्षि। ब्रह्मसू। ब्रह्मपुत्र।

विश्वामित्र—कौशिक। गाधिसूनु। गाधेय। राजर्षि।

विश्वकर्मा—शिल्पराट्। सुरशिल्पकी। पटुशिल्पेश।

शृङ्गी ऋषि—शृङ्गी। मृगज। विभांडसुत। शान्ताधव। (यह राजा दशरथ के जामाता, शान्ता के पति थे)

अगस्त्य—घटज। घटोद्भव। घटसंभव। घटयोनि। कुम्भज। सिन्धुशासनि। मैत्रावरुण। विन्ध्यकूट। समुद्रचुलुक। पीताब्धि। और्वशेय।

[नोट—अगस्त्य की स्त्री लोपामुद्रा हैं।]

वशिष्ठ *—वैरञ्चि। ब्रह्मसू। ब्रह्मर्षि।

[नोट—वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती है]

वाल्मीकि—आदिकवि। वल्मीकोद्भव। प्राचेतस्। मैत्रावरुणि।

व्यास—वेदव्यास। द्वैपायन। पाराशर्य। सत्यवतीसुत।

युधिष्ठिर †—धर्मराज। अजातशत्रु। कौंतेय। कुरुराय।

---

* सप्तर्षियों में से एक। सप्तर्षि—विश्वामित्र। यमदग्नि। भरद्वाज। गौतम। अत्रि। वशिष्ठ। कश्यप।

† पञ्च पाण्डव—युधिष्ठिर। भीम। अर्जुन। नकुल। सहदेव।

अर्जुन—जिष्णु । धनंजय । विजयरथ । फल्गुन । किरीटी । गुडाकेश । गांडीवधर । पार्थ । कपिध्वज । सव्यसाचि । शब्द-भेदि । धनुर्धर । कौन्तेय । नर ।

कर्ण—राधेय । वसुषेण । अर्कनन्दन । सूर्यसुत । चाम्पेश । सूतपुत्र । अङ्गराट् ।

भीष्मपितामह—गंगापुत्र । गांगेय । पितामह । शान्तनुसुत ।

द्रौपदी—द्रुपदसुता । पाञ्चाली । कृष्णा । सैरिंध्री । नित्ययौवना । याज्ञसेनी । वेदिजा ।

अभिमन्यु—सौभद्र । पार्थनन्दन । पाण्डुपौत्र ।

दशरथ—कौशलपति । अवधेश । रघुवंशमणि । दिगस्यन्दन ।

जनक—राजर्षि । विदेह । मिथिलेश । विवेकनिधि । तिर्हुत राज ।

लक्ष्मण—सौमित्र । अहीश । शेष । अनन्त । लखन । रामानुज । लछिमन ।

शत्रुघ्न—रिपुदमन । रिपुसूदन । शत्रुहन्ता । शत्रुहन ।

रावण—दशवदन । दैत्येन्द्र । दशकन्ध । लंकेश । निशि-चरपति । दशकंठ । दशमाथ । दशग्रीव । यातुधानेश ।

मेघनाद—शक्रारि । इन्द्रजित ।

जामवन्त—ऋक्षराज । जांबुवान ।



३. तीर्थादिवर्ग

प्रयागराज—तीर्थराज । प्रयाग । तीर्थेश । तीर्थपति ।

अयोध्या *—अवध । अवधपुरी । विमला । आदिपुरी । आद्या । साकेत ।

मथुरा—मधुपुरी । मधुवती । मधुरा । मधुवन ।

काशी—आनन्दपुरी । आनन्दवन । आनन्दकानन । शिवपुरी । काशिका । वाराणसी । मोक्षदा पुरी । बनारस ।

जगन्नाथपुरी †—जगदीशपुरी । पुरी । जगन्नाथ ।

द्वारकापुरी—द्वारकाधीश । वेंकटेश । द्वारावती ।

गंगा—भागीरथी । जाह्नवी । जह्नुनन्दिनी । मन्दाकिनी । सुरसरि । देवापगा । ध्रुवनन्दा । भीष्मसू । त्रिपथगा । सुरध्वनि ।

---

* सप्त मोक्षदायक तीर्थ—अयोध्या । मथुरा । काशी । कांची (काञ्जीवरम्) । अवन्तिका (उज्जैन) । जगन्नाथपुरी । द्वारकापुरी ।

† जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी, बदरिकाश्रम और रामेश्वरम् ये चारों धाम तीर्थयात्रा की दृष्टि से मुख्य माने जाते हैं ।

नदीश्वरी। हरमौलिविहारिणी। त्रिस्रोता। सुरापगा। अलक-नन्दा। अध्वगा।

['देव' वाची शब्द के आगे कोई 'नदी' वाचक शब्द जोड़ देने से 'गंगा' का बोधक होगा]

यमुना—सूर्यसुता। सूर्यतनया। कालिन्दी। शमन-स्वसा। कृष्णा। अर्कजा। तरणिजा।

[नोट—'सूर्य' के पर्य्याय के साथ 'कन्या' का पर्य्याय जोड़ देने से 'यमुना' का बोधक होगा।]

नर्मदा—रेवा। नर्मदा। सोमोद्भवा। मेकलसुता।

सरयू—सरजू। वाशिष्ठी। आनन्दाश्रुजा।



४. दिशादिवर्ग

दिशा—दिक्। ककुभ। दिशा। काष्ठा। आशा। हरित। ओर। तरफ।

दिक्पाल *—दिगाधिप। दिशाधिप। दिग्पति। दिगेश। दिशीश।

पूर्व—प्राची। पूरब। पुरुब।

पश्चिम—पच्छिम। प्रतीची। पच्छूं।

उत्तर—उदीची।

दक्षिण—अवाची। दक्खिन। दच्छिन।

दिगान्तर †—कोण। दिशाओं का मध्यवर्ती कोना। दिक्कोण।

---

* दशो दिग्पाल—पूर्व = इन्द्र। पश्चिम = वरुण। उत्तर = कुबेर। दक्षिण = यम। ईशान = ईश। नैर्ऋत्य = नैर्ऋत। वायव्य = वायु। आग्नेय = अग्नि। ऊर्ध्व = ब्रह्मा। अध. = शेष।

† दिगान्तर—ईशान (पू०+उ०), नैर्ऋत्य (प०+द०) वायव्य, वायुकोण (पू०+द०) आग्नेय, अग्निकोण (पू०+उ०)।

दिग्गज *—दिशिकुञ्जर। दिक्स्तम्भ।

मण्डल—चक्रवाल। चक्र। मण्डल।

ऊपर—ऊर्ध्व। ऊँचा। उच्च। उपरि। तुङ्ग। उन्नत। उच्छ्रित। प्रांशु। उदग्र। उत्तङ्ग। ऊँच।

नीचे—निम्न। अधः। तले (तरे, तर)। तल।

आगे—अग्रे। अग्र। पूर्व। प्रथम। पहले। अग्गल (अग्गड़)।

सम्मुख—सन्मुख। सामे। सामुहे। सोझे। सौंहे। प्रत्यक्ष। समक्ष। साक्षात्।

विमुख—परोक्ष। विलग। गुप्त। निगूढ़। विगूढ़। अन्तर्हित। अन्तर्धान। पिहित। प्रच्छन्न। निभृत। तिरोहित। सम्बरित। गोप्य। गहन। परे।

एकान्त—अकेला। निर्जन। शान्त। इकन्त। एकाकी। शून्य। सूनसान। निराला।

ओट—आड़। परदा। छिपाव। दुराव।

दहिना—दक्षिण। दाहिन। दाएं।

बायाँ—वाम (बाम) बाएं। बावाँ।

समीप—पास। निकट। अनतिदूर। अदूर। अतिपार्श्व। अभ्यास। नेरे। पार्श्व। आसन्न। उपकंठ। समर्याद। अन्तिक।

---

* अष्टदिग्गज—ऐरावत (पू०)। पुण्डरीक (आ०)। वामन (द०)। कुमुद (नै०)। अञ्जन (प०)। पुष्पदन्त (वा०)। सार्वभौम (उ०)। सुप्रतीक (उ० पू०)

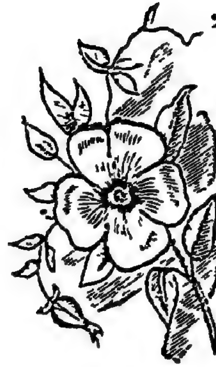
अभित। सनीड। तट। सन्निकट। ढिग। सन्निकृष्ट। अभ्यास। सविधि। अभ्यग्र। सदेश। अभ्यर्ण। सवेश।

दूर—परे। विलग। पृथक। भिन्न। विगत। न्यारा। अरग।

आदि—आरम्भ। प्रथम। प्रारम्भ। समारम्भ।

मध्य—बीच। माँझू। मधि।

अन्त—अवसान। समाप्त। इति। पर। छोर। पूर्ण।



५. आकाशादि वर्ग ।

आकाश—द्यो । द्यौ । अभ्र । अभ्म । व्योम । पुष्कर । अम्बर । नभ । अन्तरिक्ष । अन्तरीक्ष । गगन । अनन्त । सुरवर्त्म । ख । वियत् । विष्णुपद । विहाय । नाक । अनङ्ग । मेघवेश्म । महाबिल । मरुद्वर्त्म । मेघवर्त्म । त्रिपिष्टप । शून्य ।

मेघ—अभ्र । मेघ । वारिवाह । धाराधर । जलमुच । मुदिर । धूम्रयोनि । तड़िल्वान् । घन । जलधर । स्तनयित्नु । जलदान । बलाहक । अम्बुभृत् । वारिद । जीमूत । बादर । बादल । बद्दल । नीरद । क्षरिद । वारिधर । पयोद । अम्बुद । पयोधर । सारंग । पुरजन । यज्ञपुत्र । जगजीवन । असुर ।

मेघपंक्ति—मेघमाला । मेघावली । घनमाला । कादम्बिनी । आसार ।

मेघगर्जन—रसित । स्तनित । गर्जित । गर्जन । घोष । घनरव ।

बिजुली—क्षण (छन) छटा । तड़ित् । दामिनी । चपला । चंचला । विद्युत् । कौंधा । घनबल्ली । सौदामिनी । सम्पा ।

विज्जु। सज्जूँ। चटुल। अशनि। शतह्रदा। ह्लादिनी। चॉकी। क्षणप्रभा। ऐरावती। अकालकी।

इन्द्रधनुष—इन्द्रायुध। शक्रधनु। ऋजुरोहित।

वृष्टि—सम्पात। आसार। वर्षा। वारिस।

झींसी—फुहार। सीकर। जलकण। अम्बुकण।

मृगतृष्णा—मरीचिका। मृगजल। भ्रमजल। मृग-त्रास। मिथ्याजल।

पाला—तुषार (तुसार, टुसार)। हिम। तुहिन। बरफ। अवश्याय। मिहिका। प्रालेय। नीहार। ओला। ओस।

नक्षत्रादि के नाम

सूर्य*—दिवाकर। प्रभाकर। दिनकर। दिवसाधिप। भास्कर। हंस। मिहिर। तिमिरहर। विभाकर। विवस्वान्। भानु। विभावसु। पतंग। सविता। अम्बरमणि। रवि। खग। गभस्तिमान्। हिरण्यगर्भ। नक्षत्राधिपति। आदित्य। अंशुमाली। अर्क। मरीची। अवि। सूर। वीरोचन। मार्तण्ड। पूषण। तरणि। सुनूर। कुतप। अर्यमा। चित्ररथ्य। चक्रबन्धु। कमल-बन्धु। खगपति। हरि। सप्ताश्व। द्वादशात्मा। उष्णरश्मि। असुर। वितर्कन। ग्रहपति। सहस्रांशु। पद्माक्ष। तेजोराशि।

---

* सूर्य की १२ कलाओं के नाम—१. तपिनी, २. तापिनी, ३. धूम्रा, ४. मरीचि, ५. ज्वालिनी, ६. रुचि, ७. सुषुम्णा, ८. भोगदा, ९. विश्वा, १०. बोधिनी, ११. धारिणी, १२. क्षमा।

महातेज। तमिस्रहा। छायानाथ। कर्मसाक्षी। जगच्चक्षु। प्रद्योतन। खद्योत। सारंग।

[नोट—'दिन' शब्द के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ 'स्वामी' अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से 'सूर्य' का बोधक होगा।]

सूर्य के पारिपार्श्वक—माठर। पिङ्गलोदण्ड। चण्डांशु।

सूर्य का सारथी—अरुण। सूर्यसुत। अनूरु। काश्यपी। गरुड़ाग्रज।

सूर्यमण्डल—मण्डल। परिवेष। परिधि। उपसूर्यक। मण्डन।

सूर्य-किरण—किरण। दीधित। उस्र। मयूख। कर। रश्मि। घृणि। गभस्ति। अंशु। गो। वसु। ज्योति। मरीचि। रंस। छटा। कला। भर्ग। प्रद्योत। आलोक।

सूर्य-प्रकाश—प्रभा। रुचि। द्युति। छवि। शोचि। रोचि। भा। भास। त्विष। दीप्ति। प्रकाश। आतप। घाम।

सूर्य के घोड़े—सप्ताश्व। उच्चैः श्रवा। रविहय।

चन्द्रमा *—चन्द्र। चन्द्रमा। सोम। सुधाधर। इन्दु।

* किसी नक्षत्र, औषधी, रात्रि आदि के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ स्वामी अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा का बोधक होगा।

चन्द्रमा की १६ कलायें—१. अमृता, २. मानदा, ३. पूषा, ४. पुष्टि, ५. तुष्टि, ६. रति, ७. धृति, ८. शशनी, ९. चन्द्रिका, १०. कांति, ११. ज्योत्स्ना, १२. श्री, १३. प्रीति, १४. अंगदा, १५. पूर्णा, १६. पूर्णामृता।

सुधाकर। हिमांशु। शुभ्रांशु। शशि। शशधर। शशाङ्क। ग्लौ। मृगाङ्क। नक्षत्रेश। औषधीश। कुमुदबान्धव। निशापति। निशिनाथ। सुधांशु। विधु। कलानिधि। अब्ज। क्षपाकर। (छपाकर)। द्विजराज। जैवातृक। सुधानिधि। अमीकर। हिमरोम। सिन्धुसुत। अम्भोज। ऋक्षराज। भेश। मृगपति। कलङ्कधर। महताब। जलज। उडुप। मयङ्क। मन्थी। सुखग। तारापति। सारंग। राकापति। अमृतबन्धु। अमृतद्युति। अमृतवपु।

चन्द्रमण्डल—चन्द्रबिम्ब। मण्डल।

चन्द्रिका—चाँदनी। ज्योत्स्ना। जोन्ह। कौमुदी। हिमकर। अँजोरिया। चन्द्रमरीची। अमृततरंगिणी। अमृतद्रव।

द्वितीया का चन्द्रमा—नवचन्द्र। वक्रचन्द्र। बालविधु।

पूर्णमासी का चन्द्रमा—पूर्णचन्द्र। राकाशशि। राकेश।

चन्द्र-चिन्ह—निर्वाद। अधम। प्रमाद। कलङ्क। अङ्क। लाञ्छन। लक्ष्म। मसि। लक्षण। मलिन। मली। मृगाङ्क। मृगचिन्ह।

चन्द्रमा की स्त्री—रोहिणी। धातृ। अब्जयोनि। विधातृ।

मङ्गल—अङ्गारक। कुज। भौम। भूमिसुत। लोहिताङ्ग।

बुध—सौम्य। चन्द्रसुत। जारज। चन्द्रज। रौहिणेय। ज्ञ। विद। विदिच।

बृहस्पति—गुरु। सुरगुरु। आङ्गिरस। सुराचार्य। गोष्पति। वाचस्पति। धिषण। जीव। चित्र शिखण्डिज। ईज्य।

शुक्र—कवि। काव्य। दैत्यगुरु। उशना। भार्गव। दैत्यराज। आदिदेव गुरु।

शनैश्चर—शनि। मन्द। मन्दचाल। छायासुत। सौरि। रविनन्दन। आर्कि। मन्दग्रह।

राहु—विधुन्तुद। तम। स्वर्भानु। सैंहिकेय। सिंहिका-सुत। असुर।

केतु—शीर्षग्रह। धूमकेतु। धूम्रकेतु। मत्स्यवाहन। शिखि।

नक्षत्र *—ऋक्ष। भ। तारा। उडु। तारिका। खग। नखत। निशिचर। नभचर। तमचर। जन्हाई।

नक्षत्रों का समूह—तरैया। उडुगण। नखतावली।

ध्रुव—औत्तानपादि। निश्चल। अचलग्रह। स्थिरग्रह।

अश्विनी—अश्वयुज्। अश्व। दास्र।

भरणी—यम। अन्तक (कोई भी यम का पर्य्याय)।

कृत्तिका—अग्नि। अनल (कोई भी अग्नि का पर्य्याय)।

---

* २७ नक्षत्र—अश्विनी। भरणी। कृत्तिका। रोहिणी। मृगशिरा। आर्द्रा। पुनर्वसु। पुष्य। अश्लेषा। मघा। पूर्वाफाल्गुनी। उत्तराफाल्गुनी। हस्त। चित्रा। स्वाती। विशाखा। अनुराधा। ज्येष्ठा। मूल। पूर्वाषाढ़। उत्तराषाढ़। श्रवण। धनिष्ठा। शतभिषा। पूर्वाभाद्रपदा। उत्तराभाद्रपदा। रेवती। (नोट—ज्योतिष के अनुसार 'अभिजित' नामक एक और नक्षत्र उत्तराषाढ़ के बाद माना जाता है। इस प्रकार कुल २८ नक्षत्र होते हैं)।

रोहिणी—विधातृ । धातृ । अब्जयोनि ।

मृगशिरा—मृगसिर । अग्रहायणि । मृग । शशभृत । चन्द्र ।

आर्द्रा—रुद्र । शिव ।

पुनर्वसु—अदिति ।

पुष्य—सिध्य । तिष्य । इज्य । जीव । देवपुरोहित ।

अश्लेषा—सर्प । उरग । भुजग । व्याल । अहि । भुजङ्ग ।

मघा—पितृ । पितर ।

पूर्वाफाल्गुनी—भग । योनि ।

उत्तराफाल्गुनी—अर्यम ।

हस्त—अर्क । रवि । कर ।

चित्रा—त्वाष्ट्र । तक्ष ।

स्वाती—वायु । समीर । अनिल । मरुत् ।

विशाखा—राधा । द्विदैव । शक्राग्नि । द्वीश ।

अनुराधा—मित्र । मैत्र ।

ज्येष्ठा—इन्द्र । शक्र । शाक्र ।

मूल—निरिति । रक्ष । राक्षस ।

पूर्वाषाढ—क्षीर । जल ।

उत्तराषाढ—विश्व । वैश्व ।

अभिजित—विधि ।

श्रवण—कर्ण । गोविन्द । हरि ।

धनिष्ठा—श्रविष्टा । वसु । वासव ।

शतभिषा—सप्ततारक। तोयप। जलप। वरुण। जलधि। अम्बुप।

पूर्वाभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा। अजचरण।

उत्तराभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा। अहिर्बुध्न।

रेवती—पूषा। अन्त्य। पौष्ण। अन्त्यभ।

राशि *—लग्न। मुहूर्त। भ।

मेष—अज।

वृष—वृषभ।

मिथुन—युग्म।

कर्क—कर्कट।

सिंह—मृगेन्द्र।

कन्या—कन्यका। सुता। कुमारी।

तुला—तौलि। युक्। तुल।

वृश्चिक—अलि।

धनु—चाप। कोदण्ड।

मकर—नक्र।

कुम्भ—घट।

मीन—झख। मत्स्य।



---

* प्रसिद्ध राशियाँ १२ हैं—मेष। वृष। मिथुन। कर्क। सिंह। कन्या। तुला। वृश्चिक। धनु। मकर। कुम्भ। मीन।

६. कालादिवर्ग

समय—बेला । अनिमेष । काल । बार । इष्ट । अदृष्ट । वशिष्ट । अनेह । वय । नमय । अवसर । प्रसङ्ग । दण्ड । मुहूर्त । घड़ी । बिरिया ।

पल—क्षण (छन) । लमहा । दमभर । (२४ सेकेण्ड का एक पल होता है) ।

दण्ड—घटी । घटिका । दण्ड ।

(नोट—२४ मिनट का एक दण्ड होता है । एक दिनरात में ६० दण्ड होते हैं) ।

प्रहर *—पहर । याम । (३ घण्टे का एक प्रहर होता है)

दिन—दिवस । वासर । घस्र । अह्न (अहन) ।

प्रातःकाल—प्रत्यूष । अहर्मुख । प्रत्युषसी । गोसर्ग । प्रातः । सबेरा । भोर । प्रभात । भिनुसार । बिहान । अरुणोदय । कल । दिनमुख । तड़का । सकाल ।

---

* प्रहर—एक दिन रात में ८ प्रहर होते हैं । यथा दिन में—१ पूर्वाह्न वा प्रातः, २ मध्याह्न, ३ अपराह्न, ४ सायं । रात्रि में—१ प्रदोष वा रजनीमुख, २ निशीथ, ३ त्रियामा, ४ उषा, भोर वा ब्राह्ममुहूर्त ।

मध्याह्नकाल—दोपहर। दुपहरिया। मध्यदिवस।

सायंकाल—रजनीमुख। सायं। दिनान्त। सन्ध्या। गोधूलि। प्रदोषकाल। साँझ। पितृप्रसू।

रात्रि—निशा। शर्वरी। निशीथ। निशीथिनी। त्रियामा (रात्रिका ३ रा पहर)। क्षणदा। विभावरी। रजनी। यामिनी। क्षपा (छपा)। निशि। नक्त। रैन। रात। कादम्बरी। सीता। कोटर। दोषा। असुर।

अँधेरी रात—तमी। तमिस्रा। तामसी। तमस्विनी। श्यामा।

उँजाली रात—ज्योत्स्नी। चन्द्रिकयान्विता। कौमुदी। हरिद्रा। विभावरी।

सप्ताह—अठवारा। हफ्ता। (७ दिन का एक सप्ताह)।

पक्ष—पख। पाख। पखवारा। (१५ दिन का १ पक्ष)।

कृष्णपक्ष—अँधेरा पाख। असितपक्ष।

शुक्लपक्ष—उँजेरा पाख। सितपक्ष।

मास—माह। महीना।

वर्ष—अब्द। वत्सर। हायन। सरत। संवत्। सम।

अमावस्या—सूर्येन्दुसङ्गम। कुहू (जब कि चन्द्रमा की कला नष्ट हो जाती है)। अमा। दर्श। अमावस। सिनीवाली (जब कि चन्द्रमा की कुछ कला अवशेष रहती है)।

पूर्णमासी—पौर्णमासी। राका। पर्व। पूनो। पुनवासी। पुनमासी।

चैत्र—चैत। चैत्रिक। मधु।

वैशाख—माधव। राध। वैसाख।

ज्येष्ठ—जेठ। शुक्र। तपन।

आषाढ़—शुचि। असाढ़। ह्लाढ़।

श्रावण—नभा। श्रावणिक। सावन। नभ।

भाद्रपद—प्रौष्टपद। भाद्र। भादों। भादॅव। नभ।

आश्विन—इष। अश्वयुज्। क्वाँर। कुआर।

कार्तिक—कार्तिकिक। वाहुल। कातिक। ऊर्ज्ज।

मार्गशीर्ष—मगसिर। अग्रहण। अगहन। मगशिर। मार्ग। आग्रहायणिक। सहस्।

पौष—सहस्य। पूस।

माघ—तपा। माह।

फाल्गुन—फाल्गुन। फाल्गुनिक। तपस्य।

अधिक मास *—मलमास। लौंद का महीना। पुरुषोत्तम मास। असंक्रान्त मास।

वसन्त (ऋतु)—ऋतुराज। पुष्पसमय। कुसुमाकर। माधव। सुरभि। वहार। ऋतुपति। कुसुमकाल। मधु।

---

* प्रति तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है, जो शुक्र पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावास्या पर्यन्त रहता है, और इसमें संक्रान्ति नहीं होती। यह चान्द्र और सौर वर्षों को एक करने के लिये चान्द्र वर्ष में जोड़ लिया जाता है।

ग्रीष्म—उष्मक । निदाघ । उष्म । उष्मागम । उष्णागम । तप । तपन । तपाक । गरमी ।

वर्षा—प्रावृट् । पावस । बरसात ।

शरद—हिमर्तु । शरत् ।

शिशिर—शीत । सिसिर । जाड़ा ।

हेमन्त—हिमन्त ।

सतयुग—कृतयुग । पुण्ययुग । देवयुग । सत्ययुग ।

कलियुग—कलि । कलिकाल । कृष्णयुग । कल्कि ।

प्रलयकाल—संवर्त । प्रलय । क्षय । कल्प । कल्पान्त । नाश ।

अवशिष्ट—शेष । बचत । बाकी ।

उपस्थित—विद्यमान । प्रस्तुत । उद्यत । आयात । उपनित । तैयार । मौजूद । वर्तमान । प्रतिपन्न । हाज़िर ।

अनुपस्थित—अप्रस्तुत । अनुद्यत । अभाव । शून्य । बिना । रहित । गैरहाजिर ।

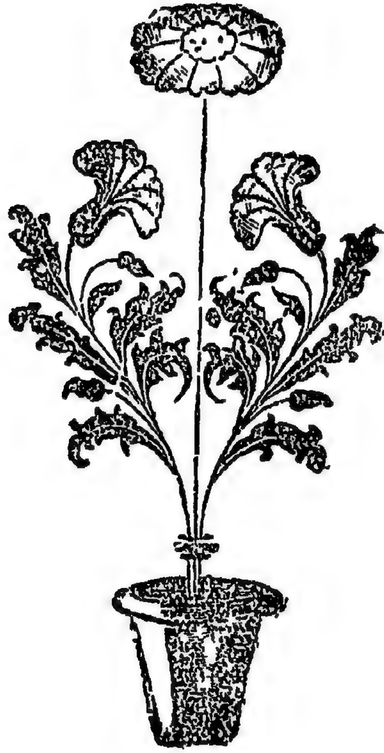
गत—बीता हुआ । बिगत । व्यतीत । भूत । परोक्ष । पहले । पीछे ।

आगामी—आनेवाला । भविष्यत् । भविष्य ।

नित्य—प्रतिदिन । सदा । सर्वदा । रोजरोज । हमेशा । निरन्तर । निरवधि । सतत । सन्तत । सनातन । शाश्वत ।

अनाँतर। अनपायिनी। अनुदिन। अविरल। अविरत। अश्रान्त। ध्रुव।

पश्चात्—पुनः। बहुरि। फिर। बाद। उपरान्त। अथ। तदन्तर। तदनन्तर। अनन्तर। अन्तर।



द्वितीय खण्ड

१. स्थलादिवर्ग ।

पृथ्वी—भू । भूमि । अचला । अनन्ता । रसा । विश्वम्भरा । स्थिरा । धरा । धरित्री । धरणी । क्षौणी । ज्या । काश्यपी । सर्वसहा । वसुमती । वसुधा । उर्वी । वसुन्धरा । गोत्रा । कु । पृथिवी । क्ष्मा । अवनि । मेदिनी । महि । रत्नगर्भा । सागराम्बरा । अब्धिमेखला । भूतधात्री । रत्नावती । देहिनी । पारा । विपुला । धरणीधरा । धारणी । महाकान्ता । जगद्वहा । खण्डनी । गन्धवती । धात्री । गिरि कर्णिका । धारयत्री । सहा । अचलकीला । गौ । द्विरा । इड़ा । इड़िका । इला । इलिका । उदधिवस्त्रा । इरा । आदिमा । इला । वरा । उर्वरा । आद्या । जगती । पृथु । श्यामा । क्रीड़ाकान्ता । खगवती । अदिति । वीजप्रसू । पृथवी । पहुमि । भुइँ । उर्मि । उरा । सारँग । असुर ।

संसार*—जगत । भुवन । लोक । विश्व । जगती । भव । जग । भूलोक । भुव । मृत्युलोक । मर्त्यलोक । विष्टप ।

---

* लोक चौदह हैं—भूलोक, भुवर्लोक, महर्लोक, जनलोक, सत्यलोक, तपोलोक और स्वर्गलोक—ये सात ऊपर के लोक हैं। तल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, रसातल और पाताल। ये सात नीचे के लोक हैं।

संसृति । ब्रह्माण्ड । जहान । दुनिया । दुनी । खलक ।

मिट्टी—मृत् । मृत्तिका । माटी । मट्टी । मृत्सा । प्रशस्ता ।

धूलि—धूर । गर्द । धूल । धूसर । रज । रेणु । पांशु (पाँस) । पिजल । धूसरी । खेह । संचरा । वातकेतु । वातध्वज ।

उपजाऊभूमि—उर्वरा । उर्वरी । सस्याढ्या ।

बिनाउपजाऊभूमि—ऊषर । ऊसर । सस्यहीना । अनुर्वरा । बन्ध्याभूमि ।

आर्यावर्तदेश—भारतवर्ष । भरतखण्ड । भारत । आर्यभूमि । भारतभूमि । पुण्यभूमि । हिन्द । हिन्दुस्तान ।

(नोट—विशेषतः हिमालय और विंध्याचल की मध्यस्थ भूमि को ही आर्यावर्त कहते हैं ।)

राष्ट्र—नीवृत । जनपद । सुदेश । उपवर्तन । विषय ।

ऊसरदेश—ऊषवती । ऊषरा । ऊषरस्थली । ऊषर । ऊषवान् । क्षारभूमि । मरुभूमि । मरुस्थल ।

खेत—क्षेत्र । वप्र । केदार । भूमि । निष्कुट । राजिका । वलज । पाटीर ।

म्लेच्छदेश—प्रत्यन्त । म्लेच्छवास । पतितभूमि । अनार्यभूमि ।

जलप्रचुरदेश—अनूपदेश । मालवदेश ।

बालुकायुतदेश—शर्करा । शर्करिल । शार्कर । शर्करावती ।

वल्मीक—बामलूर । नाकु ।

मार्ग—मग। राह। अयन। वर्त्म। पथि। अध्वा। स्रुति। सरणि। पद्धति। पथ। पन्थ। पदवी। एकपदी। वर्तनि। संचरण। पद्या। बाट।

सुन्दर मार्ग—अतिपन्थ। सुपन्थ। सत्पथ। सन्मार्ग। अतिध्वति। विशिष्टमार्ग। रम्यपथ।

दुर्गम मार्ग—प्रान्तर। कान्तार। क्लिष्ट पथ। कण्टकाकीर्ण मार्ग। दुष्पथ। कुपथ। कुमार्ग। कुराह। कापथ। विपथ। दुर्गम पथ।

संकीर्ण मार्ग—रथ्या। विशिखा। वीथी। वीथिका। लघुपथि। गली। प्रतोली। त्रोलिका। गैल। खोरि। कूचा।

चौराहा—शतुष्पथ। शृङ्गाटक। चौमुहानी। चौरस्ता। चौहट्टा। चौक।

राजमार्ग—घंटापथ। राजपथ। संसरण।

नगर—नगरी। पुर। पुरी। पत्तन। पुटभेदन। निगम। शहर। कसबा।

टोला—मुहल्ला। टोला। टोली। पुर। पुरवा। कूचा।

बाजार—हाट। पण्य। पण्यवीथिका। राजपथ। चतुष्पथ। शृङ्गाटक। विपणि। मण्डी।

तेल का बाज़ार—तेलहट्टा। तेलियाना।

कपड़े का बाज़ार—बजाजा। चैल-हट्टा।

मछली का बाज़ार—मछरहट्टा। मछरटोला।

सुनारों का बाज़ार—सर्राफा।

बर्तनों का बाज़ार—ठठेरी बाज़ार। ठठेरा।

गाँव—ग्राम। गँवई। संवसथ। देहात।

अहीरों का गाँव—घोष। आभीरपल्ली। अहिराना।

भीलों का गाँव—पक्कण। शबरालय।

चमारों का गाँव—चमरौटिया। चमरटोलिया।

घर—गृह। आलय। आगार। ओक। आयतन। गेह। सदन। सद्म। सौध। वेश्म। वास। निकेत। निधान। निःशान्त। निवेश। शिविर। शाला। धाम। भवन। मन्दिर। मकान। आश्रपद (आस्पद)। धिश्रपद। 'वस्य। आवास। शरन। निलय। निवास। अयन। परिघ। वाक्य। शाला। आराम। हर्म्य। स्थान।

[नोट—कच्चे घर को 'बखरी' भी कहते हैं तथा पक्के और बड़े घरों को महल, प्रासाद या हवेली कहते है।]

घर की दीवार—दिवाल। भीत। भित्ति। भीती। कुडयम्।

गृहद्वार—द्वार। पौर। दुआर। ड्योढ़ी। पहरा। दरवाज़ा। प्रतीहार। देहली। गृहावगृहणी। सिहपौर।

बगली द्वार—पार्श्वद्वार। पक्षद्वार। पक्षक। गुप्तद्वार।

देहली—देहरी डेहरी। ड्योढ़ी।

ओसारा—ओटा। अलिन्द। प्रघाण। प्रघण। प्रकोष्ठक। दालान।

आँगन—आङ्गण। गृहाङ्गण। अजिर। चत्वर। बगर।

ताँबा *—ताम्र । तामा । पवित्र । रक्तधातु । ब्रह्मवर्चस् । भासुर । सर्वलोह । तपनेष्ट । अम्बक । अरविन्द । रविलोह । रविप्रिय । रक्त । नैपालिक । द्व्यष्ट । उदुम्बर । म्लेच्छमुख । सुल्य । वरिष्ट । कनीयस । ताम्रक । शुल्ब । द्विष्ट । उडुम्बर । शुल्ल । रविसंज्ञक । अर्क । मुनिपित्तल । सूर्य्याह्व । लोहितायस् । लोहिताप ।

[नोट—ताँबे के कीट को 'तूतिया' कहते हैं । यह औषधि के काम में आता है ।]

चाँदी †—रजत । रौप्य । खर्जूर । रुक्म । जातरूप । शुभ्र । चन्द्रकान्ति । महाधन । वाष्कल । चन्द्रवपु । महावसु । कलधौत । लोहराजक । अकुप्य । सौध । विमल । चन्द्रलोहक । शुभ । वसुश्रेष्ठा । दुर्दान । रूपा । रूपक । दुर्वर्णक । रूप्य । श्वेत । रुचिर । रुधिर । श्वेतक । महाशुभ्र । तप्तरूपक । तार । चन्द्रभूति । सित । कलधूत । रंगवीज । चन्द्रहास । इन्दुलोहक । राजरंग । दुर्वर्ण । धौत । कुप्य ।

पीतल—पित्तल । आरकूट । कपिलोह । सुवर्णक । रिरी । रीरी । रीति । पीतलोह । सुलोहक । ब्राह्मी । राज्ञी । कपिला । ब्रह्मरीति । महेश्वरी । पतिकावेर । द्रव्यदारु । रीति । मिश्र । आर । राजरीती । क्षुद्रसुवर्ण । सिंहल । पिंगल । पीतनक । लोह ।

---

* कार्त्तिकेय के वीर्य से ताँबे की उत्पत्ति है ।

† त्रिपुरासुर वध के समय महादेव जी के वामनेत्र से जो अश्रुपात हुआ, उससे चाँदी की उत्पत्ति हुई ।

लोहितक। पिंगल लोह। पीतक। पिंग। पाकतुंडी। राजपुत्री। ब्रह्माणी। हरिलोह। कांची पीतल। पीतधातु।

[नोट—पीतल उपधातु है। यह ताँबा और जस्ते के योग से बनता है।]

काँसा—कांस्य। विद्युत्प्रिय। कंस। ताम्रार्द्ध। घोष। बंगशुल्बज। कंसास्थि। प्रकाश। घंटाशब्द। असुराह्वय। फूल। सौराष्ट्रकं। कांसीय। घोरपुष्प। वह्निलोहक। दीप्तलोहक। घोरलोह। दीप्तलोह। कांसक। कांस। ताम्रत्रपुज। दीप्ति। काँसी। कस्कुट। फूल।

[नोट—काँसा उपधातु है। यह ताँबा और राँगा के योग से बनता है।]

सोना*—स्वर्ण। सुवर्ण। सुबरन। सोन। हाटक। पुरट। कञ्चन। काञ्चन। कनक। हेम। हरि। हिरण्य। जातरूप। चामीकर। कार्त्यस्वर। शातकुंभ। तपनीय। महारजत। अर्जुन। कर्बुर। रुक्म। भर्म्म। अष्टापद। जाम्बूनद। कलधौत। गारुड़। गौर। चन्द्र। कुन्दन। कान्ति। सुर। सानसि। अमृत। अग्निशिख। अग्निबीज। द्राविड़। भूरिपिंजर। गांगेय। करहाटक। ऋक्थ। अकुप्य। पिञ्जान। आपिञ्जर। तेज। दीप्त। अग्निभ। मनोहर। अग्नि। भास्कर। शतखण्ड। उज्वल। कल्याण। अभ्रक। मुख्यधातु। सारुक। चाम्पेय। भरु। अग्निबीज। भद्र। गैरिक। लोहवर। ऊर्ध्व। रेकन। कर्चूर। लोहोत्तम।

---

* सप्तर्षियों की अत्यन्त सुन्दरी पत्नियों को देखकर अग्निदेव का जो वीर्य पृथ्वी पर गिरा वह 'स्वर्ण' नाम से विख्यात हुआ।

भूत्तम । दीप्तक । मङ्गल्य । सौमेरुक । भृङ्गार । जाम्बव । आग्नेय । निष्क । तपनीयक । चण्ड । अय । पेश । कृशन । लोह । मरुत । दत्र । चारुरत्न । पीतक । श्रीनिकेत । भूषणार्ह । सूर्य्यनामक ।

जस्ता—जसद । बंगसदृश । रीतिहेतु । श्वेतपटल । कंसास्थि । जस्त ।

राँगा—रंग । बंग । चक्रसंज्ञ । स्वर्णज । नाग जीवन । मृद्वंग । गुरुपत्र । तमर । नागज । कस्तीर । आलीमक । सिंहल । स्वषेत । नाग । त्रपु । त्रपुष । आपू । हिम । मधुर । कुरूप्य । पिच्चट । पूतिगंध । चिप्पट । राँग । कलई ।

शीशा—सीस । सुवर्णक । चीन । पिष्ट । सिन्दूर कारण । सीसक । सीसपत्रक । नाग । वप्र । योगेष्ट । वर्द्ध । गंडूपदभव । स्वर्णारि । यवनेष्ट । चीर । वध्र । पिच्चट । सुवर्णारि । त्रपु । बध्रक । महाबल । यामुनेष्टक । बहुमल । श्वेतरंजन । जड़ । भुजंगम । उरग । कुरंग । परिपिष्टक । मृदुकृष्णायस । पद्म । तारशुद्धिकर । शिरावृत्त । वयोरंग । चीनपिष्ट । चीनरंग । लेख्य । धातुमल । पार्वत ।

पारा *—पारद । रस । रसराज । रसधातु । रसेन्द्र । महारस । चपल । शिववीर्य । सूत । शिवाह्वय । महातेज ।

---

*पृथ्वी पर महादेवजी का वीर्य गिरा वही संसार में 'पारद' नाम से विख्यात हुआ । यह परमौषधि है । निघण्टुरत्नाकर में लिखा है कि "रसात् परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति" अर्थात् पारे के समान श्रेष्ठ गुण वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा ।

रसलेह। रसोत्तम। सूतराट्। जैत्र। शिवबीज। शिव। अमृत। लोकेश। दुर्द्धर। प्रभु रुद्रज। हरतेज। अचिन्तज। अवित्तज। खेचर। अमर। देहद। मृत्युनाशक। स्कन्द। स्कान्दांशक। देव। दिव्य रस। रसायन श्रेष्ठ। यशोद। सूतक। सिद्धधातु। रजस्वल। मूर्त्ति। पार। लोहेश। हेमनिधि। त्रिनेत्र। रोपण। स्वामी।

गन्धक *—गौरी बीज। बलि। गन्धपाषाण। गन्धिक। गन्धाश्म। पामाघ्न। सौगन्धिक। सुगन्धिक। पामारि। गंधी। शुल्वारि। गन्धमोदन। वर। पूतिगन्ध। गंध। दिव्यगन्ध। सगन्ध। रस गन्धक। कुष्ठारि। क्रूरगन्ध। कीटघ्न। शरभूमिज। बलरस। गन्धमोहन। अतिगंध। पामागंध।

हरताल †—ताल। पित्तल। पिञ्जर। मनोज्ञ। हरितालक। छत्राङ्ग। काञ्चनरस। गोदन्त। नटमण्डन। निस्त्रगन्धि। पीतक। हरिताल। कम्बूर। पीतन। हरिबीज। सिद्धधातु। पिजल।

---

* गन्धक चार प्रकार का होता है—यथा, सफेद, लाल, पीला और नीला। सफेद गंधक व्रण आदि के काम में, लाल गंधक सुवर्ण शुद्ध करने में, पीला पारदादि रसायन कर्म में तथा नीला गंधक सर्व श्रेष्ठ और दुर्लभ है। यह सब प्रकार के रसायन कर्म में प्रयुक्त होता है।

† हरिताल दो प्रकार का होता है। यथा—१. पत्र हरिताल वा स्तवक वा तबकिया हरिताल। २. पिंड वा गोदन्त हरिताल।

पुराणों के मतानुसार विष्णु के वीर्य से हरिताल, लक्ष्मी के रज से मैनसिल, शिव के वीर्य से पारा और पार्वती के रज से गन्धक की उत्पत्ति मानी गई है।

लोमहृत । वंशपत्रक । वर्णक । नटभूषण । अल । पीत । गोरोच । चित्राङ्ग। पिंजरक । वैदल । तालक । कनकरस । काञ्चनक । बिड़ालक । चित्रगंध । पिङ्ग । पिङ्गसार । गौरी ललित ।

अभ्रक*—अबरक । तबक । गिरिजाबीज । निर्मल । अब्द । गिरिजामल । व्योम । घन । शुभ्र । बाहु पत्र । घनाह्वक । गिरिज । अमल । गौर्य्यामल । गरजध्वज । अभ्र । भृङ्ग । अम्बर । अन्तरिक्ष । ख । अनन्त । गगन । गौरीज । गौरीजेय । आभ । अबरख । भोडर । भोडल । भुरवल ।

[नोट—आकाश शब्द के जितने पर्य्याय हैं उनसे भी अभ्रक का अर्थ निकलता है ।]

मुरदासंग—स्वर्णवर्णक । व्रणघ्न । नागसत्व । वोदार । मुरदाशिग । वोदारश्रृंग । बेदारश्रृंगज ।

[बेंदार नामक श्रृंग पर मुरदासंग उत्पन्न होता है । यह वहुत भारी और चमकीले पीले रंग का होता है, व्रण आदि के काम में आता है]

रूपामक्खी—तारमाक्षिक । माक्षिकश्रेष्ठ । विमल ।

---

* अभ्रक चार प्रकार का होता है, यथा—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र । पिनाकाभ्रक खाने से महाकुष्ट रोग, दर्दुर अभ्रक खाने से मृत्यु, नाग अभ्रक खाने से भगन्दर रोग होता है, तथा वज्राभ्रक के सेवन से सर्वरोग नाश, तरुणता, आयुष्य, बल, महावीर्य, और अत्यन्त पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति होती है। वैद्यक मत से वज्र नामक अभ्रक सर्वोत्तम माना गया है ।

श्वेताक्ष । रूपामाक्षि । रौप्यमाक्षिक । रूपामाखी । तारामुखी । धातुमाक्षिक ।

[सफेद चमकदार को रूपामाखी और पीले चमकदार को सोनामाखी कहते हैं ।]

सोना माखी—माक्षिक । धातुमाक्षिक । ताप । स्वर्णाह्वय । स्वर्णमाक्षिक । सुवर्णमाक्षिक । तापिच्छ । आपीत । ताप्यक । पीतमाक्षिक । आवर्त्त । क्षौद्रधातु । माक्षिकधातु । कदम्ब । चक्रनामा । तापिंज । स्वर्णवर्ण । हेमद्युति । मधुधातु । अजनामक ।

खपरिया—चक्षुष्य । अमृतोत्पन्न । खर्परी । दार्विका । खर्पर । रसक । खार्परिका । तुत्थ्य । खर्परी तुत्थ्य । खर्परी तुत्थक । यशदोपधातु । खापरिया । खापर ।

तूतिया—मूषातुत्थ । कांस्यनील । तुत्थक । शिखिकण्टक । तुत्थ । हरिताश्म । नीलांगज । मयूर ग्रीवक । ताम्रगर्भ । अमृतोद्भव । मयूर तुत्थ्य । भृतक । शिखिकण्ठ । नील । तुत्थांजन । वितुन्नक । शिखिग्रीव । मयूरक । हेमसार । मृतामिद । ताम्रोपधातु । नीला थोथा । थोथा ।

[ताम्बे के कीट से भी तूतिया निकलता है]

कासीस *—कासीस । धातुकासीस । खाचर । शोधन । धातुशेखर । पांसुकासीस । केसर । हंसलोमस । शुभ्र ।

* कासीस दो प्रकार की होती है—१. 'धातुकासीस' जो भस्म के समान अम्ल मृत्तिका होती है, जो प्रायः सफेद या फिरोजी रंग की होती है । २. 'पुष्पकासीस' जो पीली होती है ।

नेत्रौषध । पुष्पकासीस । वत्सक । मलीमस । ह्रस्व । विशद । नीलमृत्तिका । हीराकस ।

गेरू (साधारण)—गिरिमृत । गैरिक । रक्तधातु । लोहितमृत्तिका । गिरिधातु । गवेधुक । धातु । गिरिमृद्भव । वनालक्त । गवेरुक । प्रत्यश्म । गिरिज । गैरेय । ताम्रधातु ।

स्वर्ण गैरिक (गेरू)—सुवर्ण गैरिक । स्वर्णधातु । सुरक्त । शिलाधातु । सन्ध्याभ्र । बभ्रुधातु । सुरक्तक ।

हिरौंजी—पाषाण गैरिक । कठिन । ताम्र वर्णक । हिरौंजी । पीत गैरिक । सोनगेरू ।

खड़िया (सेल खड़ी)—पाकशुक्ला । शिलाधातु । खटि । कठिनी । खड़ी । खटीं । खटिनी । खटिका । धवल मृत्तिका । श्वेतधातु । पाण्डुमृत्तिका । सितधातु । पाण्डुमृत । कक्खटी । वर्णरेखा । वर्णलेखा । मृत्तिकानखा । अनीलाधातु । वर्णलेखिका । शुक्लधातु । धातुपल । कठिनिका । लेखनी । मकल्ल । खरियामाटी । गौरखड़ी । चाखड़ी ।

मैनसिल—मनः शिला । गोला । मनोज्ञा । नागजिह्विका । मनोगुप्ता । रोगशिला । नैपाली । कुनटी । शिला । मनः सिल । कुटली । मनोह्वा । नेपालिका । मनसिल । कल्याणिका । नागमाता । रसनेत्रिका । दिव्यौषधि ।

सुरमा * (स्रोतोंजन)—नदीज । बाल्मीक । स्रोतज ।

---

*सुरमा तीन प्रकार का होता है । १. स्रोतोंजन, २. सौवीराञ्जन । और ३. पुष्पाञ्जन ।

जयामल। स्रोतोद्भव। स्रोतोभव। सौवीर। सौवीरसार। कपोतांज। यामुन। पीतसारि। वारिभव। कपोतसार। बाल्मीकशीर्ष।

सुरमा (सौवीराञ्जन)—सौवीरक। पार्वतेय। मेचक। नीलांजन। कृष्ण। नादेय। स्रोतोज। दुष्प्रद। सुवीरज। चक्षुष्य। वारिसम्भव। कपोतक। सुरमा। अंजन। श्वेतसुरमा। कालासुरमा।

सुरमा (पुष्पाञ्जन)—कौसुम्भ। रीतिक। कुसुमाञ्जन। रीतिपुष्प। पुष्पकेतु। पौष्पक। सदञ्जन। रीतिकुसुम। माक्षिक। चाक्षुष्य। कुमिरसाञ्जन। धातु माक्षिक।

हिंगुल (ईगुँर) *—हंसपाद। रसस्थान। हिंगुळ। रक्तपारद। हिंगुलि। हिंगुलु। रक्त। मर्कटशीर्ष। दरद। रस। उरु। उन्द। कपिशीर्षक। वर्वर। सुरंग। सुनर। रञ्जन। म्लेच्छ। चित्राङ्ग। चूर्णपारद। चर्म्मारक। रंजक। रसोद्भव। रसगर्भ। मनोहर। चर्म्मार। नानाशृंगारवर्द्धन। सिंगरफ। सिंगरिफ। ईंगुर। इंगुर। हींगलू। शुकतुण्डक।

सिंदूर—सींदुर। सेंदुर। नागज। वीर। रक्त। शिव। सन्ध्यारुण। रक्तबालुका। रंगज। बंगज। शृंगारभूषण। अरुण।

स्रोतोंजन देखने में नीला चमकदार, परन्तु घिसने में गेरू की भाँति लाल होता है।

* हिंगुल तीन प्रकार का होता है। (१) चर्म्मार-सफेद रंग का। (२) शुकतुण्डक—पीले रंग का, तथा (३) हंसपाद—लाल रंग का होता है। यही शृंगार के काम में आता है।

नाग रक्त। नाग सम्भव। रक्तचूर्ण। रक्तबालुक। रक्तशासन। भालदर्शन। नागरेणु। सीमन्तक। नागगर्भ। शोण। वीररज। गणेशभूषण। सन्ध्याराग। शृंगारक। सौभाग्य। मंगल्य। सीसज। सीसोपधातु। अरुण पराग। सौभाग्य चिन्ह। सोहाग।

शिलाजीत *—शिलाजतु। अद्रिजतु। शैलनिर्यास गैरेय। अश्मज। गिरिज। शैलधातुज। अर्थ्य। शिलाज। शैल। अगज। शैलेय। शीतपुष्पक। शिलाव्याधि। अश्मोत्थ। अश्मलाक्षा। अश्मजतुक। जत्वश्मक।

बच्छनाग-विष †—काकोल। गरल। क्ष्वेड। विष।

---

* उष्ण काल में सूर्य की किरणों से तप्त होकर पर्वत धातुओंके सार को गोंद की भाँति छोड़ते हैं, उसी सार को शिलाजतु वो शिलाजीत कहते हैं। यह धातुभेद से चार प्रकार का होता है। १. सौवर्ण, २. रजत, ३. ताम्र, और ४. आयस।

'सौवर्ण शिलाजीत' सुवर्ण की खान का सार है, यह लाल रंग का होता है।

'रजत शिलाजीत' चाँदी की खान का सार है, यह पाण्डु (पीले) रंग का होता है।

'ताम्र शिलाजीत' ताँबे की खान का सार है, यह मोर की गर्दन के रंग का होता है।

'आयस शिलाजीत' लोहे की खान का सार है, यह काले रंग का होता है। यही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह मत "भाव प्रकाश" का है।

शुद्ध शिलाजीत की यही उत्तम पहचान है कि वह अग्नि में डालने से लिंगाकार खड़ा हो जाता है और उसमें से धुँआ नहीं निकलता।

—(निघण्टु रत्नाकर)

† वैद्यक मत से विष दो प्रकार का होता है। एक स्थावर विष है,

दारद । अमृत । सौराष्ट्रिक । शौक्लकेय । ब्रह्मपुत्र । प्रदीपन । नील । आहेय । गरद । कालकूट । कसाकूल । हारिद्र । रक्तश्रृङ्गिक । गर । घोर । हालाहल । हलाहल । भुगर । श्रृङ्गी । जांगल । रस । तीक्ष्ण । रसायन । जंगुल । जांगुल । वत्सनाभ । प्राणहर । जहर । जीवनाघात । कृषल । जीवनान्तक । प्राणहर । बचनाग । माहुर ।

संखिया *—शतमल्ल । गौरीपाषाण । आखुपाषाण । लोहशंकरकारक । सोमलखार । मल्ल ।

फिटकिरी—स्फटी । स्फटिका । श्वेता । शुभ्रा । रंगदा । दृढ़रंगा । रंगदृढ़ा । दृढ़ा । रंगा । स्फटिकारि । स्फटिकारिका । रंगाङ्गा । सुरंगा । गतरंगा । फटकिरी ।

चुम्बक—चुम्बक पत्थर । कान्तपाषाण । अयस्कान्त । लौहकर्षक ।

गोपी चन्दन—आढ़तकी । सौराष्ट्री । तुवरी । पर्पटी । कालिका । सती । सुजाता । काक्षी । पार्वती । मसी । मृदाह्वाया । मृत् । मृत्स्ना । आसङ्ग । सुराष्ट्रजा । मृत्तालक ।

जो खान से उत्पन्न हो, अथवा किसी वृक्षादि के मूल-पत्र-फल-फूल छाल-दूध-सार गोंद आदि से उत्पन्न हो, अथवा किसी धातु से उत्पन्न हो, वा कन्द का हो । दूसरा जंगम विष है, जो साँप, कीट, नेवले, जोंक, मकड़ी, बिच्छी, मछली, चूहा, कुत्ता, सिंह, व्याघ्र, तेंदुआ, भेड़िया, श्रृगाल, आदि जन्तुओं के दाँत, मुँह, नख आदि में रहता है ।

*वच्छनाग और संखिया की गणना विष में है और सेहुड़ (थूहर), मदार (आक), करियारी, घुँघची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम ये नौ उपविष संज्ञक हैं ।

काली। मृत्तिका। कंसोद्भवा। सुरमृत्तिका। स्तुत्या। सौराष्ट्री। सोरठ की मिट्टी।

बोल (बोर)*—गन्धरस। पिंड। निर्लोह। बर्बररस। पौर। सुगन्ध। नालक। रसगन्ध। रस। सौरभ। बर्बर। रक्तापह। मुण्ड। सुरस। पिण्डक। विष। महागन्ध। विश्व। शुभगन्धक। विश्वगन्ध। व्रणारि। प्राण। गोप। गोस। पिण्डगोस। शश। गोसशश। गान्धार। मसिवर्द्धन। बोलज। गोपरस। गोपक। पिण्डल। गोल। बीजाबोल। हीराबोल।

जवाखार—पाक्य। क्षार। यावशूक। यवक्षार। यवाग्रज। यवलास। यवशूक। सारक। रेचक। यवनालक। तिर्य्य। तीक्ष्णरस। यवनालज। यवज। यवशूकज। यवाह्व। यवापत्य।

सज्जीखार—स्वर्जिकाक्षार। कपोत। स्वर्जिका। स्वर्जि। शूलघ्नि। सुखवर्चक। सौवर्चल। रुचक। सृज्जिकाक्षार। सर्जिका। क्षार। सज्जी। सुनर्च्चिक। सुघ्नी। योगवाही। स्वर्जका। सुवर्चक। सुघ्निका। सर्जि। सर्जिक्षार। सुखोर्जिक। सुवर्जिक। सुवर्चि। सुवर्चा।

सुहागा—टङ्क। लोहद्रावी। सुभग। धातुवल्लभ। पाचनक। मालती तीरज। लोहश्लेषण। रसशोधन। द्रावक।

---

* यह लाल रंग का कडुवा पदार्थ गोंद के प्रकार का होता है। प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है। इसके खाने से गर्भाशय तथा योनि दोष दूर हो जाते हैं।

रसाधिक । रसघ्न । वर्त्तुल । कनक क्षार । मलिन । टंकण । रङ्गद । स्वर्णपाचक । टङ्क । धातुसन्धिकर । सौभाग्य । श्वेतटंकण । टंकणक्षार ।

सेंधा नोंन—सैन्धव । सिन्धुद्भव । माणिमन्थ । नादेय । लवणोत्तम । सितशिव । सिन्धूज । सिन्धुपल । वशिर । सिन्दुदेशज । माणिवन्ध । सिन्धुमन्थज । सिन्धुलवण । सिन्धूभव । शिव । सिद्ध । शिवात्मज । पथ्य । शुद्ध । सेधा नमक ।

साँभर नोंन—शाकम्भरीय । वसुक । रौमलवण । रौमक । गड़ाख्य । गड़लवण । शुभ्र । पृथ्वीज । गड़देशज । गडोत्थ । महारम्भ । साम्भर । सम्बरोद्भव । सामर ।

समुद्री नोंन—सामुद्रिक । त्रिकूट । वशिर । लवणाब्धिज । वासर । कडक । सागरज । शिव । सामुद्रज । समुद्रनोंन । पाँगा ।

संचर नोंन (कटीला नोंन)—विड । विडलवण । धूर्त । कृतक । विडगंध । काललवण । द्राविडक । खण्ड । क्षार । आसुर । सुपाक्य । खण्डलवण । कृत्रिमक । द्राविडक । पाक्य । विट । विरिया साँचर नोंन । कटीला नोंन ।

काला नोंन—अक्ष । सौवर्चल । रुच्य । दुर्गन्ध । रुचक । शूलनाशन । कृष्णलवण । तिलक । हृद्यगन्ध । कोद्रविक । पाक्य । मेचक । चौहर कोड़ा । सोचर नोंन ।

काँचिया नोंन—त्रिकूट । पाक्याह्व । लवण । नील । काचसंभव । काचलवण । काचोद्भव । काचसौवर्चल । नीलक । पाकजका चेत्थ । हयगन्ध । काललवण । कुरुविन्द । काचमल । कृत्रिम । नीलकाचोद्भव ।

खारी नोंन—औषरक। सार्वगुण। सार्वसंसर्गलवण। ऊषरज। साम्भार। बहुलगुण। मिश्रक। ऊषरलवण। खारी। खारी नूँन।

नौसादर—नरसार। क्षारश्रेष्ठ। अमृतक्षार। सादर। चूलिकालवण। बज्रक्षार। विदारन। बजरखार।

शोरा—सूर्यक्षार। अर्कक्षार। ताक्ष्र्य। तीक्ष्णरस। सोरा। सुवर्चिका। सार्वसहा। औरिण। शिलाजतु। सूरखार। वाजी। सूर्याखार।



४. वनादि वर्ग

वन—अटवी। अरण्य। विपिन। कानन। कान्तार। जंगल। कुपथ। दुर्गमपथ। काटिका। कक्ष्यक। कुन्दिलवार्क्ष। वनी। गहन। घन। कच्छ। दुर्गम।

महावन—महारण्य। अरण्यानी। महाटवी। तृणाटवी।

उपवन—कृत्रिमवन। चित्रविपिन। आक्रीड़ा। उद्यान। बाग। बगीचा। बाटिका। निष्कुट। आराम। पुष्पोद्यान। पुष्पवाटिका। फुलवारी। कृतारण्य।

पौधा—क्षुप। ह्रस्वशाखा। शिफ। लघुवृक्ष। पेड़।

वृक्ष—विटप। पादप। अगम। द्रु। द्रुम। कुट। तरु। शाल। शाखी। महीरूह। अनोकह। पलाशी। सुखआल। पत्री। दली। छदी। फली। इकपद। वर्हि। मधु। अर्नुत। नग। भूरुह। अद्रि। अग। कुज। विनद। पटल। द्विप। बिरवा। पर्णी। अगछ। अंघ्रिप। दरख्त। पेड़।

लताबौंर—बल्ली। वल्लरी। वीरुध। व्रतति। लता। गुल्मिनी। उलप। प्रतान।

बीज—बीज। बीया। दाना। बीजा।

जड़—मूल। शिफा। अंघि। पाल। जटा।

अंकुर—अँकुआ। अँखुआ। नवोद्भिद। प्ररोह। गाभ। अँगुसा। डाभ। कल्ला। कनखा। कोपल। आँख। प्रवाल।

मंजरी—बाल। बाली। पुष्पिल।

कली—मुकुलित पुष्प। कलिका। जालक। कोरक। मुकुल। कुड्मल। अस्फुटित पुष्प।

फूल—पुष्प। पुहुप। सारंग। कुसुम। प्रसून। सुमन। सुम। समद। फलपिता। मञ्जरी। सुमनस्। सून। प्रसव। मणीचक।

फूल का गुच्छा—गुच्छ। गुच्छा। गुच्छक। स्तबक। गुलुच्छ।

पुष्प-रस—मकरन्द। मधु। पुष्पद्रव। पुष्पसार। पुष्पस्वेद। पुष्पज। पुष्पनिर्यासक। पुष्पाम्बुज।

पुष्प-रज—रेणु। रज। पराग। धूलि।

पत्र—पत्ता। पत्ती। पर्ण। दल। छद। छदन। पल्लव। किसलय। पात। विसल। वर्ह। पलास। विटपाभरण। पान। पतत्र।

शाखा—डाली। साखा। स्कन्ध। काण्ड।

टहनी—वृन्त। प्रशाखा।

काँटा—काँट। कंटक। पँखुरी।

छाल—वल्कल। बकला। छिलका। छल्ली। त्वक्। त्वचा। ओलक। चोच। वल्क।

बरोह—जटा । शिफा ।

गोंद—सार । मज्जा । लश । खपुर ।

फलयुक्त वृक्ष—सफल । फली । फलवान । फलिन । फलित वृक्ष ।

फलहीन वृक्ष—अफल । वन्ध्य । अवकेशी ।

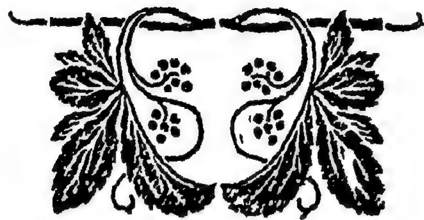
फूला हुआ वृक्ष—कुसुमित । पुष्पित । प्रफुल्ल । उत्फुल्ल । संफुल्ल । फुल्ल । व्याकोश । विकच । स्फुट ।

कोटर—निष्कुह । निष्कुट ।

काठ—दारु । काष्ठ । शंकु । स्थाणु ।

जलाने की लकड़ी—ईंधन । इध । इध्म ।

थाला—आलवाल । थाँवल । थाल ।



५. धान्य वर्ग

अन्न—धान्य। अनाज। नाज। दाना। गल्ला। अमृत। सस्य। लवेटिका। वीज्य। बीज। व्रीहि। वरेणुक। व्रीह्य। शाली। भोग्य। भोगार्ह। आद्य। जीवन धन। स्तम्बकारि। जीव साधन। स्तम्बकरि।

धान (चावल)*—(देखो 'अन्न')

रक्तशालि। कलम। पाण्डुक। शकुनाहृत। सुगन्धक। कर्दमक। दूषक। पुष्पाण्डक। पुण्डरीक। दीर्घशूक। साठी। काञ्चनक। तण्डुल। तन्दुल। अक्षत। चाँवल। चाउर।

[नोट—ये नाम साठी चाँवल के हैं। 'शालिग्राम निघण्टु' के अनुसार साठी चाँवल १८ प्रकार के हैं, उनके नाम ये हैं—रक्तशाली। महाशाली। कलमा। शष्टिका।

---

* धान की अधिक खेती बंगाल में होती है। वहाँ इसके तीन भेद हैं—आमन (अगहनी), आउस (भँदई) और बोरो (जेठी)। महीन चाँवलों के भेद—बासमती, लटेरा, रामभोग, रानीकाजर, तुलसीबास, मोतीचूर, समुद्रफेन, कनकजीरा, स्यामजीरा। साधारण धान—बगरी, दुद्धी, साठी, सरमा, रामजवाइन।

खंजरीटा। पसाही। जरिका। कपिञ्जला। सौन्धी। शूकला। बिलवासी। गरुड़ा। कचोरका। रुक्मवन्ती। कलमा (दूसरा) बिल्वजा। मागधी। पीता। प्रान्त भेद से चाँवलों के अगणित प्रकार हैं। कुल के नाम देने से एक अलग ही ग्रन्थ बन जायगा]।

जव (जौ)—यव। मेध्य। सितशूक। दिव्य। अक्षत। कंचुकि। धान्यराज। तीक्ष्णशूक। तुरगप्रिय। शक्तु। हयेष्ट। पवित्रधान्य। शितशूक। हय प्रिय। यवक। श्वेतशुंग। प्रवेट। शीतशूक।

गेहूँ—गोधूम। बहुदुग्ध। अरूप। म्लेच्छ भोजन। क्षीरी। निस्तुष। रसाल। सुमन। सुमना। अपूप। निस्तुषक्षीर। श्लेष्मल। गोहूँ।

चना—चणक। हरिमन्थ। वाजिमन्थ। जीवन। चण। हरिमन्थक। हरिमन्थज। सुगंध। कृष्णचंचुक। बालभोज्य। बाजिभक्ष्य। कंचुकी। बालभैषज्य। सकलप्रिय। छोला। बूट।

मटर—कलाय। केराव। मुण्डचणक। हरेणु। रेणुक। सतीलक। खण्डिक। त्रिपुट। अतिवर्त्तुल। शमन। नीलक। कंटी। सतील। सतीन। हरेणुक। सतीनक।

उड़द (उर्द)—उरदी। माष। कुरु विन्द। धान्यवीर। वृषांकुर। मांसल। बलाढ्य। पित्र्य। पितृभोजन। बीजरत्न। बली।

लोबिया—राजमाष। महामाष। चपल। चवल। वर्वट। मरुत्कर। द्विजसत्र। नीलमाष। नृपमाष। नृपोचित। सितमाष।

दीर्घवीज। निष्पावी। सुकुमार। दीर्घशिम्बी। क्षुधाभिजनक। लोबिया। बोड़ा। चौरा।

मसूर—मसूरिका। रागदालि। मङ्गल्य। पृथुवीजक। सूर। कल्याणवीज। गुरुवीज। मसूरक। मंगल्यक। मसुर। व्रीहिकाञ्चन। गभोलिक। ताम्बूलराग। हालासक। मसुरा। मसूरी। मसूरि। मंगल्या। मांगल्या।

मूँग—मुद्ग। सूपश्रेष्ठ। वर्णार्ह। रसोत्तम। भुक्तिप्रद। हयानन्द। सुफल। बाजिभोजन।

रहर—अरहर। अड़हर। आढ़की। तुवरी। वर्या। मृत्ताल। काक्षी। मृत्तालक। करवीरभुजा। वृत्तवीजा। सुराष्ट्रज। पीतपुष्पा। मृत्स्ना। तुवरिका। शणपुष्पिका।

मोठ (मोथी)—मकुष्टक। मकुष्ठ। वनमुद्ग। अमृत। कृमीलक। अरण्यमुद्ग। बल्लीमुद्ग। मपष्ठ। राजमुद्ग। वरक। मुकुष्ठक। निगूढ़क। कुलीनक। खण्डी। मुद्गष्टक। मुद्गष्ट। मुकुष्ठ। मयूष्ठ। मयष्टक। मयष्ट। मद्यक। मयुष्टक। मयुष्ट। वनमूँगिया।

सावाँ—श्यामाक। श्यामक। श्याम। त्रिबीज। समा। अविप्रिय। सुकुमार। राजधान्य। तृण वीजोत्तम।

कोदव (कोदो)—कोद्रव। कोरदूष। कारदूषक। कुद्रव। कोरदुष्क। कोद्दार। कोद्दाल। कुद्दाल। मदनाग्रक। कोर्द्रव।

मक्का—मकाई। मकाय। महाकाय। कटिज। कांडज। शिखालु। संपुटांतस्थ। भुट्टा। जोन्हरी।

बाजरा—बजरी । बर्जरी । बजड़ी । नाली । नालिका । नील सत्य । साजक । अग्रधान्य । वर्जरीका । नीलकणा ।

ज्वार—ललिता । क्रोष्टुपुच्छा । श्रो खंडी । सुगंधिका । कृष्णा । भाद्रपदी । मण्डा । जूर्णका । रक्तिका । यावनाल । श्वेता । कुब्जिका । जुआर । (छोटी जोन्हरी के नाम से भी प्रसिद्ध है)

केसारी—खेसारी । कसूर । कस्सा । त्रिपुट । संडिक ।

कक्कुनी—कंगु । प्रियंगू । प्रियंगु । कंगुका । पीत तंडुल । कंगू । कंगुनीका । कंगूनी । चीनक । कॉंगनी । कँगनी । काकुन ।

[तृणान्न]

तीनी (तिन्नी)—नीवार । तिली । अरण्य धान्य । तीली । मुनिधान्य । तृणोद्भव । तृणधान्य । अरण्यशाली । प्रसाधिका । देवधान ।

कूटू—फाफर । कुल्टू । काटू । तुम्बा । कालातुम्बा । कसपत । कोटू ।

साबूदाना—सागू । सागूदाना ।

[अंग्रेजी शब्द "सैगो" से बना है । यह ताड़ के समान वृक्ष होता है ।]



६. तिलादि वर्ग

तिल—होमधान्य । पवित्र । पितृतर्पण । पापघ्न । जटिल । पूतधान्य । वनोद्भव । स्नेहफल । पूरफल । तैलफल ।

सरसों—सर्षप । कटुकस्नेह । भूतघ्न । रक्षिताफल । उग्रगंध । ग्रहघ्न । तन्तुभ । कदम्बक । सरिषप । कदम्बद । बिम्बट । कदम्ब । तन्तुक । कटुस्नेह । राजक्षवक ।

राई—राजक्षवक । कृष्ण । तीक्ष्णफला । राजिका । राज्ञी । कृष्ण सर्षपा । राजसर्षप । कृष्णिका । सूरी । मुष्ठक । व्यष्टक । कटुक । क्षव । क्षुताभिजनन । क्षुधाभिजनन । लाई । राजी । तीक्ष्णगन्धा । क्षुज्जनिका । आसुरी । कृमिक । कटु । असुरी । काकोदुम्बरिका । रक्तिक । रक्तसर्षप । अतितीक्ष्णा । मधुरिक । क्षवक । क्षुतक । ज्वलन्ती । ज्वलत्प्रभा ।

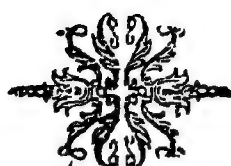
अलसी (तीसी)—अतिसी । अतीसी । पिच्छिला । देवी । उमा । मदगन्धा । मदोत्कटा । क्षुमा । हैमवती । सुनीला । नीलपुष्पिका । चणका । क्षौमी । रुद्रपत्नी । सुवर्चला । नीलपुष्पी । पार्वती । मसृणा । तैलोत्तमा । तीसी । मसीना ।

बरें—बरटा। बरटी। कुसुमबीज। कुसुम फल। बरट्टिका।

रेंड़ी—अरण्ड। एरण्ड। व्याघ्रपुच्छ। चित्रक। इष्ट। त्रिपुटीफल। पंचाङ्गुल। शूलशत्रु। वातारि। दीर्घदन्तक। मंड। रुवूक। गंधर्वहस्तक। उरुवुक। चंचुक। वर्द्धमान। एरण्डक। अमंगल। तुच्छद्रु। व्रणहा। त्रिपुटी। व्याघ्रदल। वुक। अमंड। आमंड। व्यडम्बन। कान्त। तरुण। शुक्र। दीर्घपत्रक। चित्रबीज। स्नेहप्रद। इष्ट।

तैल—स्नेह। सनेह। अभ्यञ्जन। म्रक्षण। तेल।

खली—खरी। पिंडी। तिलपिण्डो। पिण्डा। पिण्याक। पीना।



७. शाक-भाजी वर्ग

बथुआ—बस्तूक। वास्तुक। क्षारपत्र। शाकराट्। पांशुपत्र। शाकश्रेष्ठ। शाकवीर। कंकेल। वास्तु। हिलमोचिका। बसुक। राजशाक। घनाघन।

[नोट—लाल पत्ती के बथुआ के पर्य्याय—चिल्ली। चिल्लिका। तुनी। अम्रलोहिता। मृदुपत्री। क्षारदला। क्षारपत्रा। महद्दला।

नोनियाँ—लोणा। लोणी। बृहल्लोणी। घोलिका। लोनी। कुलफा। पथरी। अश्मरी।

[नोट—ये ही पर्य्याय 'कुलफा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते है।]

मरसा—मारिष। वाष्पक। मार्ष।

चौराई—कंचट। पानीयतण्डुलीय। चौलाई। जलज।

सोया—शतपुष्पादल। शतपुष्पिका। सितच्छत्रा। अतिच्छत्रा। मधुरा। मधुरिका। अवाक पुष्पी। कारवी। शताक्षी। शताह्वा। छत्रा। मिशी। मिसी। माधवी। घोषा। तालपर्णी। ताल्लपर्णी। शालेया। शीतशिवा। शालीना। वनजा। पुष्पिका। सुपुष्पी। सुरसा। बल्या।

पालक—पालंक। पालंक्या। मधुरा। क्षुरपत्रिका। सुपत्रा। स्निग्धपत्रा। ग्रामिणी। ग्राम्यवल्लभा। क्षुरिका। वास्तुकाकारा। पालकी।

पोय (पोई)—उपोदकी। कलम्बी। पिच्छिला। पिच्छिलच्छदा। मोहिनी। मदशाक। विशाला। वलिपोदकी। उपोदिका। उपोती। वृश्चिक प्रिया। अयोदिका। पूतिका।

मेथी—मेथिका। मेथिनी। दीपनी। बहुपत्रिका। वेधनी। गन्धबीजा। ज्योति। गन्धफला। वल्लरी। चन्द्रिका। मन्था। मिश्रपुष्पा। कैरवी। कुंचिका। बहुपर्णी। पीतबीजा। मुनीन्द्रिका।

[नोट—ये ही शब्द मेथी के बीज के भी पर्य्याय हैं]

पेठा—कूष्माण्ड। पुष्पफल। पीतपुष्प। वृहत्फल। तिमिष। ग्राम्यकर्कटी। कुष्माण्डक। कर्कारू। शिखिवर्द्धक। कुम्हड़ा। कोंहड़ा। कुष्माण्डी। सुफला। कुंचफला। नागपुष्पफला।

[नोट—ये सफेद कुम्हड़े के नाम हैं]

कुम्हड़ा—कूष्माण्ड। पीत कूष्माण्ड। पीत पुष्पा। ग्राम्या। पीतफला। गुणयोगफला। लाल पेठा। भिलया कद्दू। काशीफल। सफुरिया कुमार।

लौकी (कद्दू)—अलाबू। तुम्बी। तुम्ब। तुम्बक। तुम्बा। पिण्डफला। महाफला। आलाबू। एलाबू। लाबु। लौआ। लाबुका। कदुआ।

[नोट—यह दो प्रकार का होता है, एक लम्बा और दूसरा गोल]

तितलौकी—कटुतुम्बी। पिण्डफला। राजपुत्री। नृपात्मजा। फलिनी। तिक्ततुम्बी। तिक्तका। कटुतिक्तका। इक्ष्वाकु। कटुकालावु। कटुफला। दंतफला। तुम्बिका। तुम्बी। महाफला। क्षत्रियवरा। कटु तुम्बिका। कड़ुवी तोंबी।

ककड़ी—कर्कटी। लोमशी। व्यालपत्रा। वृहत्फला। व्यालपत्री। लोमशा। तोयफला। स्थूला। हस्तिदन्त फला। छर्दापनिका। पीनसा। मूत्रला। मूत्रफला। त्रपुषा। त्रपुषी। हस्तपर्णी। लोमश काण्डा। बहुकन्दा। चिर्भटी। कर्कटाक्ष। शान्तनु। बालुंगी। इर्वारु। उर्वारु।

खीरा—त्रपुष। कंटकीफल। सुधावास। सुशीतल। पीतपुष्पा। काण्डालु। कंटालु। त्रपुकर्कटी। बहुफला। कंटकिलता। कोषफला। तुंदिलफला। सुधावासा। क्षीरा। बालमखीरा।

फूट-ककड़ी—मृगाक्षी। श्वेतपुष्पा। मृगेर्वारु। चित्रा। मृगादनी। चित्रवल्ली। बहुफला। कपिलाक्षी। मृगेक्षणा। पथ्या। विचित्रा। मृगचिर्भिटा। मरुजा। चिर्भिट। देवी। कुंभसी। कटकला। लघुचिर्भिटा। भकुर। कचरिया। सेंध। फूट ककड़ी। गोरख ककड़ी।

खरबूजा—दशांगुल। खर्बूज। फलराज। अमृताह्व। षडभुजा। मधुफला। षड्रेखा। वृत्तकर्कटी। तिक्ता। तिक्तफला। मधुपाका। वृत्तेर्वारु। षण्मुखा।

तरबूज—कालिंग। कृष्णबीज। कालिंद। सुवर्त्तुल। मांसफल। चित्रफल। चित्रवल्लिका। चित्र। मधुरफल। वृत्तफल।

घृणाफल। मांसल। अल्प प्रमाणक। सुखाश। राजतिनिष। लतापनस। नाटाम्र। मेट। शीर्णवृन्त। बृहद्गोल। सेट। गोडुम्ब। रक्तबीज। चेलान। मूलत्र।

तोरई—कोशातकी। स्वादुफला। सुपुष्पा। कर्कोटको। पीतपुष्पा। धाराफला। दीर्घफला। सुकोषा। धामार्गव। जालिनी। कृतवेधना। राजकोशातकी। राजिमत्फला।

नेनुआ—महाकोशातकी। हस्तिघोषा। महाफला। घोषक। धामार्गव। ऐभी। महत्पुष्पा। सपीतिका। हस्तिपर्ण। घीयातोरई॥

चिचिंड़ा—चिचिंड। श्वेतराजी। सुदीर्घ। गृहकूलक। चिचुंड। वेश्यकूल। वृहत्फला। अहिफला। दीर्घफला। च्चेड़ा। चीनकर्कटिका। चिचड़ा।

परवल—पटोल। राजपटोल। स्वादुपटोल। स्वादु। स्वादिष्ठा। जनवल्लभा। राजपूर्वा। सुशाकी। स्वादुपत्रफल। पर्वरा। परोरा। परवर।

कुन्दुरू—बिम्बी। बिम्बा। बिम्बाफल। बिम्बक। बिम्बजा। रुचिरफला। तुंडिकेरी। तुंडी। झंडिकेशी। कर्मकरी। पीलुपर्णी। बिम्बिका। कन्दूरी। ओष्ठी। रक्तफला।

खेखसा—कर्कोटकी। पीतपुष्पी। महाजाली। मनोज्ञा। मनस्विनी। अवन्ध्या। बोधनाजाली। ककोड़ा।

करेला—कारवेल्ली। वारिवल्ली। वृहद्वल्ली। चिरिपत्र। करका। कठिल्लका। सूक्ष्मवल्ली। तोपवल्ली। कण्डूर। कांडकटुक। पटु। सुकाण्ड। उग्रकाण्ड। सुषवी। करेली।

ढेंडसा—डिंडिश। रोमशफल। मुनिनिर्मित। ढेडश।

भिंडी—भेंडा। भिडातिका। भिंड। भिंडक। क्षेत्रसंभव। चतुष्पद। चतुपुण्ड्र। सुशाक। पिच्छिल। भिंडीतक। अस्त्रपत्रक। करपर्ण। वृत्तबीज। भिडा।

बैंगन (भाँटा)—वार्त्ताकी। कण्टवृन्ताकी। कंटालु। कंटपत्रिका। मांसलफला। निद्रालु। वृन्ताकी। महोटिका। चित्रफला। कंटकिनी। महती। कटफला। मिश्रवर्णफला। नीलफला। रक्तफला। नृपप्रियफला। सिंही। भंटाकी। वार्त्ता। दुष्प्रधर्षिणी। वातिकुण। शाकविल्व। राजकुष्माण्ड। वङ्गण। अङ्गण। बेर। नीलवृषा। भांटिका। वृतान्तक। नीलकंटका। भटा। बेंगन। भंटा।

ग्वालिन—ग्वार की फली। गोराणी। दृढ़बीजा। बाकुची। निशान्ध्यघ्नी। सुशाका। वक्रशिम्बो। गुआलिनी। ग्वारिणी। गोरक्षफलिनी।

सेम—अंगुलिफला। नखनिष्पाविका। निष्पावी। ग्राम्या। वृत्तनिष्पाविका। नखपुंजफला। अशना। कपिकच्छुफला।

सहिंजन—शोभांजन। शिग्रु। तीक्ष्णान्धक। सुपत्रक। मधुगुंजन। मोचक। बहुमूल। शुभांजन। कालीबक। उग्र। कोमल पत्रक। दंशमूल। उपदंश। क्षमादंश। कटुकन्द। आक्षीव। गंध। गंधक। सैंजना।

कचनार—कांचनार। कोविदार। कुदाल। कुदार। कुण्डली। कुली। आस्फोत। उद्दालक। चमरी। स्वल्पकेसर। कांचनाल। कर्बूदार। पाकारि। आश्मन्तक।



८. मूल-कन्द वर्ग

लहसुन—रसोन। अरिष्ट। म्लेच्छकन्द। महौषध। शुक्रकन्द। महाकन्द। वातारि। दीर्घपत्रक। रसुन। गृंजन। रसोनक। कटुकन्द। राहूच्छिष्ट। राहूत्सृष्ट। भूतघ्न। उग्रगंध। यवनेष्ट। लहशुन। लहसन। काँदा।

प्याज—राजपलाण्डु। यवनेष्ट। नृपाह्वय। राजप्रिय। महाकन्द। दीघपत्र। रोचक। नृपेष्ट। नृपकन्द। रक्तकन्द। राजेष्ट। पलाण्डु। पियाज।

मूली—मूलक। हरिपर्ण। भूमिकाक्षार। नीलकंठ। महाकन्द। रुचिष्य। हस्तिदन्तक। राजालुक। करुकन्दक। हस्तिदन्त। मूलाह्व। दीर्घमूलक। दीर्घपत्रक। मृत्क्षार। कन्दमूल। सित। शंखमूल। रुचिर। दीर्घकन्दक। कुंजर। क्षारमूल। शिम्बीफल।

बड़ी मूली—चाणक्यमूलक। वानेय। विष्णुगुप्तक। स्थूलमूल। महाकन्द। कौटिल्य। मरुसम्भव। शालामर्कट मिश्र। मूला। मूलक।

गाजर—गर्जर। गृंजन। नारंगवर्ण। पिण्डमूल। पीतकन्द। सुमूलक। स्वादुमूल। सुपीत। नारंग। पीतमूलक। पिण्डीक। गजीड।

सलजम (गोलगाजर)—शिखीमूल। यवनेष्ट। वर्तुल। ग्रन्थिमूल। शिखाकन्द। कंद। डिंडीरमोदक।

सूरन—सूरण । कन्द । जिमीकन्द । ओल्ल । कन्दल । अर्शोघ्न । ओल । कंठाल । कंडुल । कंदी । सुकन्दी । स्थूलकन्दक । दुर्नामारि । सुवृत्त । वातारि । अर्शारि । कन्दशूरण । तीव्रकण्ठ । कदाई । कन्दवर्द्धन । बहुकन्द । रुच्यकंद । सूरणकन्द । भूकन्द ।

[नोट—सूरन सभी कन्दों मे श्रेष्ठ माना जाता है, बवासीर रोग का नाशक है ।]

लाल कन्द—रक्तकन्द । रक्तपिण्डालु । रक्तालु । रक्तपिण्डक । लौहित । रक्तकन्द । लोहितालु ।

शकरकन्द (सफेद)—पिण्डीतक । पिण्डकन्द । रोमशकन्दक । कन्दग्रन्थि । पिण्डालु । पिच्छल । स्वादुकन्दक । काँदू । शकरकंदी । रताल्लू । कंदा ।

अरबी (घुइयाँ)—आलुकी । आलुक । गजकर्ण । हस्तिकर्ण । महापत्रालुक । तीक्ष्णकन्द । दीर्घनाल । घुय्याँ । आल्लू । गजकर्णालु ।

[ये ही शब्द 'बंडा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

आलू—शुभ्रालु । महिषकन्द । लुलायकन्द । शुक्लकन्द । सर्पाख्य । बनवासी । विषकन्द । नीलकन्द ।

सुथनी—मध्वालुक । मध्वाल्लू । रोमालुकी ।

कसेरू—कसेरू । गुंडकन्द । क्षुद्रमुस्ता । कसेरुका । सूकरेष्ट । सुगन्धि । सुकन्द । कसेरुक । राजकसेरुक ।



१. फल वर्ग

आम—आम्र । रसाल । सहकार । अतिसौरभ । कामाङ्ग । मधुदूत । माकन्द । पिकवल्लभ । चूत । चूतक । अम्र । फलश्रेष्ठ । अमृतफल । अमृत । मृषालक । षड्पदातिथि । वसन्तद्रु । पिकप्रिय । स्त्रीप्रिय । अलिप्रिय । गन्धबन्धु । शरेष्ट । पिकबन्धु । मदिरासख । केशवायुध । कोषी । कामशर । कामवल्लभ । मदाढ्य । मन्मथावास । सुमदन । प्रियम्बु । शुकप्रिय । मोदाख्य । कीरेष्ट । भृंगाभीष्ट । नूत ।

कलमी आम—राजाम्र । राजफल । स्मराम्र । मधुर । कोकिलोत्सव । टंक । कोकिलानन्द । कामेष्ट । नृपवल्लभ । आम्रात । कामाह्व । राजपुत्रक ।

आमड़ा—आम्रातक । पीतनक । कपिचूत । अम्लवाटक । वर्षपाकी । कपिचूड । तनुक्षीरी । कपिप्रिय । पीतन । कपीतन । मधुराम्लक । अम्रवाटिक । भृंगीफल । रसाढ्य । तनुक्षीर । अम्बरातक । अम्बरीष । आम्रात । अध्वगभोग्य । मर्कटाम्र । तुङ्गी । अमरा । आमला ।

अनार—दाड़िम । दाड़िमीसार । कुट्टिम । फलषाडव । करक । रक्तबीज । सुफल । दन्तबीजक । मधुबीज । कुचफल ।

शुकवल्लभ। मणिबीज। वल्कफल। वृत्तफल। पिण्डपुष्प। दाडिम्ब। पर्वरुट्। स्वाद्वम्ल। पिण्डीर। फलाशाडव। मुखवल्लभ। रक्तपुष्प। डालिम। शुकादन। फलसाडव। सुनील। नीलपत्र। नीलपत्रक। लोहितपुष्पक।

केला—कदली। सुफला। रंभाफल। मोचा। रंभा। वारणवल्लभा। सुकुमारा। चर्मण्वती। तत्पत्री। नरौषधि। वारणवुसा। अंशुमत्फला। काष्ठीला। कदल। वारबुषा। वारणबुषा। सकृत्फला। गुच्छफला। हस्तिविषाणी। गुच्छदन्तिका। निःसारा। राजेष्टा। बालकप्रिया। ऊरुस्तम्भा। भानुफला। वनलक्ष्मी। कदलक। मोचक। रोचक। लोचक। वारवृषा। आयतच्छदा। तन्तुविग्रहा। अम्बुसारा।

नारियल—नारिकेल। दृढ़फल। लाङ्गली। कूर्चशीर्षक। तुङ्ग। स्कन्धफल। तृणराज। सदाफल। नारिकेर। नाड़िकेल। रसफल। सुतुङ्ग। कूर्चशेषर। दृढ़नीर। नीलतरु। मङ्गल्य। उच्चतरु। स्कन्धतरु। दाक्षिणात्य। दुरारुह। शिराफल। त्र्यम्बकफल। करकाम्भा। पयोधर। मुत्कुण। कौशिकफल। फलमुण्ड। जटाफल। मुण्डफल। विश्वमित्रप्रिय। नाड़ीकेल। नारकेर। सुभङ्ग। फलकेशर। वरफल। महाफल। सदाफल। तोयगर्भ। त्र्यक्षफल। खोपरा।

खजूर (पिंडखजूर)—पिंड खर्जूरिका। पिंडखर्जूरी। राजजम्बू। पिण्डी। फलमुद्गरिका। दीप्या। मधुरस्रवा। सपिण्डा। फलपुष्पा। स्वादुपिंडा। हयभक्षा। दुष्प्रधर्षा। कषायी। हरिप्रिया। खर्जू। खरस्कन्धा। निःश्रेणी।

ताड़ी-फल—मदाढ्य । दीर्घपादप । ध्वजद्रुम । आसवद्रुम । गुच्छपत्र । पत्री । तालफल । ताड़ी । पत्रला । फलपाकान्त । तृणद्रुम । तृणराज । ताल । लेख्यपत्र । भूमिपिशाच । दीर्घतरु । तन्तुगर्भ । मधुरस । चिरायु । शतपर्वा । द्रुमेश्वर । तरुराज ।

सेब—महाबदर । मुष्टिप्रमाण । बदर । सिचितिकाफल । सेवित । सेवि ।

नाशपाती—अमृतफल । रुचिफल । महाबदर । नास्पाती ।

अमरूद—पेरुक । मांसल । पृथक् त्वच । मृदुफल । पीतफल । तुवर । मधुराम्लक । अमृतफल । सफरी-सफेद । वीह । सफरी-लाल । अमरूत ।

नारंगी—नारंग । नागरंग । त्वक्सुगन्ध । मुखप्रिय । नार्यंग । नागर । ऐरावत । नागरूक । चक्राधिवासी । किर्मिर । सुरंग । किर्मीर त्वक् । वक्रवास । योगरंग । वरिष्ठ । गन्धपत्र ।

नीबू (कागज़ी)—निम्बुक । अम्लजम्बीर । वह्निबीज । वह्नीदीप्य । अम्लसार । दन्ताघात । शोधन । जन्तुमारी । निम्बूक । रोचन । मातुलुंग ।

नीबू (बिजौरा)—बीजपूर । मातुलुंग । फलपूरक । अम्लकेशर । बीजपूर्ण । सुकेशर । बीजक । सुफूर । बीजफलक । जन्तुघ्न । दन्तुरच्छद । पूरक । रोचनफल । रुचक ।

नीबू (जम्भीरी वा कमला)—जम्बीर । दन्तशट । जम्भ । जम्भीर । जम्भल । रोचनक । मुखशोधी । जाड्यारि । जन्तुजित । जम्भक । जम्भर । दन्तहर्षण । दन्तकर्षण । गम्भीर ।

शिवा। काननारि। तुंगा। कचरिपुफला। केशमथनी। ईशानी। तपनतनया। इष्टा। शुभकरी। हविर्गन्धा। मेध्या। दुरितदमनी। समुद्रा। वह्निगर्भा। समीर। सुरभि। पापशमनी। भद्रा। शङ्करी। सुपत्रा। सुखदा। शंकरा। शंकुफलिका। सुभद्रा। छोंकर। छीकर। सफेदकीकर।

रुद्राक्ष—शिवाक्ष। शर्वाक्ष। भूतनाशन। पावन। शिवप्रिय। तृणमेरु। अमर। पुष्पचामर।

अशोक—शोकनाशन। विचित्र। कर्णपूरक। कंकेली। हेमपुष्पक। पिण्डपुष्पक। अंगनाप्रिय। विशोक। वंजुलद्रुम। मधुपुष्प। अपशोक। केलिक। रक्तपल्लव। चित्र। कर्णपूर। सुभग। दोहली। ताम्रपल्लव। रोगितरु। वामांकपातन। नट। रामा। पल्लद्रु। कान्ताचरणदोहद। चक्रगुच्छ। शोकहर्त्ता। स्मराधिवास। दोषहारी। प्रपल्लव। वामांघ्रिघातक। अशोग।

नीम—निम्ब। निम्बन। नियमन। नेता। पिचुमंद। अरिष्ट। सर्वतोभद्र। सुभद्र। पारिभद्रक। शुकप्रिय। शीर्षपर्णी। वरत्वच। छर्दन। हिंगु। निर्यास। पीतसार। रविप्रिय। मालक। पिचुमंद। पक्कक्रत। पूकमालक। कीटक। विवन्ध। निम्बक। कैटर्य। छर्दिघ्न। कीरेष्ट। विशीर्णपर्ण। पीतसारक। शीत। राजभद्रक।

[नोट—कई वृक्षों के नाम जो फलवाले है, नहीं दिये गये हैं। उनके जो नाम फलवर्ग में दिये गये हैं वे उनके वृक्ष के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं।]



८

१२. वनौषधि वर्ग

हैंटी *—विकंकत। ग्रंथिल। स्वादकंटक। सुवावृक्ष। व्याघ्रपाद।

सोनापाढ़ा—टुंटुक। दीर्घवृन्त। श्योनाक। शुकनास। कटम्भर। मयूरजंघ। अरलुक। प्रियजीवी। कुटन्नंट। नट। मण्डूक पर्ण। पत्रोर्ण। कट्वाङ्ग। ऋक्ष। दीर्घवन्त। शोनक। अरल। स्योनाक। विषतुत। अध्वान्तशात्रव। पूतिवृक्ष। भण्डूक। भण्टुक। भूतपुष्प। शोण। अरटु। दीर्घवृन्तक। ध्वान्तशात्रव। वटु। स्वर्णवल्कल। पृथुशिम्ब। शल्लक। शोषण। प्रियजीव। कुर्कट। कन्दर्प। पादवृक्ष। पारिपादप। कुनट। विरोचन। भ्रमरेष्ट। जंघनेत्र। निःसार।

भटकटैया—कंटकारी। कुलीक्षुद्रा। कासघ्नी। स्पृही। कंटकारिका। धावनिका। व्याघ्री। दुःस्पर्शा। दुष्प्रधर्पिणी। कंटश्रेणी। निदिग्धिका। वृहती। प्रचोदनी। राष्ट्रिका। अनाक्रान्ता।

---

* इसका पेड़ ब्रज में वहुत होता है। आगरा व मथुरा में इसके फल के अँचार वनाते हैं। यह स्वाद में कुछ कपैला और कड़ुआ होता है।

भण्टाकी। सिंही। कुली। धावनी। चित्रफला। लघुकटाई। कटेरी। रेंगनी।

गोखुरू (बड़ा)—गोक्षुर। पलङ्कषा। इक्षुगंधा। श्वदंष्ट्र। स्वादुकण्टक। गोकण्टक। गोक्षुरक। वनश्रृंगाट। त्रिकंट। स्थलश्रृंगाट। त्रिपुट। कंटकफल। क्षुर। गोखुरि। त्रिक। त्रिकट। इक्षुर। भक्ष्यकंट। इक्षुगंधिका। क्षुरांग। भद्रकंट। व्यालदंष्ट्र।

गोखुरू (छोटा)—क्षुद्रगोक्षुर। त्रिकंट। कंटी। षडंग। बहुकंटकक्षुर। वनश्रृंगाटक। चणद्रुम। स्थल श्रृंगाटक। स्वादुकंट। इक्षुगंध।

जीवन्ती—जीवनी। जीवा। जीवदा। सुखंकरी। रक्तांगी। प्राणदा। भद्रा। मंगल्या। मृगराटिका। जीवनीया। स्रवा। मधुस्रवा। मंगल्यनामधेया। पयस्विनी। जीव्या। जीवदात्री। शाकश्रेष्ठा। जीवभद्रा। क्षुद्रजीवा। यशस्या। श्रृंगाटी। जीवपृष्ठा। कांजिका। शशशिम्बिका। सुपिङ्गला। पुत्रभद्रा। मधुश्वासा। जीववृषा। जीवपत्री। जीवपुष्पो। जीववर्द्धिनी। यशस्करी। डोड़ी।

मदार (आक)—क्षीरदल। शुकफल। तूलफल। अर्क। अकौआ। सदासुम। प्रताप। क्षीरकाण्डक। विक्षीर। भास्कर। हरिदश्व। विवस्वान। अहर्मणि। अहर्बान्धव। अर्यमा। अहर्पति। उष्णरश्मि। भानु। विकर्त्तन। गणरूप। मंदार। प्रभाकर। विभाकर। दिवाकर। सूनु। आस्फोत। वसुक। हिमराति। पुच्छी। क्षीरी। खर्जूघ्न। शीतपुष्पक। जम्भल। क्षीरपर्णी। विकोरण। सदापुष्प। सूर्याह्व। क्षीराङ्ग।

सेहुँड़—थूहर। स्नुही। समन्तदुग्धा। नागद्रु। महावृक्ष। वहुदुग्धिका। सुधा। वज्रा। शीहुण्डा। दण्डवृक्षक। सिहुण्ड। स्नुपा। स्नुहा। वज्र। वज्रद्रु। वज्रकण्टक। गुड़। गुड़ा। गुड़ी। गुला। वहुशाल। कृष्णसार। निस्त्रिंशपत्रिका। नेत्रारि। शाखाकण्ठ। सिहतुण्ड। काण्डशाख। काण्डरोहक।

करियारी—कलिकारी। लाङ्गलिकी। दीप्ता। गर्भघातिनी। अग्निजिह्वा। वह्निशिखा। वह्निवक्रा। लांगुली। हलिनी। विशल्या। गर्भपातिनी। अग्निमुखी। नक्ता। हली। इन्द्रपुष्पिका। विद्युज्ज्वाला। व्रणहृत्। पुष्पसौरभा। स्वर्णपुष्पा। इन्दुपुष्पिका। शक्रपुष्पी। अनंता। गर्भनुत्। कलियारी। कलिहारी।

दूब—दूर्वा। शष्प। शाद्वल। शतपर्वा। शीतकुम्भी। शीतला। वामिनी। शाम्भवी। श्यामा। शीता। शतपर्विका। धूर्त्ता। अमृता। शतग्रन्थि। अनुवल्लिका। शिवा। शिवेष्टा। मंगल्या। जया। भूतहन्त्री। शतमूला। महौषधी। विजया। गौरी। शान्ता। रुहा। अनन्ता। भार्गवी। सहस्रवीर्या। शतवल्ली। गुणा। नन्दा। महावरा। हरसालिका। तिक्तपर्वा। दुर्मरा। हरिता। हरितालिका। हरित्ताली। कच्छरुहा। अमरी। अमरा। काण्डा। श्यामकाण्डा। गण्डदूर्वा। सूचिपत्रा। शकुलाक्षी। चित्रा। विद्या। शुभा। सुरवल्लभा। स्वच्छा। प्रचण्डा। कच्छान्तरुहा।

तुलसी—वैष्णवी। वृन्दा। सुगन्धा। गन्धहारिणी। अमृता। पत्रपुष्पा। पवित्रा। सुरवल्लरी। सुभगा। तीव्रा। पावनी। सुरेज्या। विष्णुवल्लभा। सुरसा। कायस्था। सुरदुन्दुभी। सुरभि। बहुपत्री। मञ्जरी। हरिप्रिया। विष्णुकान्ता। अपेतराक्षसी। श्यामा। गौरी।

त्रिदशमंजरी । भूतघ्नी । भूतपत्री । प्रेतराक्षसी । पर्णास । कठिंजर । कुठेरक । पुण्या । माधवी । सुरवल्ली । सुवहा । ग्राम्या । सुलभा । विष्णुपत्नी । मालाश्रेष्ठा । लक्ष्मी । श्री । कृष्णवल्लभा ।

श्यामा तुलसी—कृष्णा । कृष्णतुलसी । कृष्णपर्णी । करालक ।

कनेर *—करवीर । श्वेतपुष्प । शतकुम्भ । अश्वमारक । प्रतिहास । शतप्रास । चण्डात । अश्वघ्न । हयघ्न । शीतकुम्भ । तुरङ्गारि । रंगारि । शातकुंभ । प्रचण्ड । वीर । शतकुन्द । कुन्द । अश्वरोधक । शंकुद्र । श्वेतपुष्पक । नखराह्व । स्थल कुमुद । दिव्यपुष्प । गौरीपुष्प । सिद्धपुष्प ।

धतूरा—धत्तूर । धस्तूर । मदन । उन्मत्त । कितव । कनकाह्वय । देविका । महामोही । शिवप्रिय । खरदूषण । धूर्त्त । मातुल । पुरीमोह । धूर्त्तकृत । घण्टिक । शठ । मातुलक । श्याम । शिवशेखर । खर्जूघ्न । कहलापुष्प । खल । कण्टफल । मोहन । कलम । मत्त । शैव । तूरी । धुस्तुर । देवता । मदनक । कंटफल । हरवल्लभ । कनक । सविष । मोहन । मदकर । घंटापुष्प ।

[नोट—जितने नाम सुवर्ण के हैं वे सब धतूरे के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

अरूसा—वासक । वासिका । वासा । सिंहिका ।

---

* पुष्पभेद से कनेर पाँच प्रकार की होती है । सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली । कनेर एक प्रकार से उपविष की श्रेणी में है । इसको खाने से घोड़े मर जाते हैं ।

रामरूपक । मातृसिंही । वैद्यमाता । वृष । कसनोत्पाटन । अटरुष । सिंही । सिंहास्य । वाजिदन्तक । आमलक । वाशा । वाशिका । वाजी । वैद्यसिंही । सिंहपर्णी । रसादनी । सिंहमुखी । कण्ठीरवी । सितकर्णी । वाजिदन्ती । नासा । पंचमुखी । सिंहपत्री । मृगेन्द्राणी । आटरूष । सिंहानन । अडूसा । विसोंटा ।

पित्तपापड़ा—पर्पट । वरत्तिक्त । पर्पटक । पांशुपर्य्याय । कवचनामक । त्रियष्टि । तिक्त । चरक । वरक । अरक । रेणु । तृष्णारि । शीत । शीतप्रिय । पांशु । कलपाङ्ग । वर्मकण्टक । कृष्णाशाख । प्रगन्ध । सुतिक्त । रक्तपुष्पक । पित्तारि । कटुपत्र । नक्र । शीतवल्लभ । दवनपापड़ा ।

करञ्ज—नक्तमाल । पूतिक । पूतिपत्र । पूतिकरंज । कैडर्य । कलिमार । पूतिपर्ण । बद्धफल । रोचन । करज । करंजक । उदकीर्य । चिरविल्व । प्रकीर्य । षड्ग्रन्थ । वृत्तपर्ण । गुच्छफल । स्निग्धपत्र । तपस्वी । विषारी । घृतपर्णक । षड्ग्रंथा । हस्तिवारुणी । अंगारवल्ली । शार्ङ्गेष्ठा । काकघ्नी । करभाण्डिक ।

केवाँच—कपिकच्छु । आत्मगुप्ता । शुकशिम्बा । कपिप्रभा । शुकपिण्डी । स्वयंगुप्ता । कण्डूरा । शुकशिम्बिका । जड़ा । अध्यण्डा । प्रावृषायणी । ऋष्यप्रोप्ता । मर्कटी । सद्यः शोथा । प्रावृषा । अजहा । वानरी । गात्रभंगा । कच्छूमती । कच्छुरा । ऋषभ । जटा । व्याघ्रा । लांगली । कुण्डली । चण्डा । दुरभिग्रहा । अजडा । बदरी । गुरू । आर्षभी । काशीलोमा । व्यङ्गा । वृष्या । कौंछ ।

गुञ्जा (घुमची)—रक्तिका । गुञ्जिका । काकजंघा ।

शिखण्डिनी । कृष्णला । काकिनी । कक्षा । कनीचि । काकणन्तिका । काकचिची । शांगुष्ठा । काकादनी । अरुणा । ताम्रिका । शीतपाकी । उच्चटा । कृष्णचूडिका । रक्ता । काम्बोजी । भीलभूषणा । वन्या । श्यामलचूड़ा । वक्रशल्या । ध्वांक्षनखा । दुर्मोघा । वायसादनी । चटकी । तुलावीजा । अंगारवल्लरी ।

गुञ्जा-सफेद—श्वेतगुञ्जा । श्वेतकाम्बोजी । भिरिण्टिका । चक्रशल्या । चूड़ाला । चोटली । चिरमिटी । सफेद घुमची ।

बीजबन्द—बला । वाट्यपुष्पी । समांशा । ओदनिका । भद्रा । मोटापाटी । वाटिका । प्रहासा । खिरैटी । बरियारा ।

सहदेई—महाबला । पीतपुष्पी । सहदेवी । वर्षपुष्पा । देवसहा । गन्धवल्ली । महागन्धा । मृगा । मृगरसा । वर्षपुष्पी । वाट्या । वाट्यायनो । सहदेवा । वृहद्दला । मङ्गलार्थ प्रसादनी ।

कपास—कार्पासी । तुण्डकेरी । समुद्रान्ता । वदरा । पटद । वादरा । सूत्रपुष्पा । वदरी । कार्पासिका । कर्पाससारिणी । कर्पासी । चव्या । तुला । गुड । मरुद्भवा । पिचु । वादर । पटलुन । छादन ।

बाँस—वंश । त्वक्सार । कर्मार । त्वचिसार । तृणध्वज । शतपवा । यवफल । वेणु । मस्कर । तेजन । किलाटी । पुष्पघाती । वृहत्तृण । किष्कुपर्वा । वन्य । सुपर्वा । तृणकेतुक । कंटालु । कंटकी । महावल । दृढ़ग्रन्थी । दृढ़पत्र । धनुर्द्रुम । धानुष्य । दृढ़काण्ड । कीचक । कुक्षिरन्ध्र । षट्पदालय । कमठ । मृत्युवीज । वादनीय । फलान्तक । पर्वयोनि । दुरारुह ।

नर्कट—महानल। वन्य। देवनाल। नलोत्तम। स्थूलनाल। स्थूलदण्ड। सुरनाल। सुरद्रुम। नल। धमन। विभीषण। लालवंश। नट। नटी। नर्त्तक। नरसाल। नरसल।

मूँज—भद्रमुञ्ज। मुञ्ज। शर। वाण। तेजन। मुञ्जात। स्थूलदर्भ। सुमेखल। मौंजी। तृणाख्य। ब्रह्मण्य। तेजनाह्वय। वानीरक। मुँजनक। शीरी। दुर्मूल। दृढ़तृण। बहुप्रज। रंजन। शक्रभंग। रामसर। मूज।

कास—काश। सुकाण्ड। कासेक्षु। नादेय। नीरज। काकेक्षु। वायसेक्षु। इक्षुरस। शिरि। इक्षुगन्धा। काशी। काशा। अमरपुष्पक। इक्षारी। शारद। दर्भपत्र। काण्ड। कच्छलकारक। कॉस।

कुशा—कुश। दर्भ। बर्हि। सूच्यग्र। यज्ञभूषण। कुरव। पवित्र। याज्ञिक। ह्रस्वगर्भ। कुतुप।

विदारीकन्द—विदारी। क्षीरविदारी। इक्षुगन्धा। इक्षुवल्ली। क्षीरवल्ली। पयस्विनी। महाश्वेता। ऋक्षगन्धिका। ऋष्यगन्धा। क्षीरकन्द। क्षीरलता। पयःकन्दा। विलैयाकन्द। विलारीकन्द। दूधविदारी।

मूसली—मुसली। खलनी। तालमूली। तालिक। अर्शोघ्नि। ताली। सुवहा। तालपत्रिका। गोधापदी। हेमपुष्पी। भूताली। दीर्घकन्दिका। महावृष्या।

[मुसली दो प्रकार की होती है, सफेद और स्याह।]

सतावर—शतमूली। महाशीता। भीरुपत्री। शतावरी। बहुसुता। भीरु। इन्दीवरी। ऋष्यप्रोक्ता। नारायणी। अहेरु।

अभीरु। महापुरुष दन्ता। रंगिणी। कांचनकारिणी। मद्भंजिनी। शतपत्रिका। स्वादुरसा। लघुपर्णिका। विश्वस्ता। वैष्णवी। कार्ष्णी। दुर्मना। तैलवल्ली। अर्धकण्टका। सुपत्रिका। महौषधि। फणिजिह्वा। जटा। मूला। सुवीर्या। महती।

असगन्ध—अश्वगन्धा। कटुका। अश्वावरोहक। हया। वाराहकर्णी। तुरगी। बल्या। बाजीकरी। काम्बुका। अश्वारोहा। बलजा। बाजिनी। पलाशपर्णी। वातघ्नी। काला। श्यामला। गन्धपत्री। पुण्या। वाराहकर्णी। वरगात्रकरी।

जमालगोटा—जयपाल। सारक। तिन्तिडी फल। दन्तीबीज। मलद्रावी। रेचक। वीजरेचक। कुम्भिनी वीज। घंटावीज। शोधनी वीज। चक्रदन्ती वीज।

इन्द्रायन (इनारूफल)*—इन्द्रवारुणिका। चित्रा। विशाला। गजचिर्भिटा। मृगेर्वारु। क्षुद्रसहा। चित्रफला। ऐन्द्री। गवाक्षी। भरा। पिटंकोकी। मृगादनी। इन्द्रा। अरुणा। गवादनी। इन्द्रचिर्भिटी। सूर्या। विषघ्नी। गणकर्णिका। माता। सुकर्णिका। सुफला। तारका। वृषभाक्षी। पीतपुष्पा। इन्द्रवल्लरी। हेमपुष्पी। विषलता। अमृता। कपिलाक्षी।

सनाय—कल्याणी। हेमपत्री। रेचनी। स्वर्णपत्रिका। मलहारिणी।

---

* इन्द्रायन की बेल अधिकतर खारी भूमि में होती है। फल सूक्ष्म, कॉटेदार लालरंग का होता है और इसका फूल पीले रंग का होता है। दूसरे प्रकार का इन्द्रायन पीले फल वाला भी होता है, जो रेतीली भूमि में उत्पन्न होता है।

नील—नीली। नीलिनी। नीला। मेघवर्णा। कुत्सला। दूली। क्लीतकिका। काला। नीलपुष्पिका। मधुपर्णिका। रंजनी। श्रीफली। तुत्था। तूणी। दोला। अक्लीका। काली। श्यामा। शोधिनी। भद्रा। भारवाही। मोचा। कृष्णा। व्यञ्जनकेशी। चारटिका। गन्धपुष्पा। रंगपत्री। स्थिररंगा। वृन्तिका। विजया। स्थिररागा।

सरफोंका—कण्ठपुंखा। कंठालु। शरपुंखा।

गोरखमुंडी—महाश्रावणिका। भूकदम्बिका। लोचनी। कदम्बपुष्पिका। अव्यथा। तपस्विनी। मुण्डी। महामुण्डी। विकचा। क्रोडचूडा। पलंकषा। स्थविरा। लोतनी। अलम्बुषा। वृद्धा। छिन्नग्रन्थिका। बोड़ा। मुड़ली।

लटजीरा (ओंगा)—अपामार्ग। शैखरिक। धामार्गव। मयूरक। प्रत्यक्पर्णी। किणी। स्थलमंजरी। मर्कटी। दुरभिग्रह। वासिर। कंटी। अघाट। क्षुरक। पाण्डुकण्टक। कुब्ज। चिरचिटा।

तालमखाना—कोकिलाक्ष। काकेक्षु। इक्षुर। क्षुरक। क्षुर। भिक्षु। काण्डेक्षु। इक्षुबालिका। शृंखला। शूरक। पिच्छिला। त्रिक्षुर। शुक्लपुष्प। कुलाहक। कैलया।

घीक्वार—सहा। घृतकुमारी। अफला। सुरमा। मृदु। स्थलेरुहा। अजरा। अमरा। वीरा। तरुणी। रामा। कपिला। अदला। मण्डला। माता। रसायनी। कण्टकीनी। घीगुवार। ग्वारपाठ। कुवारपाठा। घीकुआर।

रामबाँस—क्षुद्रकेतकी। तृणकेतकी। रज्जुदात्री। मध्यदण्डा। काककेतकी। रामबान।

गदहपूरना—पुनर्नवा। नीला। श्यामा। नील पुनर्नवा। नीलिनी। विष खपरा। साँठ। नीली साँठ।

भँगरैया—भृंगराज। नीलभृंगराज। नीलपुष्प। पावन। सुनीलक। कुकुर भाँगरा। केशराज। भाँगरा। भँगरा। महाभृंग।

सन—शण। निशादन। पटसन। झुनझुनियाँ। सनई।

सोमलता—सोमवल्ली। सोमक्षीरी। द्विजप्रिया। सोमा। चन्द्रवल्लरी। महागुल्मा। गुल्मवल्ली। यज्ञवल्ली। सोमक्षीरा। यज्ञाङ्गा।

आकाश बौंर—अमर बेल। अकास बौर। दुःस्पर्शा। आकाश बेल।

शंखाहुली—शंखपुष्पी। मेध्या। सुपुष्पी। पीतपुष्पी। चण्डा। कौड़ियाली। वनमालिनी। विष्णुक्रान्ता।

अंधाहुली—अर्कपुष्पी। पयस्या। सूर्यवल्ली। क्षीरिणी। वक्रशल्या। दुराधर्षा। शीता। शीतला। सितपर्णी। दधियार।

लज्जावन्ती—छुईमुई। लजाधुर। लाजवन्ती। लज्जालु। समङ्गा। रक्तपादी। ताम्रा। खदिरका। कन्दिरी। स्पृक्का। संकेचिनी। लज्जा। स्पर्शलज्जा। स्वगुप्ता। वशिनी। महौषधि।

ब्राह्मी—वयस्था। मत्स्याक्षी। सुरसा। ब्रह्मचारिणी। सोमवल्लरी। सरस्वती। सोम्या। सुरश्रेष्ठा। सुवर्चला। वैधात्री।

कपोतवेगा। दिव्यतेजा। महौषधि। मण्डूकमाता। मेध्या। वीरा। भारती। वरा। परमेष्ठिनी। दिव्या। शारदा।

गाजुबाँ—गोजिह्वा। गोभो। कुरसा। दार्विपत्रिका। दर्वी। अधःपुष्पी। खरपत्री। गोजिया।

कुकरौंदा—कुकुन्दर। ताम्रचूड़। सूक्ष्मपत्र। कुक्कुरद्रु।

सुदर्शन—सुदर्शना। सोमवल्ली। चक्राङ्गी। मधुपर्णिका। चक्राह्वा। दध्यानी। वृषकर्णी।

चाय—चाह। चाहा। चविका। चा।

माजूफल—मायाफल। माइफल। माइका। छिद्राफल। मायि। माजूफर।

तमाखू—सुरती। क्षारपत्रा। कृमिघ्नी। धूम्रपत्रिका।

इसरगोल—ईषदगोल। श्लक्ष्णजीर। स्निग्धजीर। ईसबगोल।

सालम मिश्री—अमृता। जीवनी। जीवा। सुधीमूली। वीरकन्दा। प्राणदा।

लालमिर्च (मिरचा)—कटुवीरा। तीक्ष्णा। अजडा। कुमरिच। रक्तमरिच।

मेंहदी—रंजका। रंजिनो। नखरंजिनी। सुगन्धपुष्पा। रागांगी। यवनेष्टा। मेंदिका। रागगर्भा। कोकदन्ता।

बिधारा—वृद्धदारु। जीर्णदारु। जीर्णा। फंजी। अजरा। सुपुष्पिका। सूक्ष्मपत्रा।

हर्रे *—हर्रा। हर्रें। हरीतकी। अभया। पथ्या। पूतना। कायस्था। अमृता। हैमवती। अव्यथा। चेतकी। श्रेयसी। विजया। शिवा। वयस्था। जीवन्ती। रोहिणी। भिषग्वरा। प्राणदा। सुधा। बल्या। पाचनी। प्रथमा। शाका। हरडा। शक्रसृष्टा।

बहेड़ा—विभीतकी। कलिद्रुम। कल्पवृक्ष। संवर्त। अक्ष। विभीत। कर्षफल। बहेडुक। कासघ्न। तिलपुष्पक।

आँवला—(देखो फल वर्ग)

सोंठ—शुण्ठी। महौषधी। विश्वा। शुष्कार्द्र। भेषज। नागर। विश्वौषध। कटूत्कटक।

अदरक—आर्द्रक। शृङ्गवेर। कटुभद्र। कटूत्कट। वर। कन्दर। सैकतेष्ठ। अपाकृष्णक। राहुच्छत्र। शार्ङ्ग। मच्छाक। आर्दिका। आर्द्री।

---

* जाति भेद से हर्रे सात प्रकार की होती है। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी। हरड की प्रशंसा में तो यहाँ तक लिखा है कि—

"हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी॥"

—(राजवल्लभ)

अर्थात् हर्रें मनुष्यमात्र को माता के समान सुख देनेवाली है। कदाचित् माता कुपित भी हो जाय, परन्तु उदर-स्थित हरीतकी कभी भी मनुष्य का अहित नहीं करती।

मिर्च (काली)—मरिच । पवित । श्याम । वेणुज । यवनप्रिय । वल्लीज । धर्मपत्तन । कोल । ऊषण । शिरोवृत्त । मृष्ट ।

मिर्च (सफ़ेद)—सित मिरच । शीतोत्थ । सितवल्लीज । बालक । बहुल । धवल । चन्द्रक ।

पीपल—पिप्पली । मागधी । कृष्णा । चपला । चंचला । कणा । उपकुल्या । वैदेही । तिक्त तण्डुला । उष्ण । शौण्डी । कोला । कटी । कटुबीजा । सूक्ष्म तण्डुला । पीपर । कोरंगी ।

पिपरामूल—पिप्पलीमूल । ग्रन्थिक । चटकाशिर । कणामूल । कोलमूल । चटिका । कटुमूल । पत्राख्य । मागध ।

चीता—चित्रक । अनलनामा । पाठी । व्याल । ऊषण । कृष्णवर्त्मा । जातवेदा । बर्हि । विभाकर । विभावसु । बृहद्भानु । वैश्वानर । शिखावान । सप्तार्चि । हिमाराति । हिरण्यरेता । अग्नि । शार्दूल । चित्र । माली । हवि । शम्बर । द्वीपी । शूर । कुट । पाची । दारुण । अतितीव्र । मार्जार ।

[नोट—अग्नि के जितने नाम हैं, वे सब चीता के भी पर्य्याय हो सकते हैं]

सौंफ—शतपुष्पा । मधुरिका । माधुरी । तापसप्रिया । गन्धाधिका । घोषवती । सुगन्धा । छत्रा । शालेय । सितच्छत्रा । अतिच्छत्रा । मिसी । घोषा । पोतिका । अवाक्पुष्पी । कारवी । मिश्रेया । वनपुष्पा ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । वेधनी । गन्धबीजा । ज्योति । गन्धफला । वल्लरी । चन्द्रिका । मन्था । मिश्रपुष्पा । कैरवी । कुञ्चिका । बहुपर्णी । पीतबीजा । मुनीन्द्रिका ।

अजवायन—यवानी । दीप्यक । दीप्य । भूतिक । अजमान । यवानिका । यवाग्रज । उग्रगन्धा । यवाह्वा । ब्रह्मदर्भा । यवसाह्व । दीपनी । वातारि । यमानिका । उग्रा । अजमोदिका । अजमोदा ।

अजमोद—अजमोदा । खराश्वा । मयूर । दीप्यक । मोदा । ब्रह्मकुशा । कारवी । लोचमस्तक । वस्तमोदा । मर्कटी । मोदिनी । ब्रह्मकोशी । विशल्या ।

जीरा-सफेद—शुक्लाजाजी । जाजी । जीरक । कणा । दीर्घक । कणजीरक । अजाजी । श्वेतजीरक । कणाह्वा । जीरा । सितदीप्य । सितजीरक ।

जीरा-स्याह—कृष्णजाजी । जरणा । सुगन्धा । पटु । कालजीरक । वर्षाकाली । हृद्या । उद्गार । शोधिनी । भेदिनी । रुच्या । नीला । नीलकणा । काश्मीरजीरका । कालमेषी । कृष्णजीरक ।

मगरैला—कालाजाजी । स्थूलजीरक । पृथिवी । पृथुका । कुञ्चिका । कुञ्ची । दिव्या । काला । स्थूलकणा । जीर्णा । तरुणी । सुषवी । पतिंवरा । भेषज । कृष्णा । शाली । कालिका । बृहज्जीरक । कलौंजी । मगरइल ।

धनियाँ—धान्यक । धन्याक । धन्य । धनिक । छत्रा । कुस्तुम्बुरी । वितुन्नक । शाकयोग्य । सूक्ष्मपत्र । जनप्रिय । कुनटी । धाना । वेधक । धान्यवीज । अल्लका । हृद्यगन्धा । वेशष । निःसार ।

कालीजीरी—बृहन्याली। क्षुद्रपत्र। अरण्यजीर। कण।

हींग—हिङ्गु। शूलद्विट्। रमठ। जतुक। जतु। दीप्त। सहस्रवेधि। जन्तुघ्न। सूपाङ्ग। सूपधूपन। हिङ्गुक। रामठ। पिण्याक। वाह्ली। गृहिणी। मधुरा। केसर। शूलहृत। भूतारि। रक्षोघ्न। जरण। भेदन।

बच—बालवच। उग्रगन्धा। गोलोमी। शतपर्विका। मंगल्या। जटिला। तीक्ष्णा। गालिनी। लोमशा। विजया। उग्रा। वच्या। कांगा। भद्रा। इक्षुपर्णी। स्मारणी। बोधनीया। भूतनाशिनी। जलजा। मेध्या। शुक्रा। भोगवती। कर्षिणी। वचा।

कुलींजन—कुलञ्ज। गन्धमूल। तीक्ष्णमूल। कुलंजन।

चोपचीनी—चोवचीनी। द्वीपान्तरवचा। अमृतोपहिता।

अकरकरा—आकारकरभ। आकल्कक। अकल्लक। आकरकरा।

बाबीरंग—वायविडंग। भस्मक। मोघा। विडंग। कैराल। केवल। बेल्ल। तण्डुल। विडंगा। क्रिमिकंटक। रसायन। पावक। गर्दभ। चित्रा। वातारि। गहरा। कापाली। वरा। वृषणासना। चित्रवीजा। भाभीरंग।

वंशलोचन—तुगाक्षीरी। शुभा। वांशी। त्वक्क्षीरी। वंशलोचना। क्षीरा। वंशजा। तुगा। शुभ्रा। वैणवी। कर्मरी। श्वेता। कर्पूररोचना। तुंगा। पिङ्गा। वंशशर्करा। वंसरोचना। रोचनिका।

तीखुर (तवाखीर)—तवक्षीर। पयःक्षीर। यवज। गवयोद्भव। गोधूमज। पिष्टिका। तण्डुलोद्भव। तालसम्भूत। तालक्षीर।

समुद्रफेन—फेन। डिण्डिर। अब्धिकफ। अर्णवज। सिन्धकफ। जलहास। फेनक। श्वेतधामा। वार्द्धिफेन। सुफेन। पयोधिज। सामुद्र। शुष्काशुल्क। विंध्याह्व। दधिफेन। सारमल।

काकोली—शीतपाकी। पयस्या। क्षीरा। मेदुरा। वायसोलिका। वीरा। धीरा। शुक्ला। स्वादुमांसी। वयस्था। जीवन्ती। मधुरा। पयस्विनी। कायस्थिका।

क्षीरकाकोली—पयस्या। महावीरा। पयस्विनी। अष्टमी। क्षीरशुक्ला। सुकोली। क्षीरविषाणिका। जीववल्ली। जीवशुक्ला। क्षीरवल्ली। क्षीरमधुरा।

मुलेठी—मधुयष्टी। यष्टी। यष्ट्याह्वा। यष्ट्याह्विका। मधुक। यष्टिका। यष्टीक। क्लीतक। यष्टि। मधुस्रवा। क्लीतन। मधुम। मधुवल्ली। मधूली। मधुरसा। अतिरसा। मधुरनाम। शोषापहा। सौम्या। स्थलयष्टी। मुलहटी। मुलैठिका। जलयष्टी।

कबीला—कम्पिल्ल। काम्पिल्ल। कम्पिल्लक। कर्कश। चन्द्र। रक्ताङ्ग। रोचना। रेचनी। पिकाक्ष। लघुपत्रक। रेची। रञ्जक। लोहिताङ्ग। रक्तफल। बहुपुष्प।

अमलतास—आरग्वध। राजवृक्ष। व्याधिघात। चक्रपरिव्याध। सम्यक्। चतुरंगुल। शम्याक। आरेवत। प्रमेह। कृतमाल। सुवर्णक। मन्थान। रोचन। दीर्घफल। स्वर्णपुष्प।

हिमपुष्प। कण्डूघ्न। महाकर्णिकार। ज्वरान्तक। अरुज। स्वर्णाङ्ग। कुष्टसूदन। कर्णाभरणक। आरोग्यशिम्बी। आमहा। शेफालिका। नक्तमाल। घनबहेड़ा।

कुटकी—तिक्ता। अरिष्टा। चक्राङ्गी। कटु। कटुका। शकुलादनी। कटुरोहिणी। जननी। मत्स्यपित्ता। शतपर्वा। द्विजाङ्गी। कृष्णा। कृष्णमेदा। महौषधि। अञ्जनी। कटंवरा। केदारकटुका।

चिरायता—भूनिम्ब। किरात। रामसेनक। किरातक। अनार्यतिक्त। चिरात्तिक्त। तिक्तक। चिराटिका। कैरात। हैम।

इन्द्रजौ—यव। कलिंग। भद्रयव। कालिंगक। वत्सक। शक्रबीज। कुटज। भद्रज। इन्द्रयव।

[नोट—कुटज के बीज को इन्द्रजव कहते है। यह दो प्रकार का होता है। एक सफेद रंग का जो मीठा होता है और दूसरा काला जो कड़ुआ होता है।]

मैनफर—मदनफल। छर्दन। पिण्डीनट। करहाट। कण्ठ। मरुबक। शल्यक। विषपुष्पक। पिचुक। शल्य। रामच्छर्दनक। धाराफल। तगर। राठ। घण्टाल। करहर। मैनफल। मयनफल।

मालकँगुनी—ज्योतिष्मती। महाज्योतिष्मती। तीक्ष्णा। कंगुनी। तेजोवती। बहुरसा। कनकप्रभा। सुवर्णनकुली। लवणा। सुरलता। अग्निफला। अग्निगर्भा। शैलसुता। सुतैला। सुवेगा। वायसी। तीव्रा। काकाण्डी। गोर्लता। पोता। यशस्विनी। मेध्या। मेधावती। धीरा। उर्मीजिनी।

१४. मधु वर्ग

मधु (शहद)*—माक्षिक । मधु । क्षौद्र । भृङ्गवात । कुसुमासव । सारघ । पित्र्य । माध्वीक । वरटीवात । मकरंदरस । मध । सहत । शहद ।

मोम—मधूच्छिष्ट । मयन । मधुशेष । सिक्थक । मादन । मध्वाधार । मदनक । मधूषित । शिक्थ । काच । विघस । उच्छिष्ट । क्षौद्रेय । पीतराग । स्निग्ध । द्रावक । मक्षिकाश्रय । मधूत्थित ।

काँजी—काञ्जिक । कुण्डल । धान्यमूलक । कुल्माष । कुल्माभियुत । आरनालक । सौवीर । आवन्तिसोम । वीर । कुंजल । अभियुत । कांचिक । तुषाम्बु । संधान । गृहाम्लु । महारस । शुक्तचुक्र ।

मदिरा (शराब)—मद्य । प्रसवा । हाला । हलिप्रिया । अमृता । वीरा । माधवी । सुरा । परिश्रुत । वारुणी । इरा ।

---

* पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नाम की मक्खियों से क्रमशः चार प्रकार का शहद निकलता है। यथा—पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र तथा माक्षिक ।

कादम्बरी । मत्ता । प्रमत्ता । सीता । सन्धान । आसव । गुडारिष्ट ।
मध्वारिष्ट । मदिष्ठा । हारहूर । कल्प । परिप्लुता । महानन्दा ।
मधुलिका । मदनी । मधूल । कल्या । अद्विजा । शुण्डा । मैरेय ।
बुद्धिहा । सिंदुर रसना । दारू । सिन्धुसुता । हेय । कश्य । अपूता ।
मार्द्वीक ।

[नोट—खजूर की मदिरा को खजूरी, ताड़ की मदिरा को ताड़ी कहते हैं । औषधियों के कढ़े से बनी हुई मदिरा को अरिष्ट कहते हैं, जिसका प्रयोग औषधि रूप से होता है ।]

ईख—इक्षु । दीर्घच्छद । भूरिरस । गुड़मूल । असितपत्र ।
मधुतृण । मधुयष्टि । विपुलरस । गुड़दारु । कोशकार । रसाल ।
इक्षुर । असिपत्रक । पयोधर । कर्कोटक । वंश । कान्तार ।
सुकुमारक । अधिपत्र । वृष्य । मृत्युपुष्प । गन्ना । पौंड़ा । ऊख ।

गुड़—इक्षुसार । मधुर । रसपाकज । शिशुप्रिय । सितादि ।
रसज । अरुण । खण्डज । द्रवज । सिद्ध । अमृत सारज ।
मोदक । इक्षुरसक्वाथ । गण्डोल । मधुवीजक । स्वादुखण्ड ।
गुल । स्वादु ।

खाँड़—खण्ड । रसोद्भवा । शुक्ला । सुपिष्टा । पाण्डुरा ।
पंशुलका । श क्कर ।

चीनी—शर्करा । शुक्ला । मीनाण्डी । सिता । बालुकात्मजा ।
अहिच्छत्रा । सिकता । शुभ्रा । शुद्धा । सितोपला । शुक्लोपला ।
शार्क । श्वेता । मत्यण्डिका । गुडोद्भवा ।

[नोट—येही नाम मिश्री, कन्द आदि के भी हैं ।]



१५. गोरस वर्ग

दूध—दुग्ध। क्षीर। पय। स्तन्य। पीयूष। ऊधस्य। अमृत। दोहज। अवदोह। दोहापनय।

दही—दधि। पयस्य। मङ्गल्य। विरल। दधिद्रप्स। घनेतर। क्षीरज।

मलाई—क्षीरफेन। क्षीरसन्तानिका। साढ़ी। बालाई।

खोआ—खोया। मावा। किलाट।

छेना-पानी—मोरट। (फाड़े हुए दूध का पानी)

छेना—तक्रपिण्ड।

मट्ठा—तक्र। दण्डाहत। घोल। गोरसज। कटुर। द्रव। अम्ल। कंकर। मथित। मलिन। भग्नसंधिक। गोरस। कालशेय। विलोडित। छाछ। उदश्वित। माठा।

मक्खन—म्रक्षण। नवनी। नवनीत। सरज। सार। नोनी। मन्थज। दधिसार। कलम्बुट। क्षीरसार। क्षीरसत्व। नवोद्धृत। माखन। लवनी। नैनू।

घी—घृत। आज्य। हवि। सर्पि। पुरोडास। आज। नवनीतक। पवित्र। वह्निभोग्य। तैजस। अभिघारक। तोयद। पीथ। अमृत। होम्य। आयु। जीवन।





तृतीय खण्ड

१. मनुष्य वर्ग

शरीर—कलेवर। गात्र। वपु। संहनन। वर्ष्म। विग्रह। काय। देह। मूर्त्ति। तनु। तनू। क्षेत्र। पुर। घन। अङ्ग। पिण्ड। भूतात्मा। स्वर्गलोकेश। स्कन्ध। पञ्जर। कुल। बल। आत्मा। प्राणागार। वपुष।

अङ्ग—अवयव। प्रतीक। अपघन। गात्र। गात।

शिखा—चूड़ा। केशपाशी। जूटिका। जुटिका। चुरकी। केशी। शिखण्डिका। चोटी। चुटैया। चुण्डी (चुन्दी)।

सिर के बाल—कुन्तल। केश। बाल। शिरोरुह। कच। चिकुर। अलक। शिरसिज। मूर्द्धज। अस्र। वृजिन। श्याम।

[स्त्रियों के सिर के बाल—केशपाश। केशसमूह। जूरा। जूटा (झोटा)। घुँघराले बाल—कैढ्यमलक। कुन्तल। कुञ्चित केश।]

चोटी—धम्मिल। वेणी। कवरी। प्रवेणी।

सिर—शिर। शीश। शीर्ष। मूर्द्धा। मस्तक। माथ। कपाल। खोपड़ी। उत्तमाङ्ग। मुण्ड। मुण्डिका। मूँड़।

ललाट—लिलार। माथा। अलिक। बेंदी। भाल। गोधि। भाग्यमणि। मस्तक।

जटा—कपर्दक। बद्धकच। जूड़ा। जटाजूट। शटा। जटी। जूट। जुटक। शट। कौटीर। जूटक। हस्त।

[जटाधर, जटाटङ्क = शिव। जटाज्वाला = आग की लपट। जटाधारी = ऋषि-मुनि।]

कान—कर्ण। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र। शब्दग्रह। श्रव।

कनपटी—मलपट। कच्चा। गण्ड। गण्डस्थल।

भौंह—भ्रू। तन्द्री। भृकुटी। भवँ।

बरौनी—पक्ष्म। अक्षिलोम। नेत्रच्छदरोम। गरुत्। पक्ष्मः। नेत्रकिञ्जल्क। बरुनी।

आँख—लोचन। नयन। नेत्र। अक्षि। ईक्षण। दृश्। दृष्टि। दृक् (दृग)। अम्बक। विलोचन। रक्षिणी। चख। चक्षु।

आँख की पुतली—तारकाक्ष्ण। तारा। सितारा। पुत्तली। कनीनिका। गोलक। तारिका।

आँख का गोला—विड़ाल। कोया। नेत्रपिण्ड। गोलक।

आँख का कोना—अपाङ्ग। कोण। नेत्रंत। कनखी। दृष्टिकोण।

पलक—नेत्रच्छद। पपनी। निमेष। पल। निमीलन।

गाल—कपोल। गण्ड।

नाक—घ्राण। गन्धवहा। घोणा। नासा। नासिका। नस।

ओठ—होठ। ओष्ठ। सृक्किणी। अधर। रदनच्छद।

ठुड्डी—चिबुक। हनु। ठोढ़ी। दाढ़ी।

मूँछ-दाढ़ी—श्मश्रु। मुच्छ। मोंछ।

मुँह *—आनन। मुख। आस्य। लपन। वदन। वक्र। तुण्ड।

जीभ—जिह्वा। रसना। रसज्ञा। गिरा। वाणी। वाचा।

दाँत—दन्त। रद। दशन। रदन। द्विज।

जबड़ा—दंष्ट्रा। डाढ़। जभा। चौहड़। चौभड़।

तालु—तालू। काकुद। तारू।

कंठ—गल। गला।

गरदन—ग्रीवा। शिरोधि। कंधर। कंध।

[नोट—गरदन की हड्डियों को 'हँसली' कहते हैं]

कंधा—स्कंध। कंध। अंश। भुजमूल। भुजसंधि।

घंटी (घाँटी)—कृकाटिका। घाड़। घाटा। घाँटी। घेघा। गटई।

छाती—वक्षस्थल। वक्ष। क्रोड़। उर। वत्स। हृदय।

स्तन—कुच। उरोज। पयोधर। वक्षोज। थन। उरज। वक्षोरुह।

स्तन का अग्रभाग—चूचुक। चूँची।

काँख—कक्ष। बगल। कँखौरी। बाहुमूल।

कमर—कटि। कट। श्रोणि। श्रोणिफलक। ककुद्मती।

---

* मुख के मुख्यतः दो भाग हैं। एक तो 'मुखमण्डल' जिसमें नाक, ओठ, गाल, आँख, ललाट और भुख सम्मिलित हैं। दूसरा 'मुख-गह्वर' जिसमें दाँत, जबड़े, ओठ, जीभ, तालु, कण्ठ और गला सम्मिलित हैं।

श्रोणिफल। श्रोणी। करभ। काञ्चीपद। कलत्र। कटीर। कटी। कटिपार्श्व। पार्श्व। लंक। मध्यांग।

कूल्हा (कमर की हड्डी)—स्फिच। कटिप्रोथ। कुल्हा। कुलहड़।

पेट—उदर। जठर। कुक्षी। कोंख। तुन्द (तोंद)। पिचण्ड। थौंद। कुच्छ्छ। गर्भ।

नाभि—तुन्दकूपी। उदरावर्त। पेडू। बोड़ी। बोड़री। ढूढ़ी (ढोंढ़ी)।

पीठ—पृष्ठ।

पँसली—पार्श्व। पँजरी। पञ्जरी। पञ्जर।

लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)—शिश्न। शेफ। मेढ्र। मेहन। लांगु। ध्वज। रागलता। व्यङ्ग। कामाङ्कुश। साधन। स्वरस्तम्भ। उपस्थ। मदनाङ्कुश। कन्दर्प मुषल।

अण्डकोष—अण्ड। मुष्क। वृषण। (फोता)।

योनि—भग। वराङ्ग। उपस्थ। काममन्दिर। रतिगृह। जन्मवर्त्म। अधर। अवाच्यदेश। प्रकृति। अपथ। स्मरकूप। अप्रदेश। प्रकृति। पुष्पी। संसारमार्गक। गुह्य। स्मरागार। रत्यङ्ग। रतिकुहर। कलत्र। अघ। कन्दर्पसन्धि। गर्भद्वार। गर्भमुख। गर्भस्थाया। कन्दर्प सम्बाध। स्त्रीचिह्न।

नितम्ब—श्रोणी। चूतड़। चूत।

मलद्वार—गुद। गुदा। विष्ठा निर्गमद्वार। अपान। पायु। गुह्य। गुदवर्त्म।

मलाशय—कोष्ठ । मलकोष्ठ । कोठा ।

मूत्राशय—बस्ति । पेड़ू ।

[यह नाभि के नीचे होती है ।]

जाँघ—जघन । जानु । सक्थि । ऊरु । जंघा । स्तम्भ । शरीरस्तम्भ ।

घुटना—जानु । गुल्फ । पादपृष्ठ (पदपीठ) । पादग्रन्थि । घुटिका । घुटिक । घुण्टक । घुण्ट ।

पैर—चरण । पाद । पद । अंघ्रि । टाँग । टँगरी ।

एड़ी—पार्ष्णि । एड़ ।

पैर का तलवा—पदतल । तरवा ।

पैर की उँगली—पादाङ्गुली । पदपल्लव । प्रपद । पदाग्र ।

बाँह *—भुज । भुजा । बाहु । मंज । प्रवेष्ट । दो । दोष । बाह । बाहा [वैदिक पर्य्याय—आयती । च्यवना । अप्नवाना । अनीशू । विनंगृस । गभस्ति । कवस्न । भूरिज । क्षिपस्ती । शक्करी । भरित्रे ।]

केहुनी—टिहुनी । कूर्पर । कफोणी ।

[केहुनी के ऊपर भुजक को 'प्रगण्ड' और केहुनी के नीचे भाग को 'प्रकोष्ठ' कहते हैं ।]

---

* जो भुजाएँ घुटने के नीचे तक लटकती हों, वे 'आजानुबाहु' कही जाती है । उसका लक्षण 'गारुडी' अध्याय ६६ में इस प्रकार दिया है—"निर्मांसौ चैव भग्नाल्पौ, श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ । आजानुलम्बिनौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे ।"

हाथ—कर। हस्त। पाणि। पंचशाख। शय।

हथेली—करतल। हस्ततल।

हथेली के पीछे—करप्रष्टि। हस्तप्रष्टि। कर पृष्ट।

उँगुली—अँगुरी। करपल्लव। कररुहन। अंगुलीय। करशाखा। करज। अँगुली।

[क्रम से पाँचों अँगुलियों के नाम—१. अंगुष्ठ (अँगूठा), २. तर्जनी, ३. मध्यमा, ४. अनामिका, ५. कनिष्ठा।]

गावा—अँगुलिसन्धि। गाई।

अँगुली के पोर—पोरा। पर्व।

नाखून—नँह। नख (नष)। पुनर्भव। करोरुह। नखर।

इन्द्रिय *—गो। इन्द्री। हृषीक। गुणकरन। कृषि। विषयी। अक्ष। करण। ग्रहण।

थप्पड़—चपत। चपेट। थपेड़ा। झापड़। प्रहस्त। प्रतल। चाँटा।

घूँसा—मुष्टिक। मुष्टिका। मुक्का (मूका)।

गोद—क्रोड़। अंक। अँकवार। गोदी। अङ्कम।

रोम—लोम। तनूरुह। रोआँ।

---

* पाँच कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ (लिङ्ग वा योनि), और गुदा। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, जिह्वा, नासिका, कान और त्वचा (स्पर्श)। चार प्रकार की अन्तरिन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, अहङ्कार, और चित्त।

रोमाञ्च (खड़े रोयें)—पुलक । त्वक्पुष्प । त्वगङ्कुर । रोमोद्भेद ।

आँसू—नेत्राम्बु । वाष्प । अश्र । अश्रु । अस्र । अस्रु । चक्षुजल । रोदन । लोच ।

पसीना—स्वेद । स्वेदन । उष्मा । ताप । प्रस्वेद ।

चमड़ा—चाम । चर्म । त्वक् । त्वचा । सृग्धरा ।

लोहू—रक्त । रुधिर । शोण । शोणित । कोणप । असृक । क्षतजात । लोहित ।

माँस—पलल । आमिष । मास । पिशित । तरस । क्रव्य । पल । अस्रज । जाङ्गल । कीर ।

चरबी *—वसा । वपा । मेद । मेदा ।

मज्जा †—अस्थिसार । शुक्रकर । अस्थिस्नेह । अस्थिज । अस्थिसम्भव । तेज । वीज । जीवन । देहसार ।

---

* जो मास अपनी अग्नि से पकता है उसी से 'मेदा' की उत्पत्ति होती है । मनुष्य के पेट और हड्डियों में चरबी अधिक होती है । जिसका पेट बड़ा होता है उसमें अधिक चरबी समझनी चाहिये । भावप्रकाश में लिखा है कि—

"मेदोहि सर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषु स्थितम् ।
अतएवोदरे वृद्धिः प्रायो मेदस्विनो भवेत्" ॥

† हड्डी से उत्पन्न चरबी को मज्जा कहते हैं । भावप्रकाश में इसकी व्याख्या इस प्रकार है—

"अस्थि यत् स्वाग्निना पक्वं तस्य सारो द्रवो घन. ।
यः स्वेदवत् पृथग्भूतः स मज्जे त्यभिधीयते ॥"

हड्डी की अग्नि से पके हुए सारभूत स्निग्ध पदार्थ को मज्जा कहते हैं ।

हड्डी—अस्थि। हाड़। कीकस। कुल्य। मेदज।

वीर्य *—रेत। शुक्र। तेज। बीज। इन्द्रिय। जीवन। सार।

रज †—पुष्प। आर्त्तव। ऋतु स्राव। कुसुम। स्त्री धर्म। मासिक धर्म।

कलेजा—अग्रमांस। बुक्का।

वात ‡—(देखो पृष्ठ १६ में 'वायु' शब्द)

पित्त +—अग्नि। तेज। मायु।

कफ ×—श्लेष्मा। (बलग़म)।

नस—स्नायु। स्नसा। वस्नसा। महुर।

नाड़ी—धमनी। शिरा।

---

* सप्तधातु—रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र (वीर्य)—ये सातों मिलकर सप्तधातु कहे जाते हैं।

† स्त्रियों को प्रायः बारह वर्ष की अवस्था में रज आरम्भ होता है और प्रतिमास स्राव होता रहता है। गर्भावस्था में यह स्राव बन्द हो जाता है। प्रायः ५०–६० वर्ष की अवस्था में इसका पूर्ण क्षय हो जाता है।

‡ वात—प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान—ये पाँच प्रकार के शरीरस्थ वायु हैं।

+ पित्त—पाचक, रंजक, साधक, आलोचक और भ्राजक—ये पाँच प्रकार के पित्त हैं।

× कफ—क्लेदन, अवलम्बन, रसन, स्नेहन और श्लेष्मण—ये पाँच प्रकार के कफ हैं।

[नोट—वात, पित्त और कफ, इन तीनों की त्रिदोष संज्ञा है।]

लार (थूक)—लाला। खखार। सृणिका। स्यन्दिनी। कफ। श्लेष्मा। थूक।

पिलही (तिल्ली)—प्लीहा। पीला। पिलई (पलही वा पलई)। गुल्म। प्लिहा। तिल्ली। वापतिल्ली। बरवट।

[नोट—वाम कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को प्लीहा कहते है।]

यकृत—कालखण्ड। कालखञ्ज। कालेय। करण्डा। महास्नायु। कालक (जिगर)।

[नोट—दक्षिण कुक्षि मे स्थित मांसखण्ड को यकृत कहते हैं।]

अँतड़ी—आँत। अंतड़ी। अन्त्र। पुरीत। आँती।

फेफड़ा—फुफ्फुस। तिलक। क्लोम। धुकधुकी। हृदय।

त्रिबली—पेटी (पेट के तीन बल)। रोमराजी।

गर्भाशय—गर्भ। जठर। उदर। बच्चादानी। पेट।

गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)—भ्रूण। गर्भपिण्ड। पातक। अर्भक। अर्भ।

प्रसव—जनन। प्रसूत।

कान का मैल—कर्णमल। पिञ्जूषा। खूँट।

आँख का कीचड़ (मैल)—दूषिका।

नाक का मैल—नासामल। सिङ्घाण। नकटी।

विष्ठा (मल)—मल। मैल (मैला)। पुरीष। विष्ट। गूथवर्चस्क। गुह। झाड़ा। पाखाना। बीट।

[नोट—गौ के मल को गोबर, भेड़-बकरी आदि के मल को लेंडी वा मेंगनी और घोड़ा आदि के मल को लीद कहते हैं ।]

मूत्र—मूत । प्रस्राव । उच्चार । (पेशाब) ।

पुरुष *—मर्द । पुमान् । नर । ना । पञ्चजन । जन । अर्थाश्रय । अर्थवान् । मानव । मर्त्य । मानुष । मनुष्य । मनु । मदन-सायकाङ्क । मन्मथ-सायक-लक्ष्य । अधिकारी । कर्माहं । पूरुप । धव ।

स्त्री—योषिता । अबला । योषा । नारी । सीमन्तिनी । वधू । प्रतीपदर्शिनी । वामा । वनिता । महिला । तिय । तिया । कलत्र । मेहरी । दारा ।

सुन्दरी स्त्री—सुन्दरी । अङ्गना । भीरु । वामलोचना । कामिनी । प्रमदा । मानिनी । कान्ता । ललना । नितम्बिनी । रमणी । रामा । भामिनी । वरारोहा । उत्तमा । मत्ताकाशिनी ।

---

* कामशास्त्रानुसार पुरुषों के चार भेद—शशक, मृग, वृषभ और अश्व तथा स्त्रियों के भी चार भेद-पद्मिनी, चित्रिनी, हस्तिनी और शंखिनी माने गये हैं ।

अवस्था भेद से पुरुष ६ प्रकार के माने गये हैं यथा—पाँच वर्ष तक कुमार, तदुपरान्त १० वर्ष तक पौगंड, पश्चात् १५ वर्ष तक किशोर, इससे ऊपर ३० वर्ष तक युवा, ३० वर्ष से ५० तक प्रौढ़, तत्पश्चात् वृद्ध कहा जाता है । इसी प्रकार स्त्रियों के भी भेद ६ प्रकार के हैं—जन्म से ५ वर्ष तक कुमारी, १२ वर्ष तक कन्या, १५ वर्ष तक मुग्धा वा किशोरी, २५ वर्ष तक युवती वा मध्या, ४० वर्ष तक प्रौढ़ा, तत्पश्चात् वृद्धा कही जाती हैं ।

तन्वी। पुरन्ध्री। वरवर्णिनी। तनु। तन्वङ्गी (कृशाङ्गी)। कुरङ्गनयना। भाविनी। विलासिनी। सुनेत्रा। अभ्विभ्रु। ललिता। वासिता। नताङ्गी। त्रिनता।

पतिव्रता स्त्री—साध्वी। सुचरित्रा। सती। मनस्विनी। शुचिचित्ता। पतिभक्ता। पतिपरायणा।

कुटुम्ब वाली स्त्री—कुटुम्बिनी। पुरन्ध्री।

सधवा स्त्री—जीवत्पतिका। पतिवत्नी। सभर्तृका। सनाथा। सौभाग्यवती। सोहागिन। सोहगिल। विद्यमानपतिका। सावित्री।

विधवा स्त्री—विश्वस्ता। अधवा। जालिका। रण्डा। राँड। यतिनी। यती। अनाथा। पतिहीना।

रँडुआ (जिसकी स्त्री मर गई हो)—विधुर। विकल। अपत्नीक।

रजस्वला स्त्री—(१. प्रथम रजोदर्शन होने पर)-मध्यमा। दृष्टरजा। (२. साधारणतः रजस्वला)—पुष्पवती। स्त्रीधर्मिणी। रजोयुक्ता। अवी। आत्रेयी। मलिनी। ऋतुमती। उदक्या। द्वरि। पुष्पहासा। विफली। अवीरा। पुष्पिता। निष्फली। म्लाना। पांशुला। सार्त्तवा। एकवस्त्रा।

विगतरजा स्त्री—निष्कला। विगतार्त्तवा। शुद्धा। गतार्त्तवा।

स्वयंवरा स्त्री—वर्या। वरइच्छुका। पतिंवरा।

पति-पुत्र हीना स्त्री—निष्पतिसुता। अवीरा।

सती स्त्री—दुर्गा। देवी। सावित्री। साध्वी। पतिव्रता।

प्यारी स्त्री—प्रिया। प्रेयसी। प्रणयिनी। प्राणदायिनी। ज्येष्ठा। दयिता। वल्लभा। इष्टा। प्राणवल्लभा। रामा। रमणी। वरा। श्यामा। चारुवर्द्धना।

विवाहिता स्त्री—पाणिग्रहीता। पत्नी। सहधर्मिणी। भार्या। ब्याही। विवाहिता।

गर्भवती स्त्री—गर्भिणी। गुर्विणी। अन्तर्वत्नी। ससत्वा। आपन्नसत्वा। दोहदवती। गुर्वी। उदरिणी। दोपत्ता।

प्रसूता स्त्री—जातापत्या। प्रजाता। प्रसूतिका। जननी। (जच्चा)।

वन्ध्या स्त्री—अफला। बाँझ। विफला। निष्फला। अवकेशी। वृषली। अपत्या। अप्रज।

व्यभिचारिणी—कुलटा। भ्रष्टा। स्वैरिणी। नष्टा। दुष्टा। असती। ईत्वरी। खला। पुंश्चली। बंधकी। धर्षिणी। पांशुला। कलहिनी। कुभार्या। छिनाल। रंडी। (खानगी)। कामुका। कामातुरा। वृषस्यन्ती।

कुटनी—कुट्टनी। शम्भली। दूती। सम्भली। माधवी। रङ्गमाता। अर्जुनी। कुम्भदासी। गणेरुका।

बालक—शिशु। अर्भक। पोतक। शैशववान। बटुक। बटु। मुष्टिन्धय। किशोरक। शाव। शावक। डिम्भक। डिम्भ। अर्भ। पाक। हितक। गर्भ। माणव। अज्ञ। अबोध। किशोर। लड़का। बेटा। पुत्री।

बालिका (कन्या)—कन्या । कुमारी । किशोरी । कन्यका । गौरी । रोहिणी । नग्निका । लड़की । बेटी । पुत्री ।

युवा—जवान । युवक । पट्ठा । तरुण । यून ।

युवती—तरुणी । बाला ।

प्रौढ़—पोढ़ । अधेड़ । प्रगल्भ ।

प्रौढ़ा—प्रगल्भा ।

वृद्ध—बूढ़ । बूढ़ा । बुड्ढा । स्थविर । जर । जरठ ।

मस्तिष्क—गोर्द । गोद । मस्तुलुङ्क । (भेजा । दिमाग । मगज़) ।

शब्द—स्वर । ध्वनि । निनाद । निनद । ध्वनि । ध्वान । रव । स्वन । स्वान । निर्घोष । निर्ह्राद । नाद । निस्वान । निस्वन । आरव । आराव । संराव । विराव । संरव । मुखर । घोष । कथन ।

[नोट—शब्द दो प्रकार के होते हैं, १. ध्वन्यात्मक—पशु-पक्षी, मृदङ्गादि वाद्यों के शब्द, २. वर्णात्मक—जो वर्णों में लिखे जा सकते हैं ।]

दृष्टि—आलोकन । अवलोकन । निरीक्षण । दर्शन । ताक । चितवन । कटाक्ष ।

गंध—महक । घ्राण । बू । बास ।

भूख—क्षुत् । क्षुधा । बुभुक्षा । अशनाया । जिघत्सा । भोजनेच्छा ।

प्यास—पिपासा । तृषा । तृष्णा । पानेच्छा । उदन्या । तर्ष । उपलासिका ।

जँभाई—जृम्भा। जृम्भ। जमुहाई।

छींक—क्षुत्। क्षव।

हँसी ※—हास्य। हास। हस। हसन्। घर्घर। स्मित। हासिका।

रोना—रुदन। रोदन। क्रन्दन। विलाप। विलखना। रोआई।

हिचकी—हिक्का। हुचकी। हेंकटी।

सुनना—श्रवण। श्रुति।

स्वाद—आस्वादन। रस। सवाद। (ज़ायक़ा)।

निद्रा—नींद। शयन। सुषोपति। स्वाप। सुप्त। स्वप्न। संवेश। सुषुप्ति। सुप्ति। स्वपन।

ऊँघ—तन्द्रा। उँघाई। उपनिद्रा। आलस्य। अलसाई।

आलिङ्गन—लिपटना। गले लगना। हिये लगना। अँकवार भरना। दबोचना। परिष्वंग। परिरंभन। संश्लेष। अङ्गपालि। श्लिषा। उपगूहन।

चुम्बन—चूमा। चुम्मा। मुखसंयोग। अधरामृतपान। (बोसा)।

※ हँसी के ६ भेद—स्मित = मुसकुराना। हसित = दाँत दिखलाते हुए हँसना। विहसित = कुछ बोलते हुए हँसना। उपहसित = नाक फुला कर हँसना। अपहसित = सिर हिलते तथा आँसू निकलते हुए उद्धत हास। अतिहसित = शरीर कँपाते, ठठाकर ताली देकर अट्टहास हँसना।

मैथुन—प्रसंग। स्त्रीप्रसंग। सहवास। रति। क्रीड़ा। सुरत। निधुवन। केलि। विलास। संभोग। भोगविलास। भोग। व्यवाय। ग्राम्यधर्म। ग्राम्यकर्म।

जीव—प्राण। असु। जान।

आत्मा—ब्रह्म। ब्रह्मरूप। दिव्य स्वरूप। सूक्ष्म देह। सूक्ष्म शरीर। ब्रह्मांश।

मन—चित्त। चेत। हृदय। स्वान्त। हृत्। मानस। अङ्ग। अनङ्गक।

बुद्धि—मनीषा। धिषणा। धी। प्रज्ञा। शेमुषी। मति। प्रेक्षा। उपलब्धि। चित्। सम्वित्। प्रतिपत्। ज्ञप्ति। चेतना। मन। मनन। प्रतिपत्ति। मेधा। धारणा। ज्ञान। बोध। पण्डा। प्रतिभा। संख्या। आत्मजा। विज्ञान।

अहंकार—गर्व। अभिमान। मद। दर्प। स्मय। मान। अपलेप। चित्त समुन्नति। हम।

कबन्ध—अशिर। असुंड। रुण्ड।

मुर्दा—मृत। मृतक। शव। कुणप। क्षितिवर्द्धन।

भाग्य—भाग। भागधेय। दैव। नियति। दिष्ट। विधि। सुदिन।

अभाग्य—दुर्दैव। कुदिन। दुर्भाग्य। अदिष्ट। विधिवाम। कुसमय।

(विशेषण बोधक शब्द)

प्रजा—अधीन। आश्रित। सन्तान। (रैयत)। जन। शासित।

धनी—धनवान्। धनिक। ऐश्वर्यशाली। ऐश्वर्यवान्। धनाढ्य। लक्ष्मीसम्पन्न। प्रभु। महाजन। लक्ष्मीपति।

दरिद्र—रङ्क। दीन। निर्धन। कंगाल। निस्व। बेबस। दुखिया। अकिञ्चन। भिखारी। भिक्षुक। खिन्न। बपुरा। दुर्गत। ररीं। (ग़रीब)।

चतुर—कोविद्। प्रवीण। विज्ञ। अभिज्ञ। कुशल। कृती। पंडित। दक्ष। पटु। योग्य। शिक्षित। विदुष। निपुण। निष्णात। नागर। आगर। विशारद। विदग्ध। सयाना। (होशियार)।

मूर्ख—गँवार। मूढ़। अपढ़। अज्ञानी। निर्बुद्धि। अबूझ। अबोध। अनजान (अजान)। असमझ। यथाजात। मुग्ध। जड़। मूक (चुप्पा)। अज्ञ। अनभिज्ञ। अशिक्षित। अबुध। अयोग्य।

मीठा—मिष्ट। मधुर। मृदु। स्वादु। प्रिय-स्वादु।

खट्टा—अम्ल। चुक्र। खटरस।

नमकीन—चरपरा। सलोना।

तीता—तिक्त। तीत। तीक्ष्ण। [यथा-लाल मिर्च आदि]

कड़ुआ—कटु। कटुक। [यथा-नीम, चिरायता आदि]

कसैला—कषाय। [यथा-हर्रा, आँवला आदि

ठंडा—शीतल। शीत। सीर। शान्त।

गरम—उष्ण। तप्त। तपित। ज्वलन।

रिक्त—खाली। खोखा। छूछा। खुक्खा। रीता।

सजग—चैतन्य। सावधान। (होशियार)। सचेत। चघड़।

तैयार—प्रस्तुत। उपस्थित।

तत्पर—सन्नद्ध। कटिबद्ध। मुस्तैद।

पुष्ट—दृढ़। कठिन। पोढ़।

नष्ट—भ्रष्ट। समाप्त। ध्वस्त। मृत। अपचित।

भाग्यमान—सुकृती। पुण्यवान्। धन्य। भाग्यशाली।

उदार—महाशय। महेच्छ। हृदयालु। सहृदय।

पूज्य—मान्य। गण्य। गण्यमान्य। प्रतीक्ष्य। पूजनीय। आदरणीय। श्रद्धेय।

परीक्षक—जाँचक। अन्वेषक। कारंणिक।

प्रसन्नचित्त—हर्षमाण। विकुर्वाण। प्रमन। हृष्टमानस।

व्याकुलचित्त—विमन। दुर्मन। अन्तर्मन। व्यग्र।

उत्कण्ठित—उन्मन। उत्क। अभिलषित। इच्छित। अभीच्छित। वाञ्छित। प्रलुब्ध। प्रेच्छित।

सरलचित्त—दक्षिण। सरल। उदार। सीधा। साधु। सज्जन।

स्वामी (मालिक)—अधिपति। नायक। अधीश्वर। पति। ईशिता। अधिभू। नेता। प्रभु। परिवृढ़। अधिप। आर्य। अवमति। ईश। पालक। मालिक।

स्वतन्त्र—अपावृत। स्वैरी। अनियन्त्रित। निरवग्रह। निरयन्त्रिण। यथाकामी। निरर्गल। निरङ्कुश। स्वरुचि।

पेटू (अपना पेट पालनेवाला)—आत्मम्भरि। कुक्षिभरि। स्वोदरपूरक। भुक्खड़।

विनीत—निभृत। प्रश्रित। नम्र। विनयी। विनयावनत।

चुगलखोर—कर्णेजप। सूचक। पिशुन।

क्रूर—कर्कश। कठिन। निर्दय। निर्मोही। निठुर। घोर। भयंकर। नृशंस। घातुक। पाप। निष्ठुर। क्रूर। टिर्रा।

सज्जन—श्रेष्ठ। संत। साधु। भद्र। शिष्ट। सभ्य। उदार। महाशय। उपकारी। परोपकारी। आर्य। कुलीन। महाकुल। पुङ्गव।

दुर्जन—दुष्ट। खल। पिशुन। असज्जन। कंटक। पोच। कपटी। पामर। नीच। बर्बर। असाधु। अपकारी। असभ्य। अशिष्ट। अनुदार। असन्त। अभद्र। पतित।

भयभीत—त्रसित। कादर। कायर। डरपोक। शंकित। सशंक। क्षुब्ध। मोहित। असाहसी। अधीर। भीलुक। भीरुक। दीन।

कामी—कामातुर। कामार्त्त। मस्त। मदोन्मत्त। कामुक। स्त्रैण। मेहरा।

व्यभिचारी—कामी। विषयी। लम्पट। कुकर्मी। नष्ट। कुमार्गी। कुपथगामी। कुत्सित। पतित। अधम। लुचा। स्त्रैण। परस्त्रीगामी। छिनरा।

अधम—पतित। नीच। नष्ट। भ्रष्ट। हेय। निकृष्ट। पोच।

['पतित' और 'दुर्जन' के पर्याय प्रायः समान अर्थवाची होते हैं।]

उत्तम—श्रेष्ठ। उत्कृष्ट। पवित्र। श्रेयस्कर। ललित। रुचिर। चारु। कान्त। शोभायुक्त। शोभित। मनोरम। मञ्जु। मंजुल। सुष्ठि (सुठि)। सुभग। सुदेश। सुष्ठु। सुहावन। सुघर। सुहाई। ललाम। नीक। सुन्दर। रुचिकर। सरस। कल। वर। प्रकृष्ट। छबीला। कलित। प्रमुख। प्रधान। मुख्य। वर्य्य। प्राग्य। प्रवर्ह। भद्र। रूर।

भयंकर—उग्र। दारुण। भीषण। भीष्म। घोर। भीम। भयानक। प्रतिभय। रौद्र। तीव्र। कराल। विकराल। भैरव। भयक। दारुण।

त्यागी—विरक्त। वैरागी। निस्पृह। विरागी। अतीत। निर्लेप।

आलसी—मंद। बुद्द। अलस। अनुष्ण। शीतक। सालस। परिमृज।

लम्बा—लम्ब। प्रलम्ब। दीर्घ। सुदीर्घ। दीर्घकाय।

नाटा—ठिगना। ह्रस्व। [अत्यन्त नाटे को 'बौना' या 'वामन' कहते हैं]

मोटा—तुंदिल। पीन। पीवर। स्थूल। अंसल। मांसल। पृथुलाङ्ग।

पतला—कृश। कृशांग। दुर्बल। क्षीणकाय। निर्बल। हीनाङ्ग। तनु। तन्वंग।

आरोग्य—स्वस्थ्य। रोगहीन। पुष्ट। दृढ़। (तन्दुरुस्त)।

✓**रोगी**—रुजी। व्याधिग्रस्त। रुग्ण। क्षीण। सामय। आतुर। विकृत। ग्लान। म्लान। मन्द। अभ्यान्त। अभ्यमित। व्याधित।

अन्धा—अन्ध। नेत्रहीन। अनेत्री। अदृक्। सूर।

काना—काण। एकाक्ष।

बहिरा—बधिर। अश्रुत। एड़। कल्ल। श्रवणापटु। उच्चैः श्रव।

गूँगा—मूक। वाक्यरहित। अवाक्। चुप्पा।

कुबड़ा—कुब्ज। कुबरा। गड्डुल।

नाक-कटा—नकटा। अनासिकी। बिगत नासिकी।

बड़े कानवाला—दीर्घकर्ण। वृहत्कर्ण। लम्बकर्ण।

कानकटा—बूचा। खण्डकर्ण। लघुकर्ण।

लम्बी भुजावाला—दीर्घबाहु। आजानुभुज।

छोटी भुजावाला—ठूँठा। डूँठा। कुकर।

हाथ-कटा—लूला। हथकट्टा। शोण।

लँगड़ा—पंगु। पंगुल। अपंग। खंज। खोरा।

सुन्दर—(देखो पृष्ठ १६७ 'उत्तम' शब्द)

कुरूप—दर। कुत्सितरूप। बदसूरत। कदाकार। भद्देस। कुडौल।

कठोर—दृढ़। पुष्ट। जठर। कठिन। कड़ा।

कोमल—सरल। सुकुमार। मृदु। मृदुल। मुलायम। नरम।

साँवला—श्याम। नील। कृष्णवर्णी। श्यामल। काला। असित। मेचकवर्णी।

गोरा—गौर। धवल। गौराङ्ग।

सफेद—उज्वल। सित। श्वेत। शुभ्र। शुक्ल। पांडुर। अर्जुन। धवल। अवदात।

लाल—रक्त। अरुण। आरक्त। लोहित (रोहित)। श्रोन। रुधिराभ।

पीला—पीत। कपिस। पिङ्ग। पिगल। कपिल। गौर। पिसंग। सुपीत। हरिद्राभ।

चित कबरा—कर्बुर। चित्रक। कद्रू। कर्मीर। कल्माषक।

हरा—हरित। पालास। कपि। हरे।

छोटा—लघु। सूक्ष्म। ह्रस्व। अल्प। स्वल्प। क्षुद्र। न्यून। हीन। तुच्छ। ओछा। ऊन।

बड़ा—दीर्घ। विशाल। बृहत्। विराट। महा। गुरु। गरु। ज्येष्ठ (जेठ)। श्रेष्ठ। बड़र (बड़)। महत्। वृद्ध।

सूक्ष्म—तनु । अणु । त्रुटि । लवलेश । कण । क्षुल्लक । कृश । अनाक । स्तोक । श्लक्ष्ण । अल्प । रंचक ।

नया—नवल । नूतन । प्रत्यग्र । अभिनव । नव । नव्य । नवीन ।

पुराना—पुरातन । प्राचीन । पुराण । चिरन्तन । दिनी । चिरकालिक ।

थोड़ा—किंचित् । लेश । कण । रंच । रंचिक । थोर । थोरिक । कछु । कछुक । क्षुद्र । लघु । अणु । अल्प । परिमित । मित । मर्यादित । दभ्र ।

[नोट—'छोटा' शब्द के सभी पर्य्याय 'थोड़ा' अर्थ के बोधक होंगे ।]

बहुत—अपार । अधिक । ढेर । भूरि । अति । अत्यन्त । अपरिमित । निस्सीम । असीम । अमर्य्यादित । बेहद । अतिशय । भृश । अत्यर्थ । उद्गाढ़ । तीव्र । नितान्त । गाढ़ । प्रगाढ़ । दृढ़ । अतीव । विशेष । प्रभूत । प्रचुर । बहुल । विपुल । अनेक । निविड़ । घन । निपट । नाना । अदभ्र । अमित । प्रचण्ड । भूय । भूयिष्ठ । प्राज्य । अकुण्ठ । असंख्य । अगणित ।

पूर्ण—अशेष । अखण्ड । कृत्स्न । अन्नक । सर्व । पूरा । निश्शेष । अखिल । निखिल । समस्त । सकल । कुल । समग्र । सम्पूर्ण । सारा (सारी) । सब । सान्त । निष्पन्न ।

आधा—अर्द्ध । अर्धांश । अद्धा । (निस्फ) ।

चौथाई—पाद । चतुर्थांश । चौथ । (चहारम) ।

चिकना—चिक्कण । स्निग्ध । पिच्छिल । सस्नेह । स्नेह । सनेह ।

रूखा—रूक्ष । खुरखुरा । खदरा । खसखसा । खुरदुरा ।

टेढ़ा—कुटिल । खर्व । वक्र । अराल । कुँचित । भग्न । उर्मिमत । नत । वेल्लित । जिह्म । अविद्ध ।

पवित्र—मेध्य । पूत । निर्मल । अमल । शुद्ध । शुचि । प्रयत । पावन । पुण्य । विमल । विशुद्ध ।

अपवित्र—अशुद्ध । मलिन । मलीन । कच्चर । दूषित । अशुद्ध । अशुचि । अशौच । अपावन । पाप । मली ।

अतिथि—पाहुन । मेहमान । अभ्यागत । गृहागत ।

धूर्त्त—दम्भी । कितव । व्याजी । छली । छद्मी । जिह्म ।

प्रिय—इष्ट । अभीष्ट । इच्छित । वाञ्छित । ईप्सित । प्यारा । अभिलषित । अनुकूल । अपेक्षित । आप्तुमिष्ट ।

पुरवासी—नागरिक । नगरवासी । शहरी । पौर । प्रज । प्रजन ।

ग्रामवासी—ग्रामीण । गवाँर । गवइँहा । देहाती । ग्राम्य । ग्रामेयक । ग्रामस्थ ।

बटोही—पथी । पंथी । यात्री । पथिक । पाथ । अध्वग । अध्वनीन । अध्वन्य । मार्गी । राही । पान्थ । गन्तु । पथक । यान्त्रिक । पाथिल ।

थका—हारा । शिथिल । श्रमित । श्रान्त । श्रमी । प्रयासी ।

घृणित—घिनहा (स्त्री० घिनही)। घिनावन। घिन। वीभत्स। जुगुप्सित। विकृत।

अद्भुत—विचित्र। चित्र। विस्मित। अजीब।

शान्त—समथ। सुचित्त। समत्व। शमित। श्रान्त। जितेन्द्रिय। शमान्वित। उपशमित। दान्त।

वीर—शूर। विक्रान्त। गण्डीर। तरस्वी।

सीधा—सज्जन। सुहृत्। अवक्र। शुद्ध। प्रगुण। ऋजु। सरल चित्त। साधु। सौम्य। शान्त।

पागल—विक्षिप्त। मतिभ्रष्ट। बौराह। बावला।

मौनी—अवक्ता। अभाषी। चुप्पा। अनबोलता। तूष्णीम्भूत। मौनव्रती। मौनयुक्त। नीरव। तूष्णीक।

दानी—दाता। उदार। दानशील। वदान्य। महान्। महाशय। दयालु। देनेवाला। दानकर्त्ता। दातार। वदन्य। बहुप्रद। दानशौण्ड। दानसागर। दारु। मुचिर। दानीय।

सूम—कृपण। कंजूस। नीच। क्षुद्र। अनुदार। ठस। कदर्य। अदाता। किम्पच। मन्द। कीकट। मितम्पच।

दानपात्र—दातव्य। दानार्ह। देनेयोग्य।

मुख्य—प्रमुख। प्रधान। प्रवर। उत्तम। वरेण्य। प्रग्य। अग्र। अग्य। अग्रिय। सुतज्ञ। प्राग्य। प्रवर्ह। प्रवेक। अनवरार्घ्य। श्रेयान्। श्रेष्ठ।

मतवाला—मदी। मत्त। उन्मत्त। क्षीव। उत्कट। शौंड।

पराधीन—अधीन । परतन्त्र । अधीन । नाथवान् । परवश ।

दयावान्—दयालु । कृपालु । कारुणिक । सूरत ।

अपकारी—अनुदार । कृतघ्न । दुर्वृत्त । कुकर्मी । पीड़क । अनिष्टसाधक ।

क्षमाशील—सहिष्णु । तितिक्षु । क्षमित । क्षम । सहन । क्षमावान् । क्षमी । शान्तियुक्त । क्षमिता । शक्त । सह । प्रभूष्णु ।

क्षमा-रहित—अक्षम । असमर्थ । क्षमाशून्य । अशक्त ।

अधीन—निघ्न (निघिन वा निरघिन) । आयत्त । गृह्यक । अस्वच्छन्द । अधीन । परतंत्र । परवश ।

अगुआ—अग्रसर । पुरस्सर । प्रष्ठ । पुरोगम । पुरोगा । अग्रगामी ।

अशकुन—अपशकुन । असगुन । दुश्शकुन । अशुभ । अमंगल ।

उचित—युक्त । ग्राह्य । श्रेयस्कर । योग्य । परिमित ।

अनुचित—अयुक्त । अग्राह्य । अयोग्य । अपरिमित ।

नंगा—नग्न । वस्त्रहीन । दिगम्बर । अनावृत्त ।

हिंजड़ा—नपुंसक । क्लीव । नामर्द । शंढ । वर्षवर ।

शत्रु—विपक्षी । दुर्हृद् । रिपु । वैरी । आरात् । द्वेषी । परिपन्थी । शात्रव । द्विषण । सपत्न । कृतघात । अहित । प्रतिपक्षी । अपक्ष । अमित्र । (दुश्मन) ।

मित्र—सखा । सुहृत् । सहचर । संगी । संघाती । संघी । साथी । मेली । हित । हितू । हितैषी । सपक्ष ।

सखी—सहेली । संगिनी । गुइँयाँ । सजनी । आली । अली । सैरंध्री । सहचरी । वयस्था । हितू ।

नेता—संचालक । अगुआ । अग्रसर । मुखिया ।

कुलीन—महाकुल । कुलश्रेष्ठ । आर्य्य । सभ्य । भद्र । सज्जन । साधु । कुल्य । अभिजात । कौलेयक । जात्य । कौलेय । कुलज । साधुज । सुकुल । सत्कुलज । सद्वंशज । उत्तम ।



२. सम्बन्धी वर्ग

माता *—अम्बा। अम्बिका। अम्बालिका। सवित्री। जनी। जनित्री। जनयित्री। प्रसू। जननी। अक्का। अम्मा। माय। माई। मा। मातु।

पिता †—तात। जनक। वप्ता। जनयिता। जन्मद। गुरु। जन्य। जनिता। वीजी। वप्र। सविता। बाप। बापू। (बाबू)। बप्पा।

पति ‡—अधिपति। स्वामी। ईश्वर। ईश। ईशिता।

---

* सात प्रकार की मातायें—१. जन्मदात्री माता, २. गुरु की स्त्री, ३. ब्राह्मणी, ४. राजपत्नी, ५. गौ, ६. दूध पिलानेवाली वा सेवा करनेवाली धाय, तथा ७. मातृभूमि।

† सात प्रकार के पिता—"कन्यादाताऽन्नदाता च, ज्ञानदाताऽभयप्रदः।
जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठ भ्राता च पितरः स्मृताः॥"
(ब्रह्मवैवर्त्त पुराण श्रीकृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ३५)

१. श्वसुर, २. अन्न देनेवाला (पालनकर्त्ता), ३. ज्ञान देनेवाला,-गुरु, ४. अभय देनेवाला, ५. जन्म देनेवाला, ६. मन्त्रदीक्षा देनेवाला, ७ बड़ाभाई।

‡ साहित्यशास्त्रानुसार पति चार प्रकार के माने गये हैं—१. अनुकूल, २. दक्षिण, ३ धृष्ट और ४. शठ।

अधिभू। नायक। नेता। प्रभु। परिवृढ्। अधिप। धव। नेतार। भरता। भर्त्ता। भरतार (भतार)। इन्द्र। आर्य। विभु। इन। (खसम)।

पत्नी—पाणिगृहीता। पाणिगृहीती। द्वितीया। भार्य्या। सहधर्म्मिणी। सहभार्या। जाया। दारा। सधर्म्मिणी। दार। धर्मचारिणी। गृहिणी। सहचरी। गृह। क्षेत्र। बधू। बहू। जनी। परिग्रह। ऊढ़ा। कलत्र। मेहर। दयिता। प्राणप्रिया। वल्लभा। परिणीता। भूयिष्ट। ग्रेहिणी। कुलवंती। कुलत्री। त्रिया। तिय। तिया। वामाङ्गी। वामा। आङ्गणा।

पुत्र—आत्मज। तनय। सूनु। सुत। तनुज। तनूज। अपत्य। दायाद। कुलाधारक। नन्दन। आत्मजन्मा। दारक। स्वज। नन्द। बेटा। पूत। ज।

पुत्री—कन्या। कन्यका। आत्मजा। दुहिता। तनुजा। सुता। अपत्या। पुत्रका। पुत्रिका। स्वजा। जा। तनया। तनजा। नन्दिनी।

पौत्र (पुत्र का पुत्र)—नप्ता। नाती। पोता। पोतड़ा। पुत्रात्मज।

पौत्री (पुत्र की पुत्री)—नप्त्री। नातिनी। नातिन। पोती। पोतड़ी। पुत्रात्मजा।

नाती (पुत्री का पुत्र)—दौहित्र। कुतप। नात। (नवासा)।

नातिनी (पुत्री की पुत्री)—दौहित्रा। नातिन। (नवासी)।

भाई (सगा)—सहोदर । सोदर । समानोदर । सगर्भ । सहज । भ्राता ।

भाई (ज्येष्ठ)—पूर्वज । अग्रज । अग्रिय । वर्य ।

भाई (छोटा)—अनुज । कनिष्ठ । लघुभ्राता । यवीन । जघन्यज । जविष्ठ । अवर्य ।

बहिन—भगिनी । स्वसा । सहोदरा । सहोदरी । बहनेली । (छोटी बहिन को—अनुजा । बड़ी बहिन को—जेष्ठी, जेठी वा अग्रजा कहते हैं) ।

दादा (पिता के पिता)—पितामह । आर्यक । आजा । बाबा ।

दादी (पिता की माता)—पितामही । आजी ।

चाचा—काका । ताऊ । कका । चचा । पितृव्य ।

चाची—काकी । चची । ताई ।

बुआ—पितृष्वसा । फूआ । फूफी ।

फुफेरा भाई—पितृष्वसेय । पितृष्वस्रीय ।

फुफेरी बहिन—पितृष्वसेयी । पितृष्वस्रीया ।

मौसी—मातृष्वसा । मासी । मातृभगिनी ।

मौसेरा भाई—मातृष्वसेय । मातृष्वस्रीय ।

मौसेरी बहिन—मातृष्वसेयी । मातृष्वस्रीया ।

नाना—मातामह । मातृमह । मातृपिता । नन्ना ।

नानी—मातामही । मातृमही । मातृमाता । आई । मातामहपत्नी ।

मामा—मातुल । मामू ।

मामी—मातुलानी । माईं । मातुला । मातुलपत्नी ।

भाञ्जा—भगिन्य । भैने । भगिना । भगिनेय । स्वस्रीय । बहनौता । भगिनिज ।

भाञ्जी—भगिन्या । भैने । स्वस्रीया । भगिनिजा ।

भतीजा—भ्रातृक । भ्रातृज । भ्रातृसुत । भतीज । भ्रातृव्य

भतीजी—भ्रातृजा ।

भौजाई—भ्रातृजाया । भ्रातुर्जाया । भ्रातृभार्या । भाभी । भौजी । सहजग्रह । भ्रातप्रेहिनी । प्रजावती ।

बान्धव—स्वजन । कुटुम्ब । ज्ञाति । गोत्रज । बन्धु । परिवार । सगोत्र । गोती । स्व । सकुल्य । समानोदक । अंशक । गंध । दायाद ।

पतोहू (बहू)—पुत्रवधू । श्रुषा । वधू । बहू । बहुरिया ।

सास—श्वश्रू । [पति वा पत्नी की माता]

साला—श्वशुर्य । श्याला । श्यालक । [पत्नी का भाई]

साली—श्याली । [पत्नी की बहिन] ।

बहनोई—ग्रामहासक । भगिनीपति । बहनेऊ ।

[प्राकृत में—बहिणीवइ]

दामाद—जामाता । दमाद । जामाई । जमाई (जँवाई व जँवाय) । दुहितृपति ।

देवर—देवृ । पतिभ्राता ।

ननद—नन्द। ननदो। ननान्दा। नन्दिनी। नन्दा। पतिस्वसा। ननान्दरि।

जेठ (स्त्री के पति का बड़ा भाई)—जेठउत। ज्येष्ठ। जेठउर। भसुर।

पति-पत्नी—दम्पति। जायापती। भार्या-पती।

सौत—सपत्नी। समानपतिका। सवत। सौतिन।

उपपति—जार। यार।

उपपति से उत्पन्न पुत्र*—जारज। कुण्ड। गोलक। दोगला। संकर।

गोद बैठाया हुआ पुत्र—दत्तक पुत्र। पोष्य पुत्र। औरस। पोसपूत। (मुतवन्ना)।

सन्तान—सन्तति। गोत्रजनन। अपत्य। लड़केबाले। बालबच्चे। (औलाद)। प्रजा। तोक। प्रसूति।

समान अवस्था के—समवयस्क। स्निग्ध। सवय। समौरिया।



---

* पति के जीते हुये उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'कुण्ड', तथा पति के मर जाने पर उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'गोलक' कहते हैं।

३. जाति वर्ग

जाति—कुल । आस्पद । परिवार । कुटुम्ब । खानदान । बिरादरी । गोत्रिय । वंश । श्रेणी । वर्ग । पंक्ति ।

[नोट—जाति का 'जात' और पङ्क्ति का 'पाँत' तथा गोत्रिय का 'गोती' अपभ्रंश रूप हैं । अतः ये भी जाति के पर्य्याय हैं ।]

ब्राह्मण*—द्विज । विप्र । कुलश्रेष्ठ । अग्रजन्मा । भूसुर । द्विजाति । भूदेव । कुदेव । बाड़व । सूत्रकण्ठ । ज्येष्ठवर्ण । मैत्र । अग्रजातक । द्विजन्मा । वक्त्रज । वेदवास । नय । गुरु । ब्रह्मा । षट्कर्मा । द्विजोत्तम । शर्म । वामन । पंडित । महाराज ।

[नोट—पृथ्वी शब्द के पर्य्याय के साथ 'देव' शब्द जोड़ देने से भी ब्राह्मण का बोधक होगा ।]

ब्राह्मण-पत्नी†—ब्राह्मणी । बाभनी । पंडिताइन । महराजिन ।

---

* ब्राह्मणों के छ कर्म—अध्ययन, यजन (यज्ञ करना) और दान—धर्म के विचार से, तथा अध्यापन, याजन (यज्ञ कराना) और दान लेना—व्यवसाय के विचार से हैं ।

† पंडिताइन का अर्थ है पंडित की स्त्री; किन्तु पंडिता का अर्थ है जो स्त्री स्वयं विदुषी हो, वह चाहे पंडित की स्त्री हो वा न हो ।

क्षत्री—क्षत्रिय। मूर्द्धाभिषिक्त। राजन्य। बाहुज। विराट। क्षत्र। द्विजलिङ्गी। राजा। नाभि। नृप। मूर्द्धक। पार्थिव। सार्वभौम। वर्म। विराज। बाहुज।

क्षत्री-पत्नी—वीरस्नुषा। वीरमाता। वीरपत्नी। वीरा। राजपत्नी। रानी। महाराणी। क्षत्रिया। क्षत्रियाणी। क्षत्रियी। क्षत्राणी। क्षत्रिय-पत्नी।

[नोट—पंजाब में क्षत्री जाति को 'खत्री' तथा क्षत्राणी को 'खतरानी' कहते हैं।]

वैश्य—वणिक। बनिया। बनजकार। विस। ऊरव्य। ऊरुज। अर्य। भूमिस्पृक्। द्विज। विट्। भूमिजीवी। व्यवहर्ता। वार्त्तिक। पणिक। साहु। मोदी। गुप्त। श्रेष्ठ (सेठ)। श्रेष्ठी (सेठी)।

वैश्य-पत्नी— बनियाइन। सहुआइन। मोदिन(मोदियाइन)। वैश्या। अर्याणी। अर्या। अर्यी।

शूद्र—अवरवर्ण। वृषल। जघन्यज। पादज। दास। अन्त्यज। अन्त्यजन्मा। जघन्य। अन्त्यवर्ण। पज्ज। चतुर्थ। उपासक। सेवक। सूद। नीच।

शूद्र-पत्नी—शूद्रा। सूदिन। अन्त्यजा। उपासिका। सेविका। दासी।

चाण्डाल*—अन्त्यज। अस्पृश्य। श्वपच। जनंगम। पुक्कस। दिवाकीर्ति। मातंग। प्लव। अछूत।

---

* चाण्डाल जाति के अन्तर्गत—कोल, किरात, शवर, भील, केवट, पासी, मुसहर, भंगी, डोम, चमार, धोबी, भर, दुसाध, व्याध, नट, वेणुक, (बाँस काटने वाले) आदि। इन्हें अस्पृश्य वा अन्त्यज भी कहते हैं।

✓**धोबी**—रजक। निर्णेजक। शौचेय। कर्मकीलक। धावक। बरेठा।

धोबी की स्त्री—रजकी। रजकपत्नी। धोबिन। निर्णेजकी। शौचेयी। बरेठन। बरेठिन।

✓**चमार**—चर्मकार। चर्मकारक। चर्मक। त्वचक। चर्म्मार। चर्म्मरु। कुरट। पादुकाकार।

✓**चमार की स्त्री**—चमारी। चमारिन। चमाइन। चर्मकारिणी।

✓**भंगी**—मेहतर। चूहड़ा। धरकार।

✓**धुनियाँ**—धुनका। बेहना।

✓**जुलाहा**—तन्तुवाय। तन्तुक। कुविन्द। कोरी।

✓ **अँग्रेज**—फिरंगी। गौराङ्ग। गोरा। आङ्गलदेशी। आङ्गलीय।

✓ **मुसलमान**—यवन। म्लेच्छ। तुर्क (तुरुक)। इस्लामी। मुहम्मदी।

कोलकिरात*—कोलि। शबर। भील। किरात। व्याध।

[किरात की स्त्री को—किराती, किरातिनी, किरातिन कहते हैं।]

---

* ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के अनुसार लेट नामक पुरुष और तीवर नाम की कन्या से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति है जो छोटा नागपुर से मिरजापुर के जङ्गलों तक फैली हुई पाई जाती है। यह जंगली जाति बहुत प्राचीन काल से है। भील, शबर, किरात आदि इसी के भेद से जान पड़ते हैं।

लोहार—लौहकार। लोहकारक। व्योकार। अयस्कार। कर्मकार। कर्मार।

बढ़ई—काष्ठकार। तक्षी। वर्धकी। स्यन्दनकार। तरुभेदी। सूत। सूत्रकार।

कहार—स्कंधभार। गोंड। महरा। पनहारा। पनभरा।

कहार की स्त्री—पनहारी। पनभरी। गोंड़िन। महरी। कहारी। कहारिन।

नाई—दिवाकीर्त्ति। मुंडी। क्षौरी। अन्तवसायी। क्षुरी। नापित। क्षौरकार। नाऊ। छत्री। वात्सीसुत। नखकुट्ट। ग्रामणी। चन्द्रिल। मुण्ड। भाण्डपुट। न्यायी। नाऊ ठाकुर।

बारी—पत्राली। पत्राजीवी।

ठठेरा—शौल्बिक। ताम्रकुट्ट। ताम्राजीवी। तमेरा। कँसकुट्ट।

अहीर—आभीर। गोप। ग्वाल। गोसंख्य। गोपाल। गोदुह। वल्लव। यादव।

अहीर की स्त्री—आभीर पत्नी। अहिरिन। गोपी। गोपस्त्री। आभीरी। महाशूद्री।

गड़ेरिया—अजपोषी। अजी। जाबाल। अजाजीवी।

कुम्हार—कुंभकार। घटक। घटजनन। कुलाल।

कोइरी—काछी।

[नोट—कोयर + ई = सागपात बेचने वाली जाति।]

कुरमी—कुनबी। कूर्मवंशी। कूर्मीय।

सोनार—स्वर्णकार। रुक्मकार। कलाद। नाडिंधम। पश्यतोहर।

तेली—घूसर। तैलकार। चाक्रिक।

कलवार—कलाल। कलार। शुण्डी। शौण्डिक।

छीपी—रंगरेज़। छीपा। रंगक। रंगी। रंगकर। रंगाजीवी। (कपड़ा छापने वाले)

दरजी—सूचिक। सौचिक। सौचि। तुन्नवाय। छिपी। सूत्रभिद।

चुड़िहार—लाक्षक। आलक्तक। लखेरा। मनिहारा। (स्त्री० मनिहारिन)।

[नोट—ये ही पर्य्याय लाह से बने हुये आलता, महावर, रंग आदि बनाने वालों के लिये लग सकते हैं।]

माली—मालाकार। मालाकर। मालिक। पुष्पाजीवी। वनार्चक। पुष्पलाव। पुष्पलावक।

माली की स्त्री—मालिन। मालिनी। पुष्पलावो। मालिकी।

बहेलिया—व्याध। मृगवधाजीव। मृगयू। लुब्धक। द्रोहाट। मृगजीवन। बलपांशुन। शिकारी। आखेटी। अहेरी। चिड़ीमार। मृगहा। जन्तुहा। वागुरिक। जीवान्तक। जालिक। शाकुनिक।

केवट—[देखो पृष्ठ ५६ जलादि वर्ग।]

नट—नर्त्तक। रङ्गावतारक। रङ्गजीव। भरतपुत्रक। शैलूष। जायाजीव। शैलालिन। कृशाश्वी।

भाट—बन्दी। मागध। मगध। स्तुतिपाठक। बन्दीजन। लुब्ध। वैतालिक। वैताल। भट्ट। पशबन्ध। प्रातर्गेय। सूत। मधुक। चारण।

कसाई—मांसक। हिंसक। वैतंसिक। कौटिक। मांसिक। कौटकिक। मांसविक्रेता।

राजगीर—वास्तुकार। गृहकार। गृहकृत। राज।

कारीगर—शिल्पी। शिल्पकार। कारु। शिल्पकी।

चित्रकार—चित्रकर। रंगी। चित्रक। (मुसौव्वर)।

तमोली—ताम्बूली। बरई। ताम्बूलिक।

हलवाई (रसोइया)—सूपक। सूपकार। बल्लव। आरालिक। आन्धसिक। सूद। गुण। पाचक। पाकुक। भक्ष्यङ्कार। पाककर्त्ता। औदनिक। (बावरची)। रसोइया। स्वार।

[नोट—ये नाम सब प्रकार की रसोई बनाने वालों के हैं।]

किसान—कृषक। हालक। क्षेत्री। कर्षक। कृषिक। खेतिहर। कृषीबल। कृषिजीवी।

गवैया—गायक। गाता। गाथक। गायन। कथक।

बजानेवाले—वादक। उपवाद्य। महावाद्यकी। वार्तवह। वेणुपिक। वंशस्फोट।

बंशी बजानेवाले—वैणविक। वेणुध्म।

मृदंग बजानेवाले—मार्दंगिक। मौर्जिक। मृदंगिया। पखावजी। तवलची। ढोलकी।

नाचनेवाले पुरुष—नर्त्तक। नट। पोटगल। चारण। केलक। तालरेचनक।

नाचनेवाली स्त्री—नर्तकी। नटी। चारणी। लस्या। लसिका।

वेश्या—वारस्त्री। गणिका। पतुरिया। रंडी। (कस्बी)। वारवधू। कंचनी। वाराङ्गना। रामजनी। सामान्या। (तवायफ)। रूपाजीवा। क्षुद्रा। शालभञ्जिका। झर्झरा। शूला। वारविलासिनी। भण्डहासिनी। लज्जिका। वसुन्धरा। कुम्भा। कामरेखा। बर्वटी। पण्याङ्गना। पणाङ्गना। भुजिष्या। भोग्या। सर्ववल्लभा। पुरवामा। मङ्गलामुखी।

वेश्याओं के गुरु—पीठमर्द। रामजना। (उस्तादजी)। कत्थक।

महन्त—मठाधीश। पीठाधीश। अध्यक्ष। कुलपति।

पुरोहित (पण्डा)—पुरोधा। पोधा। पौरोहित। पण्डा। सख्यावान। प्रोहित।

पहरेदार—ड्योढ़ीदार। प्रहरी। पौर। प्रतीहार। द्वारपाल। दौवारिक। स्थितदर्शक। वेत्रक। वेत्रधार। द्वारस्थ।

दूत—संदेशहर। धावन। धापक। चर। चार। प्रणिधि। चट्टक। अपिसर्पक। संदेशिया।

दास—सेवक। भृत्य। किंकर। चेटक। गोप्यक। प्रैष्य। नियोज्य। भुजिष्य। परिचारक। प्रेष्य। प्रेष। प्रैष। परिकर्मा।

परिचर । सहाय । उपस्थाता । अभिसर । अनुग । अनुचर । अनुगामी । वृषल ।

दासी—परिचारिका । किंकरी । अनुचरी । अनुगामिनी । सहाया । भृत्या । चारि । वृषली । बिधिकरनी । बाँदी ।

बाजीगर (जादूगर)—ऐन्द्रजालिक । प्रतीहारक । इन्द्रजालकारक । मायाकारक । कौसुतिक । मायावी । व्यंसक । मायी । मायिक ।

चोर—चौर । तस्कर । दस्यु । साहसिक । एकागारिक । मोषक । मलिम्लुच । पाटच्चर । रात्रिचर । परास्कंदी । गूढ़नर । प्रतिरोधी । स्तेन । स्तैन्य । प्रच्छन्नजन । कुम्भिल । खनक । शङ्कितवर्ण । खानिक । तृपु । तका । रिभ्वा । रिका । विहाया । तायु । वनर्गु । वृक । अघशंस ।

ठग—छली । धूर्त्त । धोखेबाज़ । वंचक । प्रतारक । चाइयाँ । गिरहकट ।

कैदी—प्रतिग्रह । प्रग्रह । उपग्रह । बन्दी ।

जुआरी—सभिक । सभीक । द्यूतकार । अक्षधूर्त्त । द्यूतक्रीड़क । धूर्त्त । अक्षदेवी । कितव । द्यूतकृत । ज्वारी ।

कवि (पण्डित)—पण्डित । कोविद । सुधी । कवीश । कवीन्द्र । कविराज । छान्दस । कृति । श्रोत्रिय । धीमान् । प्राज्ञ । मनीषी । विदग्ध । ज्ञ । ज्ञानी । सूजान । सूरि । विचक्षण । सत् । आचार्य । दूरदर्शी ।

लेखक (मुहर्रिर)—अक्षरचण । लिपिकर । अक्षरचंचु ।

ज्योतिषी—कार्त्तान्तिक। मौहूर्त्तिक। सांवत्सर। दैवज्ञ। गणक। मौहूर्त। विज्ञ।

शास्त्री—शास्त्रज्ञ। तान्त्रिक। तत्वज्ञ। ज्ञात। सिद्धान्त।

नौकर—सेवक। दास। टहलुआ। अनुजीवी। अर्थी। चाकर।

न्यायाधीश—अक्षदर्शक। प्राड्विवाक। न्यायक। (मुन्सिफ)। धर्मराज।

धर्माध्यक्ष—अक्षपाटक।

व्यास—कथावाचक। सूत। पौराणिक।

यज्ञकर्त्ता—याज्ञिक। याजक।

वेदान्ती—ब्रह्मवादी। तत्ववादी।

नैयायिक—तार्किक। अक्षपाद।

मीमांसज्ञ—जैमिनीय।

वेदपाठी—श्रोत्रिय। छान्दस। वैदिक। श्रोत्री। वेदाध्यायी।

शिक्षक—पाठक। उपाध्याय। अध्यापक। उपदेशक। गुरु। आदेशक। आदेष्टा। उपदेष्टा। तत्वबोधक।

अध्यापिका—उपाध्याया। उपाध्यायी। गुरुआनी। आचार्या।

शिष्य—शैक्ष। छात्र। दीक्षित। विद्यार्थी।

वैद्य *—रोगहारी । अगदङ्कार । भिषक् । चिकित्सक । आयुर्वेदी ।

विष-वैद्य—गारुड़िक । विषघ्न । विषमारक । जाङ्गुलिक ।

महाजन—श्रेष्ठि । धनी । सभ्य । प्रमुख । साधु ।

हाकिम—अधिकारी । शासक । शास्ता । शासनकर्त्ता । देशक । शासिता ।

जासूस—चर । गुप्तचर । स्पश । चार । प्रणिधि । अपसर्प । गूढ़पुरुष । यथार्हवर्ण ।

चक्रवर्त्ती राजा—सार्वभौम । सम्राट् । जगदीश्वर । ('सम्राट्' का स्त्रीलिङ्ग 'सम्राज्ञी' है)

महाराजाधिराज—अधिराज । अधीश्वर । राजराजेश्वर ।

राजा—राज । नृप । भूप । पार्थिव । महीपति । नृपेश । नरपति । नरपाल । राजेश्वर । मण्डलेश्वर । नरेश । भुआल । भूपति । अवनीपति । अवनीश । क्षितिपाल । प्रजापति । पार्थ । नाभि । दण्डधर । भूभुक् । स्कन्ध । राट् । क्ष्माभृत् ।

पटरानी—राज्ञी । महारानी । रानी । महिषी । अर्धासनी । राजपत्नी ।

---

* 'वैद्य' नाम की एक जाति जो बङ्गाल में अधिक है, अपने को 'अम्बष्ठ' का वंशज मानती है । चार प्रकार के वैद्य माने गये हैं, यथा— १. रोगचिकित्सक, २. विषचिकित्सक, ३. शल्यचिकित्सक (सर्जन), ४ कृत्याहार ।

मन्त्री—सचिव। अमात्य। धीसचिव। धीसख। दीवान। सामवायिक। वज़ीर।

पारिषद (दरबारी)—सभासद। सभ्य। सभास्तार। सामाजिक। परिषद्वल। पर्षद्वल। पार्षद। परिसभ्य। साधु।

सेना*—चमू। ध्वजिनी। वाहिनी। पृतना। अनीकिनी। वरूथिनी। बल। सैन्य। चक्र। अनीक। वाहना। पूतना। गुल्मिनी। वरचक्षु।

सिपाही (योद्धा)—सैनिक। भट। योद्धा। समवेत। योध। योद्धार। प्रहरी।

सेनापति—सेनानी। वाहिनीपति। सेनाध्यक्ष। सेनप। चमूपति। चमूप।

प्यादा (सैनिक)—पद्ग। पदाति। पत्ती। पदग। पदिक। पादात।

रथी (सैनिक)—स्यन्दनारोह। रथारूढ़। रथारोही।

घोड़सवार—अश्वारोही। तुरगारूढ़। सवार। सादी। अश्ववेह। अश्ववार। तुरगी।

महावत—फीलवान। हाथीवान। गजारोह। हस्तिपक। निषादी। पद्मीक। आधोरण। इभपालक। गजाजीव।

---

* सेना चार प्रकार की होती है १. पैदल, २. घोड़सवार, ३. हाथी-सवार, ४. रथी। चारों प्रकार की संयुक्त सेना का नाम "चतुरङ्गिनी" सेना है।

कोचवान (सारथी)—नियन्ता। प्राजिता। सूत। दक्षिणस्थ। सारथी।

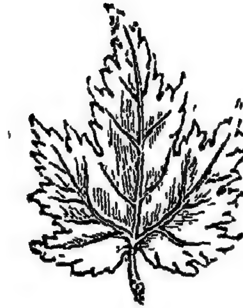
ब्रह्मचारी—व्रती। संयमी। यमी। बटु। वर्णी। प्रथमाश्रमी।

गृहस्थ—गृही। कुटुम्बी। ज्येष्ठाश्रमी। गृहमेधी। स्नातक। गृहपति। सत्री। गृहयाय। गृहाधिप। गृहायनिक।

वानप्रस्थी—वैषानस।

सन्यासी—(देखो स्वर्गादिवर्ग पृष्ठ २०।)

भिक्षुक—भिक्षाजीवी। भिखमंगा। मंगन। याचक। अर्थी। वनीयक। याचनक। मार्गण। भिक्षोपजीवी।



४. भावादि वर्ग

प्रेम—रति। अनुराग। प्रीति। प्रियता। स्नेह। हार्द। राग। प्यार। लगन। रमण। आसक्ति।

[नोट—शृंगार रस का स्थायी भाव]

शोक—मन्यु। शुच्। शोचन। खेद।

[नोट—करुण रस का स्थायी भाव]

उत्साह—उद्यम। अध्यवसाय। सूत्र। उबाल। जोश। उमंग। उछाह। साहस।

[नोट—वीर रस का स्थायी भाव]

भय—दर। त्रास। भीति। भी। साध्वस। प्रतिभय। आतङ्क। आशङ्का। डर। भिया। भयानक। भयङ्कर।

[नोट—भयानक रस का स्थायी भाव]

क्रोध—कोप। अमर्ष। रोष। रिस। प्रतिघ। भीम। हेल। हर। ह्णि। त्यज। भाम। एह। ह्वर। तपुषी। जूर्णि। मन्यु। व्यथि।

[नोट—रौद्र रस का स्थायी भाव]

घृणा—घिन। (नफरत)।

[नोट—बीभत्स रस का स्थायी भाव]

शान्ति—शम। स्थिरता। प्रशम। उपशम। शमथ। प्रशान्ति। तृष्णाक्षय। निर्वेद।

[नोट—शान्त रस का स्थायी भाव]

भक्ति *—भजनासक्ति। अनुराग। प्रेम। भजनरति।

[नोट—'रति' के सभी पर्य्याय 'भक्ति' के अर्थबोधक हो सकते हैं, क्योंकि सेवक-सेव्य भाव में जो रति होती है, वही 'उत्तम रति' भक्ति कहलाती है।]

त्याग—वैराग। निस्पृहा। अस्पृहा। निर्वेद। वर्जन।

ग्लानि—क्षय। हर्षक्षय। नाश। शेष। मूर्छन। म्लानि।

वात्सल्य—सौहार्द। स्नेह। हृदयद्राव।

शंका—सन्देह। अनिर्णय। संशय। शक। त्रास। डर।

डाह—राग। जलन। कुढ़न। ईर्ष्या। असूया। मात्सर्य।

द्वेष—शत्रुता। वैर। विरोध। विद्वेष। खार। द्वेषण।

श्रम—परिश्रम। मेहनत। उद्योग।

श्रद्धा—आदर। प्रेम। सम्मान (गुरुजनों के प्रति प्रेम भाव)।

मद—नशा। विकार। गर्व। अहङ्कार। मादकता।

धीरज—धैर्य। ढाढ़स। धीरता। सन्तोष। मनस्थिरता। तोष। अचञ्चलचित्तता।

---

* नवधा भक्ति—१. श्रवण, २. कीर्त्तन, ३. स्मरण, ४. पादसेवा, ५ अर्चन, ६. वन्दन, ७. दास्य, ८. सख्य, ९. आत्मनिवेदन।

आलस्य—मन्दता । मान्द्य । अलसता । तन्द्रा । आलस । कौसीद्य । अलस । कार्यप्रद्वेष । शीतक । अनुष्ण ।

दुःख (विषाद्)—विषाद । अवसाद । जड़ता । साद । मूर्खता । पीड़ा । विषण्णता । क्लेश । बाधा । व्यथा । कृच्छ्र । कष्ट । संकट । शूल । शोक । ग्लानि । दरद । करक । क्षोभ । खँभार । शाल । यातना । अमंगल । असमंजस । आर्त्त । पीर ।

चिन्ता—चिन्तना । चिन्तन । आध्यान । चिन्तिया । आध्या । स्मृति । शोच (सोच) । (फिक्र) । विसूर । उद्वेग । ध्यान । भावना । उत्कण्ठा । विषाद । कातरता । भय । त्रास । अनमन ।

मोह (अज्ञानता)—अज्ञानता । मूर्खता । ममत्व । समता । माया । मूढ़ता । आज्ञानान्धकार ।

स्वप्न—निद्रा । शयन । नींद । सपन ।

ज्ञान—बोध । विबोध । अवबोध । चेतनता । प्रकाश ।

स्मृति—स्मरण । चिन्तन । सुधि (सुध) । चेत । याद । ध्यान । विचार ।

सहनशीलता—सहिष्णुता । क्षमा । अक्रोध ।

असहनशीलता—अमर्ष । अमर्षण । असहिष्णुता । क्रोध । रिस ।

उत्कण्ठा—लालसा । चाव । उत्सुकता । औत्सुक्य । चाह । आकुलेच्छा । अत्यन्त इच्छा । प्रबलेच्छा । तीव्राभिलाषा ।

न्योछावर—बलिहार । उत्सर्ग । त्याग । दान । समाप्ति । प्रदान । समर्पण । अर्पण ।

उत्सव—उछाह। मंगलकार्य। धूमधाम। (जलसा)। त्योहार। पर्व। समैया। आनन्द। विहार। बधाव।

दीनता—दैन्य। कार्पण्य। दारिद्र्य। अधीनता। दुःख। सिधाई।

हर्ष (सुख)—आनन्द। प्रसन्नता। सुख। सौख्य। मोद। प्रमोद। संमद। प्रीति। प्रमद। आमोद। शर्म्म।

लज्जा—व्रीड़ा। संकोच। शर्म। मन्दाक्ष। मन्दास्य। लज्या। व्रीड़। ह्रीस्व। व्रीड़न। लाज। (ह्या)। मर्य्यादा।

उग्रता—उग्रत्व। चण्डता। प्रचण्डता। (तपाक)। (तेज़ी)।

व्याधि—रोग। रुज। उपद्रव। पीड़ा। सन्ताप। ताप। व्यथा।

भ्रम—घूर्णन। भ्रान्ति। चक्रावर्त्त। घूर्णि। भ्रमि। धोखा। चक्कर। फेर। भूल।

आवेग—त्वरा। शीघ्रता। आतुरता। चपलता। वेग। जल्दी। लाघव। लघुता। अचिरता। पटुता। स्फूर्त्ति। तेजी।

अभाव—कमी। न्यूनता। क्षीणता। हीनता। खुटाव। अनुपस्थिति।

परिक्रमा—प्रदक्षिणा। परिक्रमण। परिभ्रमण। फेरी। फेरा। घुमरी। चक्कर।

हद्द—पराकाष्ठा। चरम। सीमा। इति। सीमान्त। अन्त। छोर। अशेष। समाप्ति।

समाप्ति—सिद्धि। सम्पूर्णता। अन्त। निष्पत्ति। (ख़त्म)। पूरा। पूर्णता। समापन। पूर्त्ति।

अकस्मात्—अनायास। सहसा। अचानक। एकाएक। एकबएक। हठात्। सद्यः। सपदि। तत्क्षण। अतर्कित।

अकाल—असमय। अप्रशस्त काल। अशुद्ध काल। दुकाल। महर्घ। महँगी। मन्दी।

तारतम्य—न्यूनाधिक। कमबेश। थोड़ाबहुत। घटबढ़।

समूह—वृन्द। निकर। ढेर। झारि। जूट। कुल। स्तोम। थोक। ग्राम। बरूथ। पटल। निकाय। संचय। हार। समाहार। समुच्चय। कलाप। कदंब। यूह। यूथ। पुञ्ज। चय। राशि। गण। ओघ। संघ। समवाय। व्रज। समुदाय। संदोह। चक्र। टोली। परिकर। पूग। प्रसर। प्रचय। सानु। मंडली। गोष्ठी। व्यूह। दल। जाल। कषाल। निवह।

उन्माद—पागलपन। मतिभ्रंश। उन्मना। विक्षिप्ति। लहर। चित्तविभ्रम। चित्तविप्लव। सनक। झक। जक।

शाप (गाली)—गाली। अभिशाप। अकृपा। कोप। आक्रोश। अभिसम्पात। अवग्रह। अश्लील वचन।

न्याय—निर्णय। विवेक। (इन्साफ)।

जड़ता—जाड्य। अपाटव। अपटुत्व। स्तैमिति। स्तब्धता। शून्यता। स्थिरता। शीतलत्व। मूर्खता। अज्ञानता। अचेतनता। मूढ़ता।

चपलता—चंचलता। शीघ्रता। त्वरित। विकलता। अशांति। तरलता। तारल्य। चाञ्चल्य।

क्षण—समय। घड़ी। मुहूर्त। बेला। विरियॉं। छिन। छन। काल। दण्ड। अवसर। प्रसङ्ग। निमेष। पल। अदिष्ट।

धीरे—सहज। धीमे। मन्दगति। हरुए। आहिस्ते। शनैः।

अवकाश—समय। मौका। छुट्टी। फुरसत।

शीघ्र—त्वरित। लघु। क्षिप्र। द्रुत। चपल। तूर्ण। अर। सत्वर। आशु। अविलम्ब। वेग। वेगि। जल्द। सपदि। सहसा। अविरत। हरद्। सद्य। अचिर। तरसा। जव। अविराम। झटित। हाल। उत्ताल। स्पद्। तुरन्त। हौले। पटु। फौरन्। स्फूर्ति। (फुर्ती)। तेज़। आतुर। झटपट। तत्क्षण।

व्यतीत—गत। विगत। अवसान। अतिवाहन। निष्पत्ति। निष्पन्न। क्षेपण। यापन। बिताना। समाप्त। समापन। अन्त। सम्वरण। सिद्ध। इति। मिरान। ठंडा पड़ना। (खतम)।

वितर्क—तर्क। अनुमान। विकल्प। विचार। अनुभव। बोध। अटकल।

निर्लज्जता—अमर्यादा। (बेशर्मी)। (बेहयाई)। निस्संकोच।

मूर्छा—सम्मोहन। मोहन। अचेतन। (बेहोशी)। मोह। कश्मल। मूर्च्छन।

मान (आदर)—आदर। गौरव। प्रतिष्ठा। सम्मान। (इज्जत)। मर्य्यादा। यश। कीर्त्ति। प्रतिपत्ति। प्रागल्भ्य।

मान (हठ)—हठ। रोष। रूठना। कोहाना। कोह। कोप। ज़िद्। मचलाई। अड़। टेक। ऐंठ। आन। बात। आर। शान।

✓**अपमान**—अनादर। अप्रतिष्ठा। अपयश (बेइज्जती)। गौरवहीनता। अमान। अवज्ञा। परीहार। परिहार। पराभव। तिरस्कार। अवहेला। अवहेलन। अमर्यादा। धिक्कार। क्षेप। अतिपात।

✓**मानता**—मनौती। मन्नत। प्रण। प्रतिज्ञा।

स्वभाव—प्रकृति। निसर्ग। स्वरूप। भाव। सर्ग। संसिद्धि।

✓**काम (कामना)**—वासना। कामना। चाह। तृषा। तृष्णा। प्यास। मनोर्थ। मनोऽभिलाष। आकांक्षा। अभिलाषा।

✓**लोभ**—लालच। तृषा। तृष्णा। लिप्सा। स्पृहा। कांक्षा। आकांक्षा। गर्द्धः।

✓**पाखण्ड**—कपट। छल। छद्म। दम्भ। धूर्त्तता। जाल।

✓**प्रमाद**—असावधानी। अनवधानता। भ्रम। भूल। अव्यवस्थितचित्तता। (लापरवाही)। (बेखबरी)। (बेफिक्री)।

✓**अभिप्राय (विचार)**—अभिलाषा। इच्छा। कांक्षा। विचार। आकांक्षा। आशय। तात्पर्य्य। स्पृहा। कामना। सम्मति।

✓**सन्तोष**—तृप्ति। तोष। हृष्टि। आनन्द।

✓**स्नेह**—राग। अनुराग। प्रेम। प्रीति। सौहार्द। हार्द।

✓**उपवास**—औपवस्त। लंघन। अनाहार। निराहार। अनशन। भोजनाभाव। व्रत।

✓**आज्ञा**—आदेश। निदेश। अनुमति। शासन। शिष्टि। अववाद। निर्देश।

जीवन (जीवनकाल)—अवस्था। आयु। वयःक्रम। जीवनकाल।

मृत्यु—मरण। पञ्चत्व। निधन। अत्यय। विनाश। नाश। प्रलय। मृति (मौत)। दिष्टान्त। कालधर्म। अन्त। देहान्त। देहावसान। शरीरान्त। निपात।

कल्याण—कुशल। मंगल। क्षेम। सुख। आनन्द। श्वः। श्रेयस्। शिव। भद्र। शुभ। भावुक। भविक। भव्य। शस्त। शं।

आचार—चरित्र। चारित्र। व्यवहार। वृत्त। शील।

क्रूरता—कर्कशता। निर्दयता। काठिन्य (कठिनता)। निर्मोह। निर्ममता। निष्ठुरता। पाप। भयंकरता।

पाप—अघ। अपवाद। अपकर्म। अपकृति। अपधर्म। अधर्म। विधर्म। कुधर्म। कुकर्म। दुर्दृष्ट। पङ्क। किल्विष। कल्मष। मल। कलुष। वृजिन। एन। अह। दुरित। दुष्कृत। पातक। तूस्त। कण्व। शल्य। पापक।

पुण्य—धर्म। शुभादृष्ट। श्रेय। सुकृत। वृष। पावन। सुगन्धि। शोभन। सत्कर्म।

अपराध—आग। मन्तु। अकार्य। दुष्कर्म।

[नोट—'पाप' के सभी पर्य्याय 'अपराध' के पर्य्याय हो सकते हैं।]

सत्य—सच। तथ्य। यथार्थ। शपथ। ऋत। सम्यक्। अवितथ। भूत। तथोक्त। तद्वत्।

झूठ—असत्य। मृषा। मिथ्या। वितथ। अनृत। अतथ्य।

हाव * (नाज़)—आह्वान। शृंगार भाव। नखरा। (नखड़ा)। चोंचला। पुकार। बुलाहट।

यात्रा—भ्रमण। परिभ्रमण। व्रज्या। प्रव्रज्या। पर्यटन। प्रस्थान। गमन। गम। प्रस्थिति। यान। प्राणन।

दण्ड—साहस। दम। (सज़ा)। दमन।

व्यवहार—बर्त्ताव। सलूक। सान्त्र। साम। सात्वमथ।

कीर्त्ति †—सुख्याति। समज्ञा। समाज्ञा। समाख्या। समज्या। अभिख्या। श्लोक। वर्ण। कीर्त्तना। यश। गुणावलि।

अपयश—अपकीर्त्ति। अकीर्त्ति। अयश। अपवाद। निन्दा।

[नोट—'निन्दा' वाचक सभी शब्द 'अपयश' के पर्य्याय है।]

अपकार—द्रोह। अनुपकार। असद्व्यवहार। अत्याचार। बुराई। खुटाई। अपकर्म। दुष्क्रिया। मन्दकर्म। द्वेष। अपकृति।

उपकार—भलाई। नेकी। हितसाधन। उद्धार। उपकृति।

मधुर-वचन (अर्थ प्रयोग में)—प्रियवचन। सूनृत। मञ्जुभाषण। शांत्व। समंजस। संगत। हृदयंगम।

---

* संयोग समय में स्त्रियों की स्वाभाविक अङ्गादि चेष्टाओं को 'हाव' कहते हैं। काव्यशास्त्र में हाव १२ प्रकार के माने गये हैं। यथा—१ लीला, २ हेला, ३ ललित, ४ विभ्रम, ५. विहृत, ६. विलास, ७. विच्छित्ति, ८ विब्बोक, ९. किलकिञ्चित, १०. मोट्टाइत, ११. कुट्टमित। १२ बोधक।

† दानादि से जो ख्याति होती है उसे 'कीर्त्ति' तथा शौर्य्यादि से जो ख्याति होती है उसे 'यश' कहते हैं। यथा—"दानादिप्रभवा कीर्तिः शौर्य्यादि प्रभवं यशः।" —इति माधवी।

दुर्वचन—अश्लील । ग्राम्य । परुष । निष्ठुर । कठोर । स्तब्ध । कर्कशवचन ।

नीति—न्याय । व्यवहार । उचित । यथार्थ । नय ।

स्तुति—प्रशंसा । नुति । स्तोत्र । प्रस्तुति । स्तव । शस्त । ईलित । पणायित । वर्णित ।

कृपा—अनुग्रह । अनुकम्पा । मया । दया । अनुक्रोश । अनुकंपना ।

कपट—छद्म । छल । दम्भ । पाखण्ड । शाठ्य । कैतव । व्याज ।

कलंक—दोष । दाग । लाञ्छन । अपवाद । पंक । मसि । किञ्जल्क । निर्वाद । लक्ष्म । मलीन । मली ।

शपथ (कसम)—सौगन्ध । सौंह । कसम । आन । अभिषङ्ग । सत्य । शाप । शप । शापन । प्रत्यय ।

कंजूसी—कृपिणता । कृपणता । कार्पण्य । दैन्य । दीनता । दरिद्रता । कादरता । अनुदारता । क्षुद्राशयता ।

जय (विजय)—विजय । जीत । उन्नति । वृद्धि । विभव ।

हार (पराजय)—पराजय । अजय । पराभव । भङ्ग । अवनति ।

आशीर्वाद—आशी । अशीर्वचन । शुभवचन ।

बचपन—बालपन । कौमार । शैशव । बालकत्व । शिशुत्व ।

जवानी—यौवन । युवावस्था । तारुण्य । तरुणता । ज्वानी ।

अधेड़—प्रौढ़त्व। प्रौढ़ावस्था। पक्की उम्र।

बुढ़ापा—जरा। जीर्णावस्था। वृद्धावस्था। वृद्धत्व। जरत्व। वृद्ध। जरठपन। जरठत्व। जीर्ण।

सुन्दरता—सौन्दर्य। सुरूपता। रूपता। लावण्य। (खूबसूरती)।

[नोट—'शोभा' शब्द के पर्य्याय भी प्रयुक्त हो सकते है।]

कुरूपता—कदर्य। अरूपता। अपरूपता।

प्रार्थना—विनती। विनय। नम्रता। दीनता। आर्तवचन। अभ्यर्थना। (खुशामद)।

उत्पात—उपद्रव। अशुभ। अमंगल। विघ्न। बखेड़ा। झगड़ा। टंटा। ऊधम।

सूचना—समाचार। निवेदन। कथन। आवेदन। सूचन।

हँसीठट्ठा—परिहास। परीहास। क्रीड़। देवना। वर्करा। विजल्पन। (मज़ाक)। दिल्लगी।

प्रलाप—जक। वक-वक। मिथ्यालाप। अनर्थभाषण। जल्प। दुर्वाद।

संस्कार*—संशोधन। शुद्धि। प्रतियत्न। शोधन। शुद्धता। परिशोधन।

---

* हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के कुल १६ संस्कार माने गये हैं। यथा—१. गर्भाधान। २ पुंसवन। ३. सीमन्त। ४ जातकर्म। ५ नामकरण। ६. निष्क्रमण। ७. अन्नप्राशन। ८. चूड़ाकरण (मुण्डन)। ९. कर्णवेध। १० उपनयन। ११. वेदारम्भ। १२ समावर्त्तन। १३. विवाह। १४. गृहस्थाश्रम। १५. वानप्रस्थाश्रम। १६. सन्यासाश्रम।

विद्या *—ज्ञान। तत्वबोध। बोध। शिक्षा। शास्त्र। यथार्थज्ञान।

व्यसन †—टेव। लत्। बान। आसक्ति। अभ्यास। खोटी आदत।

बहाना—व्याज। मिष (मिस)। छल। कपट।

कला ‡—कारीगरी। शिल्पनैपुण्य। शिल्पकर्म।

---

* विद्या १८ प्रकार की मानी गई है। यथा—१. शिक्षा। २. कल्प। ३. व्याकरण। ४. निरुक्त। ५ ज्योतिष। ६. छन्द। ७. ऋग्वेद। ८ यजुर्वेद। ९ सामवेद। १० अथर्वणवेद। ११. मीमांसा। १२. न्याय। १३ धर्मशास्त्र। १४. पुराण। १५ आयुर्वेद। १६ धनुर्वेद। १७ गान्धर्व वेद। १८ अर्थशास्त्र।

† व्यसन १८ प्रकार के होते हैं। यथा—१. मृगया, २ जुआ खेलना, ३. दिन में सोना, ४. दूसरे का दोष कहना, ५. स्त्रियों में आसक्ति, ६. नशेबाजी, ७. बाजा बजाना, ८. नाचना, ९ गाना और १०. व्यर्थ घूमना। ये दस कामज व्यसन हैं। तथा ११. चुगलीखाना, १२ दुस्साहस, १३ द्रोह, १४ ईर्ष्या, १५. असूया (द्वेष), १६. दूसरे की वस्तु हरण १७ कटुभाषण और १८ अत्यन्त ताड़ना देना। ये आठ क्रोधज व्यसन हैं।

‡ कला के ६४ भेद हैं। यथा—१ गायन (गीत)। २ वाद्य (बजाना)। ३ नृत्य (नाचना)। ४. चित्रकारी। ५. तिलक काढ़ना। ६ तण्डुल कुसुमावली (चावलों से पुष्पादि काढ़ना)। ७ पुष्पातरण (पुष्प का शृङ्गार रचना)। ८ अङ्गराग (शृङ्गार)। ९ मणिभूमिका कर्म (सोने के लिये स्थान रचना)। १०. शयन रचना। ११. उदक वाद्य (जलतरंग आदि बाजे)। १२. उदकाघात (पिचकारी छोड़ना)।

सुगन्धि—सौरभ। सुगन्ध। परिमल। आमोद। सद्गन्ध। खुशबू।

---

१३. चित्र योग (प्रकृति में रासायनिक परिवर्त्तन)। १४. माल्य ग्रन्थन। १५. शेखरक (बाल गूँथना), आपीड (चोटी गूँथना)। १६. नेपथ्य-प्रयोग। १७. कर्णपत्रभङ्ग। १८. गन्धयुक्ति। १९. अलङ्कारयोग (आभूषणादि धारणविधि)। २०. ऐन्द्रजाल (जादूगरी)। २१. कौचुमार योग (स्वरूप रचना)। २२. हस्तलाघव (शीघ्र काम करना) २३ सूपकर्म (रसोइयादारी)। २४. पानकादि भोजन (रस, शर्बत, आसव आदि बनाना)। २५ सूचीकर्म (सिलाई का काम)। २६. सूत्रक्रिया (कसीदा काढ़ना)। २७. वीणा–डमरू वाद्य। २८. प्रहेलिका। २९ प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी)। ३०. कूटक-योग (कूट शब्दों का प्रयोग)। ३१. पुस्तक-वाचन (स्वर सहित पुस्तक पढ़ना)। ३२ नाट्यकला। ३३. समस्यापूर्त्ति। ३४. पट्टिकावान विकल्प (मेज-कुरसी-पलंग आदि बीनना)। ३५. तक्ष कर्म। (मरम्मत करना)। ३६. तक्षण (बढ़ई का काम)। ३७. वास्तुकर्म (गृह-निर्माण-कला)। ३८. धातुपरीक्षा (सोना, चाँदी आदि परखना)। ३९. धातुवाद (विविध धातुओं का मिश्रण)। ४०. मणिरागज्ञान (रत्नादि का ज्ञान)। ४१. वृक्षायुर्वेद योग (बागवानी)। ४२. सजीव द्यूत (तीतर, बटेर, मुर्ग, मेढ़ा आदि लड़ाना)। ४३. शुक-सारिका प्रलापन (चिड़ीबाजी)। ४४. उत्सादन (तैलमर्दन आदि)। ४५. अक्षर मुष्टिकाकथन (संक्षेप में बातचीत करना)। ४६. म्लेच्छित विकल्प (साङ्केतिक अर्थ समझना)। ४७. देश भाषा विज्ञान। ४८. पुष्प-शकटिका। ४९. निमित्त ज्ञान (शुभाशुभ ज्ञान)। ५०. यन्त्रमंत्रिका। ५१. धारणमंत्रिका। ५२. सम्पाद्य। ५३. मानसी। ५४. काव्यक्रिया। ५५. अभिधान कोष। ५६. छन्दोज्ञान। ५७. क्रियाकल्प। ५८. छलित (ठगी)।

दुर्गन्धि—दुर्गन्ध। दुष्टगन्ध। पूतिगन्ध। पूतिगंधि। पूति।

निश्चय—निर्णय। निर्णयन। निचय। ठीक। तय। पक्का। सिद्ध।

सिद्धान्त—राद्धान्त। दृढ़सम्मति। पक्की राय। दृढ़मत। स्थिरमत। प्रधान लक्ष्य। (उसूल)।

स्वीकार—अङ्गीकार। (मंजूर)। ग्राह्य। मान्य।

पवित्रता—शुचित्व। शुचिता। शौच। शुद्धता। पूतत्व। स्वच्छता। अदूषण। निर्दोषत्व। निर्दोषिता। निर्मलता।

मधुर शब्द (शब्दप्रयोग में)—मृदुवचन। सुभाषण। मञ्जुभाषा। सुवाणी। सुवचन।

अपभ्रंश—भ्रष्ट। ग्राम्य। प्राकृत। ठेठ।

पर्याय—आवृत्त। आनुपूर्वी। अनुक्रम। परिपाटी। प्रकार। एकार्थ। एकार्थबोधक (वाचक)। समानार्थक।

विपर्यय—व्यतिक्रम। विपर्य्यास। व्यत्यास। व्यत्यय। विपर्य्याय। उलटफेर। विपरीत। अयन। प्रतिकूल।

ओंकार—प्रणव। बीजमन्त्र। वेदमाता। आद्या।

इतिहास—इतिवृत्त। प्राचीनकथा। पुरावृत्त। पूर्ववृत्तान्त। पुराण।

प्रबन्ध—निबन्ध। लेख। रचना।

आख्यान (कथा)—कथा। कहानी। किस्सा। वृत्तान्त। वर्णन। बयान।

---

५९ वस्त्रगोपन। ६०. द्यूतक्रीडा। ६१ आकर्ष क्रीडा (चौपड़ पासे)। ६२. बालक्रीडनक। ६३. वैनयिकी (नम्रता)। ६४. वैजयिकी वा व्यायामकी (लडाई, कुश्ती, कसरत आदि)।

आख्यायिका *—उपन्यास। प्रसिद्ध कथा।

पहेली—प्रहेलिका। प्रवल्लिका। प्रवल्ली। प्रहेली। प्रश्नदूती।

गल्प—उपकथा। गप्प। छोटी कहानी।

चाटुकारी—चापलूसी। लल्लोपत्तो। अनुनय। स्तुति। (खुशामद)।

संगीत—गान। गाना। गायन। गेय। कीर्त्तन।

राग †—ध्वनि। लय।

नाच ‡—नृत्य। लास्य। नर्त्तन। तांडव। नृति। नटन। नृत। लास। लास्यक।

प्रतिध्वनि—प्रतिशब्द। झाँई। प्रतिनाद। प्रतिश्रुत। प्रतिध्वान।

विदित—अवगत। व्यक्त। प्रतिपन्न। प्रकट (प्रगट)। (जाहिर)। ज्ञात।

---

* वह कथा जो पुराणादि के आधार पर रची गई हो। जिस आख्यान में पात्र भी अपने मुँह से अपना कुछ २ वर्णन करता है, उसे "आख्यायिका" कहते हैं।

† किसी ध्वनि में बैठाये हुये स्वर जिनके उच्चारण से गान होता है, 'राग' कहलाता है। भरत के मत से राग ६ प्रकार के हैं। यथा—१. भैरव, २. कौशिक, ३. हिन्दोल, ४. दीपक, ५. श्री, ६. मेघ।

‡ पुरुष के उद्धत नाच को 'ताण्डव और स्त्रियों के नाच को 'लास्य कहते हैं। भाव बतलाते हुये नाच को 'नृत्त' तथा ताल-स्वरके आधार पर नाचने को नृत्य कहते हैं। —"सङ्गीत दामोदर"

नाटक *—रूपक । प्रहसन । नाच-गाना । नृत्यसंगीतादि । दृश्य-काव्य । प्रदर्शन । नाट्यकलाप्रदर्शन ।

सेवा—परिचर्या । चर्या । शुश्रूषा । टहल । (खिदमत) । चाकरी । नौकरी ।

विघ्न—व्याघात । अन्तराय । प्रत्यूह । विघात ।

व्यर्थ—बेकाम । निष्प्रयोजनीय । निरर्थक । निष्फल । बादि । मोघ । वृथा । अकाम । निष्काम । अकारथ । असार ।

प्रतिज्ञा—पण । प्रण । संविद् । पैज । वचन । प्रतिज्ञात । नियम । आश्रव । संश्रव । प्रतिश्रय । नेम । करार । कौल ।

संयोग—मेल । मिलाप । साथ । संग ।

वियोग—बिछोह । विरह । विप्रलम्भ । विप्रयोग । जुदाई ।

प्रकार—भेद । सादृश्य । किस्म ।

---

* नाटक—किसी रङ्गमञ्च पर पात्र और पात्रियों द्वारा दृश्यकाव्यानुसार किया जाने वाला अभिनय नाटक वा रूपक कहलाता है । यह १० प्रकार का होता है । १. नाटक, २. प्रकरण, ३. भाण, ४. व्यायोग, ५. समवकार, ६. डिम, ७. इहामृग, ८. अंक, ९. वीथी १०. प्रहसन ।

इसी प्रकार उपरूपक के १८ भेद होते हैं—१. नाटिका, २ त्रोटक, ३. गोष्ठी, ४. सट्टक, ५. नाट्यरासक, ६, प्रस्थानक, ७. उल्लाप्य, ८, काव्य, ९. रासक, १०. प्रेंखण, ११. संल्लापक, १२. श्रीगदित, १३. शिल्पक, १४. विलासिका, १५ दुर्मल्लिका, १६. प्रकरणिका, १७. हल्लीश, और १८. भाणिका ।

रूपक और उपरूप के ये भेद भी 'नाटक' के पर्य्याय हो सकते हैं ।

शोभा—दीप्ति। कान्ति। छवि। द्युति। द्युती। छबि। अभिख्या। शुभा। भा। श्री। भासा। सुषमा। छाया। विभा। भाति। कमा। रमा। आभा। रुचि। रोचिष। प्रभा। त्विष। छटा। सुन्दरता। चमक। दमक।

श्रीहत—कान्तिहीन। प्रभाहीन। अप्रभ।

संकेत—प्रज्ञप्ति। परिभाषा। शैली। आकार। उदाहरण।

[नोट—गुप्तस्थान को भी संकेत कहते हैं जिसका पर्य्याय "सहेट, अँगोट, एकान्त, निर्जन" है।]

अतिरिक्त—समधिक। अधिक। सिवाय। अलावा।

समता—साम्य। समत्वभाव। एकता (ऐक्य, एकत्व)। समैक्य। बराबरी। जोड़तोड़।

विषमता—असाम्य। अनैक्य। अनेकता। बेमेल। बेजोड़। वैषम्य। छिट-फुट।

बलात्कार—हठात्कार। हठ। बलप्रयोग। प्रसभ।

[नोट—आजकल 'बलात्कार' शब्द का प्रयोग किसी स्त्री के सतीत्व को जबरदस्ती भ्रष्ट करने के अर्थ में किया जाता है।]

उपहार—पुरस्कार। भेंट। उपायन। उपढौकन। प्राभृत। प्रदेशन। उपग्राह्य। उपदा।

विस्मय—आश्चर्य। अचरज। विचित्रता। संभ्रम।

उल्लंघन—विरोध। अवमानना। अतिक्रमण। व्यत्ययन। व्यतिक्रमण।

प्यार—मनुहार। दुलार। स्नेह। प्रीति। प्रेम।

प्रतीक्षा—आसरा । (इन्तज़ारी) । राह देखना । अपेक्षा । बाट जोहना ।

प्रभाव—प्रताप । रोबदाब । तेज । असर । शक्ति ।

प्रस्ताव—निवेदन । प्रसङ्ग निवेदन । अवसर । प्रसङ्ग । स्तुति । कथन । प्रकरण । वृत्तान्त निवेदन । कथानुष्ठान ।

परिस्थिति—दशा । अवस्था । अवसर । (मौका) । समय । हालत ।

अन्वेषण—जाँच । खोज । अनुसन्धान । गवेषण । अन्वेषण । परीष्टि । पर्य्येषण ।

[नोट—खोज करने वाले व्यक्ति को 'अन्वेष्टा' कहते हैं जिसका पर्य्याय है—'आनुपद्य' ।]

कुण्ठित—मन्द । हीन । संकुचित ।

व्यङ्ग्य—उलटा । टेढ़ा । ताना ।

घूस—उत्कोच । प्राभृत । ढौकन । लम्बा । कोशलिक । उपाचार । प्रदा । आनन्दा । हार । ग्राह्य । अयन । उपदानक । अपप्रदान ।

विपरीत—उत्क्रम । व्यतिक्रम । अक्रम ।

समर्थन—मण्डन । अनुमोदन । पोषण । संप्रधारण ।

फुटकर—पृथक्-पृथक् । भिन्न-भिन्न । छिट-फुट ।

तन्मय—लीन । तल्लीन । दत्तचित्त । लवलीन ।

लक्ष्य—निशाना । उद्देश्य ।

शैली—ढंग। ढब। चाल। परिपाटी। प्रणाली। तरीका।

क्लिष्ट—दुस्तर। कठिन। संकुल। पराहत। क्लिषित।

उजाला—प्रकाश। दीप्ति। द्योत। आतप। प्रभा। विभा। आलोक। तेज। ओज। त्विषा।

अन्धेरा—अन्धकार। अप्रकाश। ध्वान्त। तमिस्र। तम। तिमिर।

[व्यापक अन्धेरा = सन्तमस। महान्धकार = अन्धतमस। अल्पान्धकार = अवतमस।]

बदला (अपकार के बदले अपकार)—प्रतिशोध। वैरशुद्धि। वैरनिर्यातन। चिकित्सा। कसर। खार चुकाना। वैर।



५. रोगादि वर्ग

रोग—रुज। गद। उपताप। व्याधि। आमय। आम। अपाटव। आतङ्क। भय। उपघात। भङ्ग। अर्ति। तमोविकार। क्षय। अनार्जव। मृत्यु-भृत्य। मान्ध। आकल्प।

ज्वर—जूर्ति। आतङ्क। महागद। रोगप्रष्ठ। ताप। तापक। सन्ताप। जूड़ी। (बुखार)।

दोष—पाप। अपराध। विकार।

[नोट—वात-पित्त-कफ, ये ही प्रधान दोष माने गये हैं, जिनके विकृत हो जाने पर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है। इन तीनों दोषों को 'त्रिदोष' कहते हैं।]

दाह—जलन। तपन।

शीत—ठण्ड। सरदी। जाड़ा।

पीनस—नाकड़ा। प्रतिश्याय। (जुकाम)।

[नोट—जुकाम के बिगड़ जाने से नाकड़ा हो जाता है। इसमें गाढ़ा जुकाम होकर दुर्गन्धि पैदा कर देता है। कुछ काल के अनन्तर घ्राण-शक्ति भी नष्ट होने लगती है।]

क्षय—छई। यक्ष्मा। राजयक्ष्मा। दिक। तपेदिक। शोष। रोगराज। गदाग्रणी। उष्मा। अतिरोग। नृपामय।

खाँसी—कास। क्षवथु।

सूजन—शोथ। शोफ। श्वयथु। सूज।

बेवाई—बेवाय। बिमाई। पादस्फोट। विपादिका। स्फुटी। स्फुटि। पादस्फोटी।

सेहुआ—सिध्म। किलास।

[नोट—सात प्रकार के महाकुष्ट रोग के अन्तर्गत एक प्रकार का कुष्ट रोग, जिसमें शरीर का ऊपरी चमड़ा निकल जाता है और चकत्ते पड़ जाते हैं।]

शीतला—चेचक। माता। विस्फोट। मसूरिका। पापरोग। रक्तवटी। मसूरी। वसन्तरोग।

दाद—दिनाय। पामा। दद्रू। विचर्चिका। पाम। खसरा।

खाज—खुजली। कंडू। खर्जू।

[नोट—दाद, खाज, खसरा, उकवत, अपरस, सेहुँआ, अगियासन् आदि कुष्ठ के अन्तर्गत रोग हैं। इनके रोगी को सूर्य भगवान की उपासना पूजा आदि करनी चाहिये। रूक्ष और क्षारयुक्त (नमकीन) भोजन का त्याग तथा सादा, अलोना और स्निग्ध भोजन का ग्रहण श्रेयस्कर है।]

फोड़ा (फुन्सी)—फोट। विस्फोट। फुड़िया। पिटक। पिटका। विटक। विटका। स्फोट। स्फोटक। ईर्म।

घाव—व्रण। चीरा। ईर्म। अरुस।

पीब—क्षतज । मलज । पूयन । प्रसित । पूय ।

कोढ़—कुष्ट । फूल । कोठ । मण्डलक । व्याधि । वाप्य । पारिभव्य । पाकल । उत्पल ।

फील-पाँव—श्लीपद । पादवल्मीक । हाथी पाँव ।

सोजाक—पूयमेह । मधुमेह ।

बवासीर—बयेसी । अर्श । दुर्नामक । दुर्नाम । गुदकील । गुदाङ्कुर । अनामक ।

पथरी—अश्मरी ।

मृगी—अपस्मार । अङ्गविकृति । लालाध । भूतविक्रिया ।

उपदंश (गर्मी)—अवदंश । गरमी । (आतशक) । फिरंग रोग ।

अतिसार—अन्नगन्धि । उदरामय । अतीसार । (पेचिश) ।

आँव—आम । मलवैषम्य रोग । आमातिसार ।

[नोट—शरीर में आम पक जाने पर जब सारे शरीर में शोथ हो जाता है, तब उसे 'आमवात' कहते हैं) ।

संग्रहणी—प्रवाहिका । ग्रहिणी । गुध्वाहि ।

वमन—कय । प्रच्छर्दिका । छर्दि । वमि । वमथु । ओकलाई ।

कब्ज—मलावरोध । मलबद्ध । कोष्ठबद्ध ।

प्रमेह—मूत्रदोष । बहुमूत्र ।

मन्दाग्नि—अल्पाग्नि ।

अजीर्ण—अपच। अन्पच।

हैजा—विसूची। विसूचिका। विशूचिका। महाजीर्ण।

कामला—पाण्डु। कँवल। काँवला।

[नोट—इस रोग मे यकृत (पिलही) बढ़ जाती है। अग्नि मंद हो जाने से रस का शुद्ध पाक नहीं होता। शरीर पीला पड़ जाता है। आँख के कोये भी पीले हो जाते हैं। जब थूक, मूत्र तक पीले रंग के हो, तब इस रोग का उग्र रूप जानना चाहिये।]

श्वास—साँस। (दमा)।

क्षीणता—दुर्बलता। कृशता। सुखंडी।

तृष्णा—(देखो 'प्यास' शब्द—'मनुष्यवर्ग' पृष्ठ १६१)

मूर्छा—(देखो 'मूर्छा' शब्द,—भावादि वर्ग पृष्ठ १९७)

मूत्रकृच्छ्र—कड़क।

आमवात—आँव बात।

हिस्टीरिया (अं०)—अपतंत्रक। मूर्च्छा।

आक्षेपक—शून्य वायु।

उदावर्त्त—गुदग्रह। [मल-मूत्र-वायुरोधक रोग]

आँतवृद्धि—अन्त्रवृद्धि। पानी उतरना। आँत उतरना। फोता बढ़ना।

गण्डमाला—गलगण्ड। कंठमाला।

अर्बुद—मांसकील। मांस पुरुष।

[छोटे अर्बुद को 'इझ्झ' वा 'गोखरू' कहते हैं]

शूकरोग—लिङ्गवृद्धि रोग।

अम्लपित्त—मचली। जी मचली। (मतली)।

विसर्प—विसर्पि। सचिवामय।

मुखपाक—पाका। मुँहपाका। निनावाँ। छाला।

गंज रोग—इन्द्रलुप्तक। इन्द्रलुप्त। केशघ्न। केशनाशक रोग।

शिर-पीड़ा—सिर दर्द। आधीसीसी। अधकपारी।

[नोट—आधे सिर की पीड़ा दो प्रकार की होती है एक तो जो प्रातः आरम्भ होकर सायंकाल को समाप्त होती है उसे 'सूर्यावर्त्त' और दूसरी जो सायंकाल को प्रारंभ होकर रातभर रहती हुई प्रातः जाती है, उसे 'चन्द्रावर्त्त' कहते हैं।]

प्रदर—स्त्रीरोग। विदार। क्षीणता। धातुक्षय।

[यह रोग 'श्वेत प्रदर' और 'रक्त प्रदर' नाम से दो प्रकार का होता है।]

गुल्म—वायुगोला। रजोग्रन्थि। गोला।

योनिकन्द—योनिस्राव। योनिभङ्ग। योनिव्रण।

स्तनपाक—थनैल।

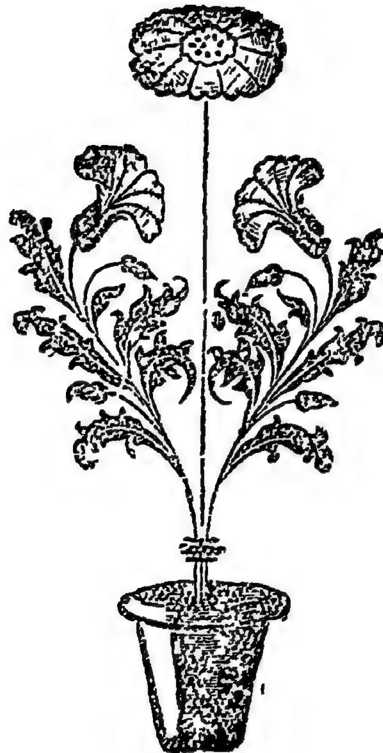
सूतिका रोग—प्रसूति ज्वर।

पूतना—दुर्दर्शना। दुर्गन्धा। मेघकालिका। बालमातृका।

[नोट—यह रोग छोटे बालको को तीसरे दिन, तीसरे महीने वा तीसरे वर्ष होता है। इसमें प्रायः बच्चे नहीं बचते।]

पक्षाघात—पक्षघात। शून्यवात (सुन्नबाई)। लकवा। (फालिज)।

[नोट—इस रोग में शरीर का एक अंग दहिना वा बायाँ शून्य हो जाता है। शिरा, स्नायु के रक्त का शोषण होकर सन्धियों में चर्बी का नाश हो जाता है। सन्धियों की संचालन-क्रिया बन्द हो जाती है। धीरे धीरे वह अंग शिथिल और अचेतन होने लगता है। इस रोग के विशेष प्रकोप से मृत्यु तक सम्भव है। कहा जाता है, यह रोग भयंकर पापों का फल है।]



६. भोजनादि वर्ग

उपकरण—सामग्री। सामान। उपकारक द्रव्य। परिच्छद। तन्त्र। परिवर्ह।

[नोट—किसी कार्य-विशेष के लिये उपयुक्त सामग्रियों को उपकरण कहते हैं। जैसे भोजन के लिये भोजन पदार्थ, भोजन पात्रादि; राजा के लिये छत्र-चामरादि; रोगी के लिये औषधि-अनुपानादि।]

भोजन *—आहार। अशन। स्वदन। निगर। निघस। विघस। जेमन (जेवन)। भक्षण। खाना।

---

* (क) रस-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है—१. मधुर (मीठा), २. लवण (नमकीन); ३ त्तिक्त (तीता), ४. कषाय (कसैला जैसे आँवला आदि); ५. कटु (कड़ुवा जैसे नीम, कड़वी लौकी आदि); ६. अम्ल (खट्टा)।

(ख) पदार्थ-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है। यथा १. भक्ष्य (जो निगल कर खाया जाय, जैसे हलुवा, खीर, मलाई आदि); २. भोज्य (जो दाँतों से कुचल कर खाया जाय, जैसे दाल-रोटी, पूरी आदि); ३. चर्व्य (जो चबा कर खाया जाय, अर्थात् खाने की सूखी वस्तु जैसे चबैना, दालमोठ, माठ, मठरी आदि); ४. चोष्य (जो चूस कर खाया

दाल—पहित । पहिती । सूप ।

भात—भक्त । अन्न । ओदन । चाँवल । भिष्मा । भिस्सा ।

माँड—मासर । आचम । निश्राव । मण्ड ।

कढ़ी—तेमन । निष्ठान । कलायल (करायल) । कथित । परेह । परोह ।

रोटी—चपाती । बेली । फुलकी (फुलका) । पनेथी (हाथ की बनी मोटी रोटी) । रोट (बड़ी रोटी) । करपट्टिका ।

लिट्टी वा बाटी—अंगार कर्कटी । टिकरी । टिक्कड़ ।

पूरी—पूड़ी । सोहारी । पूलिका । शष्कुली ।

कचौरी—माषगर्भा-शष्कुली । माषगर्भा ।

हलुआ—सीरा । मोहनभोग । लप्सिका । लपसी ।

मालपुआ—मल्लपूप । पूआ । पूप । पिष्टक । अपूप ।

पोलाव—पलान्न । पुलाक । पुलाव । मांसोदन ।

तरकारी—भाजी । शाक । सालन ।

खीर—क्षीर । पायस ।

मीठाभात—गुडान्न । बखीर ।

सिखरन—श्रीखण्ड । रसाला । मार्जिता । शिखरिणी ।

चबैना—चर्वण । चर्व्य । चबैनी । दाना (भुना हुआ) ।

जाय, जैसे आम, सँहिजन की फली, ईख आदि), ५. लेह्य (जो चाट कर खाया जाय, जैसे सिरका, चाशनी, शहद, चटनी, आदि); ६. पेय (जो पिया जाय, जैसे दूध, शर्बत आदि) ।

लावा—लाजा। खील। धान-खील। अक्षत।

चिउड़ा—चिपिटक। पृथुक। चिउरा। चीड़ा। चिपिट।

चटनी—लेह्य। लेहन पदार्थ। खांडव (नौरतन-चटनी)। रसाला। मार्जिता। चक्षण।

रायता—रायतो। राजिकाक्त। मार्जिता।

अचार—सन्धान। संधितद्रव्य। सन्धित।

मुरब्बा—राग खांडव। पाग।

पन्ना—पानक। पना।

फुलौरी (पकौड़ी)—बटिका। चाणकी।

[नोट—पत्तो की पकौड़ी = रिकवँच, रिकूछ, रकूछ, पतौड़।]

बरी—बटी। मार्षेडरी। बटिका।

मुंगौरी—मुद्गबटी। मुद्गबटिका। माषरंगी।

घुंघुरी—कुल्माष। छोला।

बड़ा—बटका। बरा। बारा। पिष्टक। पिष्टबटका। पूप।

इमली के पन्ना का बड़ा—पानक-बटका।

दही-बड़ा—तक्र-बटका।

[नोट—इसी प्रकार सूरन के बड़े को 'सूरण-बटक', कुम्हड़े के बड़े को 'कूष्माण्ड-बटका' कहते है।]

पापड़—पर्पट। चरक।

भरता—भरित्र। चोखा।

चिखना—[मद्यपानादि के बाद रोचक भक्ष्य पदार्थ]—मद्यपाशन। चक्षण। चखना। चाट। चटपटा।

पराठा—प्रामृठे। पोलिका। परोठा। परावठा। चौपती।

बेढ़ई—बेढ़मिका।

[नोट—उड़द या चने की पीठी भर कर जो रोटी तैयार की जाती है, उसे बेढ़ई कहते हैं।]

पूरन-पूड़ी (मीठी पूड़ी)—पूर्णपूलिका। पूरनपोली। पूर्णगर्भापूलिका।

सेवईं—सैंमई। सेविका।

अनरसा—इन्दुरसा। अँदरसा। शालि-पूप।

गुझिया—संयाव। गूझा। पेड़किया।

खाजा—खजला। खाझा।

चूरमा—चूरमोदक।

जलेबी—कुंडलिनी। गुड़ूची। जिलेबी।

लड्डू—मोदक। बिन्दुमोदक।

मोतीचूर के लड्डू—मुक्तामोदक।

मूँग के लड्डु—मुद्गदल। मगदल। मगद। मुद्ग-मोदक।

फेनी—फेनिका। सूतफेनी।

घेवर—घृतपूर। घृतवर। घार्तिक।

गुलाबजामुन—दुग्धकूपिका।

शक्करपाला—खुरमा। सकरपाला। शंखपाल।

खिचड़ी—कृशरान्न। कृशरा।

सत्तू—सक्तू। सतुआ (सतुवा)।

ह्राबुस—ओलंबी।

[नोट—गेहूँ, जौ, चने, आदि की अधपकी फलियाँ भून कर फिर उसकी भूसी साफ करके तैयार करते हैं उसे 'हाबुस' कहते हैं ।]

बघार—छौंकन । वासित । छौंक ।

कौर—कवल । ग्रास ।

बटुआ—पिठर । बटलोही । स्थाली । उखा । उषा । कुण्ड । हण्डीष ।

तवा—पिष्टपचन । ऋजीष । ऋचीष । तव । पृष्ठिपच ।

कड़ाही—कढ़ाही । टोकनी ।

कलछी—करछुलि । दर्वी । कम्बी । खजाका । चमचा । कलछुल । करछुल । कर्छी ।

काठ की कलछी—तर्दू । दारुहस्तक ।

कटोरा, कटोरी—खोरा । पानपात्र । कंस (कंश) । कांस्य । खोरवा ।

करवा (लोटा)—गडुआ । कर्करी । आलु । आल । आरु । गलन्तिका । लोटा ।

गिलास—जलपात्र । लुटिया । (आबखोरा) । खोरिया ।

घड़ा (गगरी)—घट । कुम्भ । कुट । निप । घटी । कलश । कलशी । कलसा ।

घड़े का ढक्कन—शराव । सरवा । कसोरा । परई । मलैया ।

मटका-(कूंडा)—कमोरा । मटकी । मणिक । अलिजर । अलंजर ।

थाली—भोजनपात्र। टाठी। थाल। थारी।

चकला—चौका। होरसा।

पथरी—पथरौटा।

सिल—सिलौटी।

बट्टा—लोढ़ा। लोढ़िया। बटिया।

झरना—पौना। झन्ना।

कठवत—कठौती। कठौता।

बरतन—पात्र। भाण्ड। अमत्र। भाजन। बासन। आवपन।

तेल की कुप्पी—कुतू। कुतुप। स्नेहपात्र।

चौकी—चतुष्की। तख्ता। तख़त।

पीढ़ा—पिढ़ई। आसन। पीठ। पाटा।

सूप—शूर्प। प्रस्फोटन। फटेकन। बेरमा।

चलनी—चालनी। तितऊ। अँगिया।

ओखली—उलूखल। उदूखल। ऊखल। ओखरी।

मूसल—मुषल। मूसर।

चूल्हा—चुल्ली। उष्मान। उद्धार। अश्मन्त। अन्तिका। अधिश्रयणी। अन्दिका।

चक्की—जाँत। चकिया। चकरी। जाँता।

दौरा-दौरी—पिटक। पेटक। पिट। काण्डोल। कुरई। डेलवा।

झाँपी—कट। किलिञ्जक। करंडा। पेटारा। पेटारी। सोना। मोनियाँ।

अँगेठी—अंगारधानिका। हसन्ती। हसनी। अंगारधानी। अंगारशकटी।

लुआठ (जलती हुई लकड़ी)—लुकाष्ठ (लुकाठ)। अलात। उल्मुक।

खपड़ी (चबैना भूनने का पात्र)—अम्बरीष। भ्राष्ट्र। खपरा। कड़ाह।

भट्टी (भाड़)—कन्दू। स्वेदनी (शराब चुआने की भट्टी)। भाड़।

उपला (कंडा)—गोहरा। गोहरी। कंडा। उपरी। चिपरी। करीष।

राख—क्षार। छार। (खाक)।

जूठा भोजन—उच्छिष्टान्न। उच्छिष्ट। फेला। फेली। जूठन।



७. वस्त्राभरण वर्ग

उबटन—उद्वर्त्तन। चिक्कस (चीकस)। उच्छादन। उत्सादन। बुकवा।

तैलमर्दन—अभ्यङ्ग। स्नेहन।

स्नान—आप्लाव। आप्लव। नहाना (न्हाना)।

चन्दनादिलेपन—चर्चा। चार्चिक्य। विलेपन।

महावर—लाक्षा। आलक्तक (आलता)। जतु। याव। जावक। जतुरस। राग। जननी। सम्पद्या। अलक्तक। चक्रवर्त्तिनी।

पुष्पमाला—माला। मालिका। स्रक्।

[नोट—चोटी मे लपेटी माला = आपीड़। शेखर।]

वस्त्र—कपड़ा। आच्छादन। वास। चैल। चेल। वसन। अंशुक। पट। परिधान। अंबर। दुकूल। चीर। निचोल। कर्पट।

रेशमी-वस्त्र—पाटपट। पाटम्बर। कौशेय दुकूल। कृमिकोशोत्थ। कोसा।

ऊनी-वस्त्र—रोम-पट । राङ्कव ।

नया-वस्त्र—नवाम्बर । कोरा कपड़ा । मड़िहारा कपड़ा । नूतन पट । तन्त्रक । निष्प्रवाणि ।

छालटी—वल्कल-वस्त्र । क्षौमी । शाण (सन के बने हुये कपड़े) । दुकूल ।

धोया-वस्त्र—स्वच्छ वस्त्र । धौत वस्त्र । उद्गमनीय ।

पुराना-वस्त्र—जीर्ण वस्त्र । पटच्चर ।

मोटा-कपड़ा—स्थूल शाटक । गज्जी । मोटऊ ।

फटा-कपड़ा—चिथड़ा । कर्पट । नक्तक । गूदड़ ।

पगड़ी—पाग । पगिया । मुरैठा । सेला । साफा । समला ।

दुपट्टा (चादर)—दुकूल । चादर । प्रावर । प्रावार । उत्तरासंग । बृहतिका । संव्यान । उत्तरीय । उपवस्त्र । बृहती ।

जामा—अँगरखा । कुरता ।

धोती—अधोंशुक । परिधान । अन्तरीय । उपसंव्यान । [जनानी धोती = साड़ी ।]

फतुही—बनियान । गंजी । बंडी । सदरी । कुरती ।

चोली—अँगिया । चोलिया । छोटा कपड़ा । खण्ड । चोल । कूर्पासक ।

कमरबन्द—कटि-फेट । फेटा । पटुका । इजारबन्द ।

लहँगा—आप्रपदीना । आप्रपदीन । चण्डातक । पटवास ।

रजाई—नीशार । ओढ़ना । (लिहाफ़ ।)

[नोट—ऊनी कम्बल को 'रल्लक' कहते हैं ।

मोती का हार—मुक्ताहार। उरसूत्रिका। हार मुक्तावली।

नत्थ—नकबेसर। बेसर। नथिया। नथुनी (छोटी नथ)।

नाक की कील—फूल। लौंग। कील।

बिजायठ—बाजूबन्द। केयूर। अंगद। भुजबन्द।

पहुँची—वलय। कटका। पारिहार्य। आपावक। प्रकोष्ठाभरण।

कड़ा वा कंकण—कंकण। करभूषण। कंगन (कँगना)।

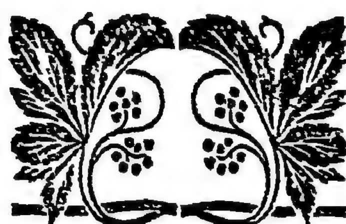
अँगूठी—अंगुलि-मुद्रा। अंगुलीयक। ऊर्मिका। मुद्रा। मुँदरी। गोल। छल्ला।

करधनी—मेखला। कांची। सप्तकी। रसना। शृंखला। किङ्किणी। क्षुद्रघंटिका।

घुँघुरू—किंकिणी। क्षुद्रघण्टिका।

पायजेब—पादकण्टक। हंसक। मंजीर। मंजील।

नूपुर—बिछिया। गुँगिया। छल्ला। गूँगी। पादांगुद। हंसक। पादकटक। मञ्जीर। तुलाकोटि।



८. ब्रह्मचारी वर्ग

पुस्तक—पोथी । किताब । ग्रन्थ । पुस्तिका ।

पत्रा—पन्ना । पत्र । (वर्क़) । कागज़ । कागद ।

क़लम—लेखनी ।

स्याही—काली । मसि । रोशनाई । मेला । अञ्जन । पत्राञ्जन । रञ्जनी । मलिनाम्बु । मशी ।

दावात—मसिपात्र । मसिदानी । मसिधानी । मसिमणि । मस्याधार । मेलान्धु । वर्णकूपिका । मेलानन्दा । मसिधान । मसिकूपिका । बोरकना ।

पटिया—तखती । पट्टी । पाटी । पट्ट ।

काला तखता—श्याम-पट्ट । श्याम-पट । असित-पट्ट ।

नकशा—मान चित्र । देश चित्र । राष्ट्र चित्र ।

अध्ययन—पठन । पढ़ना । अभ्यसन । स्वाध्याय ।

अध्यापन—पाठन । पढ़ाना । निपाठ । शिक्षण ।

मनन करना—गुनना । बोध करना (होना) । अवधारण करना । अभ्यास करना । हृदयङ्गम करना । चिन्तन करना ।

हवन—(देखो स्वर्गादिवर्ग 'यज्ञ' शब्द पृष्ठ १९)

शाकल्य—शाकला। हवि। सान्नाय।

आचमन—उपस्पर्श। आचम। शुचिप्रणी।

प्रणाम—नमस्कार। अभिवादन। पादग्रहण। चरण स्पर्शन। पायलागन। दण्डवत्।

भूमिपर सोनेवाले—भूमिशायी। स्थण्डिल।

ब्रह्मचारी का दण्ड—(पलास का दण्ड) = आषाढ़। (बाँस का दण्ड) = राम्भ। वैणय। वेणुदण्ड।

ब्रह्मचारी का पात्र—कमण्डलु। कमण्डल। कुण्डी। पञ्चपात्र।

मृगचर्म—अजिन। चर्म। कृत्ति।

नित्य-कर्म—यम।

[नोट—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और ब्रह्मचर्य—इनको यम कहते हैं।]

संस्कार-भ्रष्ट—व्रात्य। संस्कारहीन।

जनेऊ—उपवीत। यज्ञोपवीत। यज्ञसूत्र। ब्रह्मसूत्र।

कौपीन (लंगोटी)—कछनी। कच्छा। धटी। कक्षा। लँगोट। लँगोटी। काछा। भगई। भगवा। (फा० कफनी)।

आसन—(देखो भोजनादि वर्ग 'पीढ़ा' शब्द पृष्ठ २२२)।

मुण्डन कर्म—क्षौर। भद्राकरण। वपन।

होम का ईंधन—समिधा।

पवित्री—पैंती। कुशमुद्रिका। कुसपैंती।

[नोट—कुश के दलों की बनी हुई मुद्रिका जो श्राद्ध तर्पणादि में अनामिका में धारण की जाती है।]

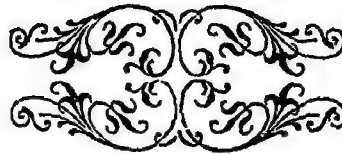
विवाह *—परिणय। उद्वाह। उपयाम। पाणिपीड़न। पाणिग्रहण। दारकर्म। उपयम। करग्रह। निवेश। ब्याह। शादी। मँगनी। सगाई। कुड़माई। परिभवन।

वर (बर)—दुलहा (दूल्हा)। (नौशा)। बर।

[नोट—सम्बन्धी वर्ग पृष्ठ १७५ 'पति' शब्द के पर्य्याय वाले सभी शब्द इसके पर्य्याय हो सकते हैं।]

बरात (बारात)—वरयात्रा। जनेत।

बराती—वरयात्री। जनेती।



* मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के माने गये हैं। यथा—
१. ब्राह्म। २ दैव। ३ आर्ष। ४ प्राजापत्य। ५. आसुर। ६. गान्धर्व। ७. राक्षस। ८. पैशाच। —मनुस्मृति अ० ३–२१.

प्रत्येक विवाह का विस्तृत रूप मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक २३ से ३४ तक में वर्णित है।

१. राज वर्ग

राजधानी—कोट। राजधानिका। रियासत। स्कन्धावार।

राज्य*—मण्डल। जनपद। देश। प्रदेश। राष्ट्र। विषय। उपवर्त्तन। (मुल्क)। (बादशाहत)।

राज्य-व्यवस्था—राजनियम। नीति। (कानून)।

राज्याभिषेक—राजगद्दी। राज्यारोहण।

दुन्दुभी—नौबत। नगाड़ा। भेरी। आनक। ढक्का। पटह। पटहा। डंका। दमामा।

छत्र—ककुद। राजलक्ष्म। आतपत्र।

चँवर—चामर। प्रकीर्णक। चौरी। चामरा। चामरी। रोमगुच्छक। बालव्यजन।

पूर्णकलश—घटपूर्ण। भद्रकुम्भ। पूर्णकुम्भ।

---

* राज्य के आठ अंग माने हैं गये हैं, जिन्हें राज्याङ्ग वा प्रकृति कहते हैं। यथा—१. राजा, २. अमात्य (मंत्री)। ३. सुहृद। ४. कोष (खज़ाना)। ५. राष्ट्र (प्रजा)। ६. दुर्ग (किला)। ७. बल (शक्ति, सेनादि)। ८. पौरश्रेणी (पुरवासियों का समूह)।

खेमा (पड़ाव)—शिविर। डेरा। निवेश। पटवास। सेना-निवास।

पहरा (गश्त)—सञ्जन। उपरक्षण। चौकी। फेरी। गारद।

क़ैद—कारावास-दण्ड। कारागृह-दण्ड। दण्ड। सज़ा। बन्धन। जेल की सज़ा। बन्ध।

कोड़ा—चाबुक। बेंत। दुर्रा। साँटा। कवर।

देश निकाला की सज़ा—निर्वासन। कालापानी। डामन (डामल)।

फाँसी की सज़ा—प्राणदण्ड। मृत्युदण्ड।

महसूल—शुल्क। लगान। (टैक्स)।

राजगद्दी—नृपासन। भद्रासन। सिंहासन।

हाथी—गज। हस्ती। करी। वारण। मातङ्ग। गजेन्द्र (गयन्द)। कुंजर। सिंधुर। इभ। शुंडाल। कुंभी। नाग। पुष्करी। पद्मी। व्याल। दंती। द्विरद (दुरद)। द्वीप। वितुण्ड। (हाथी का बच्चा = कलभ)।

हथिनी—वसा। वरेणुका। करिणी। धेनुका। वासिता।

मदवाले हाथी—मदोत्कट। मदकल। मत्त। प्रभिन्न।

हाथी की सूड़—शुंड। तुण्ड। कर। शुंडादण्ड।

हाथी का सिक्कड़—शृंखल। निगड़। सांकल। अलान। अन्दुक।

हाथी का मद—मद। दान।

हाथी का अंकुश- आँकुस। शृणी। अंकुश।

हाथी की बोली—चिग्घाड़। गर्जन।

घोड़ा—घोटक। अश्व। घोट। पीती। वीति। तुरंग (तुरग)। वाजी। वाह। हय। सैन्धव। गन्धर्व। अर्वा। हरी। धाराट। जवन। जवी। श्रीभ्राता। अमृतसोदर। वातायन। शालिहोत्री। नरद्रुम। चामरी। एकशफ। सप्ति। सुपर्णा। त्रिमातक। अरुष।

घोड़ी—वानी। अश्वा। वड़वा। घोटकी।

घोड़े की गर्दन के बाल—अयाल। आल।

घोड़े की खुर—खुर। क्षुर। शफा सुन।

घोड़े की बोली—हिनहिनाना।

घोड़े की लगाम—बाग। बागडोर। लगाम।

घोड़े की चाबुक—कषा। सुट्टुकी। कोड़ा। चमोटी। चाबुक।

रथ (लड़ाई के लिये)—स्यन्दन। शताङ्ग।

हवाई-जहाज—पुष्प रथ। पुष्पक विमान। विमान। व्योमयान।

जनाना-रथ—कर्णीरथ। प्रवहण। हयन। डयन।

गाड़ी—शकट। गान्त्री। गन्त्रीक।

पालकी—शिविका। याप्ययान।

डोली—दोला। प्रेंखा। हिंडोल।

बख्तर—कवच। तनत्राण। वर्म। दंशन। कंकटक। जगर। कटक। योग। सन्नाह (सनाह)। कंचुक। उरश्छद।

टोप—शिरस्त्रान। कुंडी। शीर्षण्य। शीर्षक।

गेंद—कन्दुक। गेण्डुक। गेंदा।

धनुर्धर—धन्वी। निषंगी। धनुष्मान्। धानुष्क। धनुर्भृत्। तीरन्दाज।

बर्छीबाज—शाक्तिक।

लट्ठबाज—याष्टिक। लट्ठैत। लाठीबाज।

धनुष—चाप। शरासन। कोदण्ड। कार्मुक। गुणी। तारक। धनु।

धनुष की डोर—गुण (गुन)। मुर्वी। शिंजिनी। प्रत्यञ्चा। मौर्वी। चिल्ला।

बाण—विशिख। शर। नाराच। खग। आशुग। कलम्ब। पत्री। इषु। शायक। अजिह्मग। मार्गण। असुप। काण्ड। प्रषत्क। शिलीमुख। पुंख। क्षुर। इक्षुप्र। सायक।

तरकश—तूण। तूणीर। निषङ्ग। इषुधि। तूणी।

तलवार—खड्ग। चन्द्रहास। करपाल। कृपाण। असि। रिष्टि। करवाल। मण्डलाग्र। कौक्षेयक। सायक। शायक।

ढाल—चर्म। फलक। फल। फर।

गुप्ती—ईली। करपालिका। खाँड़ा।

छुरी—छुरिका। असिपुत्री। असिधेनुका। कत्ती।

युद्ध—लड़ाई। आयोधन। विदारण। आस्कंदन। समर। अनीक। रण। विग्रह। कलह। संप्रहार। अभिसम्पात। संयुग।

अभ्यामर्द । समाघात । आहव । आनाह । विदार । दारण । आनर्त्त । मार काट । मार । दंगा । जूझ ।

तोप—तुपक । गोला । शतघ्नी ।

बन्दूक—गोली । अग्न्यास्त्र ।

भाला—शेल । शल्य । शङ्कु । दीर्घायुध । शल । कुन्त । विषाङ्कुर ।

वध—घात । हिंसा । प्रमापण । निवर्हण । निकारण । निशारण । प्रवासन । परासन । निसूदन । निर्हिंसन । निर्वासन । निर्ग्रन्थन । अपासन । निहनन । क्षणन । मारण । हनन । प्रतिघातन । उद्वासन । प्रमथन । क्रथन । आलम्भ । पिञ्ज । विशर । विशारण । पात । परिघ । परिघातन । कदन । निवारण । समाघात । उत्पात । मार । संघात । निघन ।

चिता—चित्या । काष्ट मठी । चैत्य । चिताचूड़क । चित्य । चिति ।



१०. व्यवसाय वर्ग

जीविका—आजीव। वृत्ति। वर्त्तन। जीवन। वार्त्ता। जीव। जीवनोपाय। जीवन-मार्ग। रोजी। व्यापार। रोज़गार। काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। पर्य्युदच्चन।

ऋण—उद्धार (उधार)। कर्ज़ा।

सूद—ब्याज। कुसीद। कुषीद। अर्थवृद्धि। अर्थप्रयोग। वृद्धिजीविका। वृद्ध्याजीवन।

सूद-खोर—कुसीदक। वृद्ध्याजीवी।

खेती—कृषि। कृषिकर्म। अनृतकर्म। किसानी।

खलियान—खल-स्थान। खलाधान। खरिहान।

कुदार—कुदाल। खनित्र। अवदारण।

हँसुआ—दात्र। लवित्र। दातरी। हँसिया।

हर—हल। हाल। लांगल। सीर। गोदारण।

हरिस—ईषा। लांगल। दण्ड।

हर का-फाल—निरीष। कूटक। फाल। कृषिक। कृषिका।

बैल—वृषभ। बलीवर्द। उक्षा। भद्र। वृष। बरधा।

साँड़—षण्ड। गोपति। विटूचर।

कोठार—कुठला। कोठिला। भंडार। कोठा। बखार।

रस्सी—दाम। दामा। रज्जु (लेजुर)। पशुरज्जु। दामनी। रसरी।

मथानी—रई। छोढ़ी। वैशाख। मन्थ। मन्थान। मन्थदण्डक।

मूलधन—नीवी। परिपण। पूँजी।

नफ़ा—मुनाफा। लाभ। फल।

लेन-देन—विनिमय। निमय। विमय। परिवर्त। प्रतिदान। अदल बदल। एराफेरी।

धरोहर—उपनिधि। गिरों। गिरवी। न्यास। थाती।

बिक्री की वस्तु—विक्रेय। पणितव्य। पण्य। क्रय्य।

बेंचना—विक्रय। विपण।

तौल वा मान—परिमाण। मान। यौतव। यौवत। पाय्य। मान।

तराजू—तुला। तौली। काँटा।

तराजू का पलड़ा—पल्ला। तुलापट। डाल। डल्ला। डलिया।

डाँड़ी—डाँड़। बेंट। डंडा। काँटा।

बाट—बटखरा। बटक।

नकद—नगद। तत्काल-धन।

उधार—(देखो "ऋण" शब्द पृष्ठ २३७)

सस्ता—स्वस्थ। किफायत।

महँगा—महर्घ। कीमती। महँग। मंदा।

दुकान—पण्यशाला। पण्य।

धन—सम्पत्ति। वित्त। द्रव्य। ऋक्थक (रिक्थ)। अर्थ। विभव। भोग्य। लक्ष्मी। वसु। हिरण्य। काञ्चन। भोग। वृद्धि।

जुआ—द्यूत। कैतव। पण। अक्षवती।

वेतन—मजूरी। दक्षिणा। विधा। कर्मण्या। भरण्य। भरण। मूल्य। पुरस्कार। भर्म्म। पण। आजीव। जीवन। वृत्ति। (तनख्वाह)। मेहनताना। कमाई।

सलाई—शलाका। सिक्चा। सींक। सीका। तीली।

दिया-सलाई—दीपशलाका।

भाथी—भस्त्रा। चर्मप्रसेविका। धौंकनी।

कूँची (ब्रश)—तूलिका। इशिका। ईषिका।

घरिया (धातु गलाने का घटिका)—मूषा। कुल्हिया। खरिया। घड़िया।

कसौटी—कष। निकष। क्षाण। कस्।

रेती—पत्रपरशु। व्रश्चन।

बरमा (छेदनेवाला)—वेधनी। बेधनिका। आविध। आस्फोटनी।

कतरनी—कृपाणी। कर्त्तरी। कैंची।

टाँकी—पाषाणदारण। टङ्क।

आरा—क्रकच। करपत्र।

खूँटी—भारयष्टी। मेख। काँटा। टँगनी।

बहँगी—विहङ्गिका । विहङ्गिमा ।

सिकहर—छीका । शीका । शीक्य । काच ।

जाल—बागुर । बन्धनी । मृगबन्धनी ।

फन्दा—कूटयन्त्र । उन्माथ ।

गुड़िया—पुत्रिका । पुत्तलिका । पाञ्चालिका । पुतली । गुड्डुआ । गुड्डुई ।

बाँक (टँगारी)—टँगारा । वृक्षभेदी । वृक्षादन । गैंटा । कुल्हाड़ी ।

चौपड़—शारि फल । अष्टापद ।

[नोट—शतरंज की गोटियों के भी ये ही नाम हैं ।]

पासा—पाशन । अक्ष । देवन ।

अस्तूरा—क्षुरा । क्षुरिका । उस्तरा । छूरा ।

जामिन—प्रतिभू । लग्नक ।

खन्ती—स्तम्बघ्नी । स्तम्बहननी ।

सूई—शूचि ।

तागा—धागा । सूत । डोरा । डोर ।

सिकड़ी—साँकल । जंजीर ।

ताला—तलक । कुल्फ ।

ताली—कुंजी । चाबी ।

कुंडी—कुंडा । कोंढ़ा । कड़ी ।



११. स्वर-तालादि वर्ग

स्वर *—सुर। आवाज़। बोल। ध्वनि। शब्द।

ताल †—ठेका। करतलध्वनि।

---

* संगीत शास्त्रानुसार स्वर के सात भेद हैं, यथा—१. षड्ज। २. ऋषभ। ३. गान्धार। ४. मध्यम। ५. पञ्चम। ६. धैवत। ७. सप्तम। इन्हीं सातों स्वरों को 'सरगम' कहते हैं।

† ताल के मुख्य प्रकार अष्ट, रुद्र, ब्रह्म, इन्द्र और चतुर्दश ये पाँच हैं।

(१) अष्टताल के भेद—१. आड़। २. दोज। ३. ज्योति। ४. चन्द्रशेखर। ५ गञ्जन। ६. पञ्चताल। ७. रूपक। ८ समताल।

(२) रुद्रताल के भेद—१. वीर विक्रम। २. विषम समुद्र। ३. धरण। ४ वीर दशक। ५. मण्डूक। ६. कन्दर्प। ७. डाँशपाहिड़। ८. ध्रुव चरण। ९. दशकोषी। १०. गजेन्द्रगुरु। ११. छटका।

(३) ब्रह्मताल के भेद—१. ब्रह्म। २. विराम ब्रह्म। ३. षटकला। ४. सप्तमात्रा।

(४) इन्द्रताल के भेद—१. देवसार। २. देव चाली। ३. मदनदोला। ४. गुरु गन्धर्व। ५. पञ्चाली। ६. इन्द्रभाष।

(५) चतुर्दश ताल के भेद—१. चिन्हताल। २. चन्द्रमात्रा। ३. देवमात्रा। ४. अर्द्ध ज्योतिका। ५. स्वर्गसार। ६. क्षमाष्ट।

मधुर-स्वर—कल । काकली । मंद स्वर । सूक्ष्म स्वर ।

धीर-स्वर—गम्भीर स्वर । मन्द्र । मद्र ।

उच्च-स्वर—तार स्वर । तीव्र स्वर ।

चढ़ाव—आरोहण । आरोहन । प्ररोहण ।

उतार—अवरोहण । अवरोहन । अवतरण । अधोगमन ।

बाजा *—वाद्य । वादित्र । आतोद्य ।

वीणा—बीन । वल्लकी । विपञ्ची । परिवादिनी ।

मृदङ्ग—मुरज । पखावज ।

ढोल—पणव । पटह । ढक्का । ढोलक ।

डमरू—डिंडिम ।

---

७. धराधरा । ८. वसन्त वाक् । ९. काक कला । १०. वीर शब्दा । ११ ताण्डवी । १२ हर्ष धारिका । १३. भाषा । १४. अर्द्धमात्रा ।

—"सङ्गीत दामोदर" ।

* बाजों के दो भेद हैं—१. जो स्वर निकालते हैं और २. जो ताल देते हैं । पुनः बाजों के चार भेद माने गये हैं—१. तत, २. आनद्ध ३ सुषिर, और ४. घन ।

(१) तत—वीणा, सितार, आदि तार वाले बाजे । (२) आनद्ध—मृदङ्ग, ढोल, तबला आदि ताल देने वाले बाजे । (३) सुषिर वा शुषिर—वंशी, तुरही, शंख आदि मुँह से बजाने वाले बाजे । (४) घन—घंटा, मजीरा, झाँझ, भेरी आदि धातु के बने हुये घनघनाने वाले बाजे ।

तबला—ठेका। डुग्गी। दुक्कड़।

सारंगी—चिकारा। सरंगी।

वंशी—बंसी। बाँसुली। मुरली। वेणु। मुरलिका।

तुरही—शृङ्गी। सिंघा। मुरचंग (मुँहचंग)। विषाण।

मजीरा—मञ्जीर। जोड़ी।

शहनाई—पिपिहरी। नफीरी। रौशन चौकी।

झाँझ—झाल। झल्लरी।

डफला—डफ। चंग।



चतुर्थ खण्ड

१. पशु वर्ग

पशु*—जानवर। चतुष्पद। चौपाया। मृग।

सिंह—हरि। केसरी। केशरी। हर्यक्ष। मृगेन्द्र। मृगराज। पञ्चास्य। पारीन्द्र। श्वेत पिङ्गल। कण्ठीरव। पंचशिख। शैलाट। भीमविक्रम। सटांक। केशी। महावीर। इभारि। मृगारि। क्रव्याद। नखी। मानी। विक्रान्त। बहुबल। दीप्तपिङ्गल। नखरायुध। पुण्डरीक। पञ्चानन। शेर। बबर।

बाघ—व्याघ्र। द्वीपी। शार्दूल। पृदाकु। वनश्व। चित्रक। पुण्डरीक। हिंस्रक। श्वापद। पंचनख। व्याल। गुहाशय। तीक्ष्णदंष्ट्र। भीरु। नखायुध।

व्याघ्र-नख—व्याड़ायुध। करज। नख। नखी। बघनखा। नखाङ्क।

---

* चार पैरों से चलने वाले, सींग-पूछ वाले जीव को पशु कहते हैं। इनमें सभी पशुओं को सींग नहीं होती, परन्तु पूँछ सभी के होती हैं।

नोट—'हाथी' और 'घोड़ा' के पर्य्याय इस वर्ग में नहीं दिये गये हैं। इनके लिये पृष्ठ २३३, २३४ देखिये।

चीता—तरक्ष। मृगादन। तरक्षु। तर्क्षु। तरक्षुक। चित्रक। चित्रकाय। उपव्याघ्र। मृगान्तक। शूर। चित्र व्याघ्र। क्षुद्र शार्दूल।

सूअर—शूकर। वराह। घृष्टी। कोल। किरी। किटि। दंष्ट्री। घोणी। स्तब्धरोमा। क्रोड़। भूदार। पोत्री। दन्तायुध। पृथुस्कन्ध। पोत्रायुध। वह्वपत्य। वन्यस्थ। रोमश।

भेड़िया—वृक। ईहामृग। कोक। वात्सादन। विरुक। छाग भोजी। जनाशन। हुँडार। बीघ। बग्घा। लकड़बग्घा।

गैंड़ा*—गण्डक। खड्गी। खड्ग। गण्डा।

भालू—रीछ। ऋक्ष। भल्ल। भल्लूक। अच्छ भल्ल। अच्छ।

भैंसा—महिष। लुलाय। लुलाप। कासर। सैरिभ। वाहद्विष। यमवाहन। विषज्वर। वंशभीरु। रजस्वल। आनूप। रक्ताक्ष। अश्वारि। कलुष। मत्त। विषाणी। गवली। बली।

ऊँट—क्रमेलक। महाङ्ग। मय। दीर्घगति। बली। करभ।

---

* गैंडा—भैंसे के आकार का एक बड़ा पशु होता है, जो जंगलों में नदी के किनारे के दलदलों में पड़ा रहता है। जंगली झाड़ियों की जड़ों और कोपलों को खाता है। इसके पैरों में तीन तीन अँगुलियाँ होती हैं। इसका चमड़ा बिना बाल का अत्यन्त मोटा और कड़ा होता है, जिससे ढाल बनाई जाती है। इसकी नाक पर पैनी सींग होती है, जिससे यह चोट करता है। गंगासागर के पास सुन्दर वन में गैंडे बहुत मिलते हैं।

—"हिन्दी शब्द सागर"।

धूसर। लम्बोष्ठ। रवण। महाजंघ। जवी। जांघिक। दीर्घ। शृंखलक। महाग्रीव। महानाद। महाध्वग। महापृष्ठ। बलिष्ठ। दीर्घ जंघ। ग्रीवी। धूम्रक। शरभ। कण्टकाशन। बहुकर। भीली। अध्वग। मरुद्विप। वक्रग्रीव। वासन्त। कुलनाश। मरुप्रिय। दुर्ग लंघन। भूतघ्न। दासेर। दीर्घ ग्रीव। उष्ट्र। केलि कीर्ण।

गदहा—रासभ। गर्दभ। खर। वैशाख-नन्दन। चक्रीवान्। शीतलावाहन। वालेय। राशभ। शङ्ककर्ण। भूरिगम। धूसराह्वय। वेशव। घूसर। चिरमेही। चारपुंख। चारट। ग्राम्याश्व।

[नोट—गदहे और घोड़ी के संयोग से 'खच्चर' जाति की उत्पत्ति होती है। यह बहुत दीर्घायु और परिश्रमी होता है।]

सियार (गीदड़)—शृगाल। शिवा। गीदड़। फेरु। मृगधूर्त्तक। वञ्चक। जम्बुक। जम्बूक। भूरिमाय। गोमायु। फेरव। मूत्रमत्त। कुरव। श्वधूर्त्त। वनश्वा। घोर बासन। शालावृक। गोमी। कटस्वादक। शिवालु। फेरण्ड। व्याघ्रनायक। निष्ठुर। खल। भीरु।

हरिण *—मृग। कुरङ्ग। अजिनयोनि। सारङ्ग। भीरुहृदय। वातायु। ऋश्य। कुरङ्गम। चारुलोचन। सुरभी।

---

* मृग के भेद—१. कृष्णसार। २. रुरु। ३ न्यङ्कु। ४. रंकु। ५. शंवर। ६. रौहिष। ७. गोकर्ण। ८ पृषत। ९ ऐण। १०. ऋश्य। ११ रोहित। १२. चमर।

तथा हरिण के भेद—१. गन्धर्व। २. शरभ। ३. राम। ४. सृमर।

मृग-चर्म—अजिन । ऐण ।

बन्दर—वानर । शाखामृग । मर्कट । कपि । प्लवङ्ग । प्लवग । कीश । वलीमुख । वनौका । मर्क । प्लव । प्रवङ्ग । प्रवग । प्लवङ्गम । गोलाङ्गूल । कपित्थास्य । हरि । नगाटन । झम्पी । केलिप्रिय । शालावृक । किखि ।

गाय—माहेयी । सुरभी । गोरू । शृंगिणी । अघन्या । अर्जुनी । रोहिणी । गौ । उस्रा । धेनु ।

गाय का बछवा वा बछिया—वत्स । सक्तकरी । बछवा (बछिया) ।

गायों का समूह—गोधन । गोकुल ।

भेंड़ा—मेष । वृष्णि । एड़क । मेढ़ । उरभ्र । उरण । ऊर्णायु । भेंड । हुड़ । शृंगिण । अवि । लोमश । वली । रोमश । भेंड़क । मेंटक ।

बकरा—अज । छाग । छगलक । वस्त । स्तुभ । छगल । तभ । स्तभ । शुभ । बर्कर । क्रयसद । पर्णभोजी । लम्बकर्ण । मेनाद । अल्पायु । पयस्वल । छगड़ी । अबुक । मेध्य । पशु ।

साही—श्वावित् । शल्य ।

---

५. गवद । ६. शश । 'बारहसिंगा' नामक हरिण भी हरिण की एक जाति विशेष है, इसकी सींग के बीच से शाखा रूप में कई सींगें निकलती हैं ।

रुनर = साँभर, चीतल । गवय = नीलगाय । शश = खरहा । ये सब मृग के ही भेद हैं ।

साही के रोम (काँटे)—श्वाविध। शलल। शल। शलली।

बिलार—बिड़ाल। बिल्ली। बिलैया। मार्जार। मार्जारी (स्त्री०)। वृषदंशक। आखुभुक्। विराल। विलाल। दीप्ताक्ष। जाहक। विड़ारक। त्रिशङ्कु। जिह्वाप। मेनाद। सूचक। मायावी। शालावृक। दीप्तलोचन।

कुत्ता*—कुकुर। श्वान। श्वा। शुनक। शुनि। भाषक। कौलेयक। सारमेय। मृगदंशक। भषण। भल्लूक। वक्रलाङ्गूल। वृकारि। रात्रिजागर। कालेपक। ग्राम्यमृग। मृगारि। शूर। शयालु।

[नोट—कुतिया = सरमा, शुनी, कुक्कुरी, भषी आदि।]

खरहा—खरगोश। शश। शशक। शसा।

चूहा—मूषक। उन्दुरु। मूषीक। बभ्रु। पिंग। आखनिक। वृष। वृश। नखी। खनक। बिलकारी। धान्यारि। आखु। बहुप्रज। मूसा।

[नोट—छोटी चूहियों को बालमूषिका, गिरिका, चुहिया, मुष्टी वा मुसटी कहते हैं।]

---

* कुत्ते के ६ गुण—बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः।
प्रभुभक्तश्च शूरश्च षडेते च शुनो गुणाः॥
—'चाणक्यनीति'।

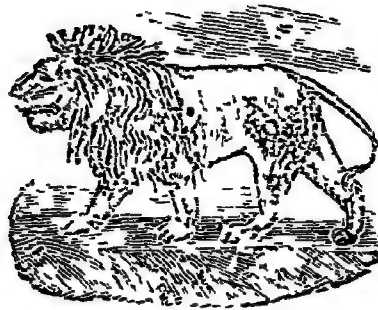
बहु भोजी, स्वल्प सन्तोषी, खूब सोनेवाला, शीघ्र चैतन्य होजाने वाला, प्रभु भक्त और शूर ये छः गुण कुत्ते में होते हैं।

छछून्दर—दीर्घतुण्डिका। गंधमुखी। गंधमूषिका।

नेवला—नकुल। पिङ्गल। सर्पहा। बभ्रु। सूचीवदन। सर्पारि। लोहितानन।

गिलहरी—गिलाई। चेखुर। गिल्ली। गिरि।

[नोट—यह रोयेंदार पूँछवाला जानवर चूहे की एक विशेष जाति है, जो वृक्षों पर विशेषतः रहती है।]



२. सरीसृप वर्ग

शेषनाग—अहिराज । सहसानन । फणीश । धरणीधर । अहीश । नागराज । पन्नगेश । शेष । अनन्त । सर्पपति । महाअहि । सहसमुख । महिधर ।

सर्पराज—वासुकी । वासुकेय ।

सर्प—भुजग । भुजंग । नाग । फणी । द्विरसन । व्याल । अहि । उरग । पन्नग । साँप । दर्पी । चक्षुश्रा । भोगी । पवनाशन । हरि । सारंग । आशीविष । गूढ़पद । विषधर । करदर्प । लेलिहान । जिह्मण । मणिधर । फणधर । चक्री । काल । बिलेशय । कुण्डली । दीर्घपृष्ठ । काकोदर । दन्तशूक । दर्वीकर । तक्षक । गोकर्ण । कुम्भीनस । कञ्चुकी । पृथाकु ।

गोनस-सर्प—गोनस । तिलित्स ।

अजगर-सर्प—शयु । वाहस ।

डेढ़हा-सर्प—जलव्याल । अलगर्द । आनगर्द । अलिगर्द ।

दोमुँहा-साँप—राजिल । डुण्ड ।

करैत-साँप—मालुधान । मातुलाहि । करइत ।

साँप का शरीर—भोग ।

साँप का फन—फण। फटा। फणा। फट। स्फट। दर्व्वी। फटी। स्फुट।

साँप का केंचुल—कञ्चुक। निर्मोक। केंचुली।

साँप का दाँत—अहिदंष्ट्र। आशी।

साँप का विष—क्ष्वेड। गरल। विष। गर। (ज़हर)।

विष—गरल। कालकूट। माहुर। ज़हर। हलाहल। मार। संगर। गर। वत्सनाभ। सौराष्ट्रकी। काकोल। प्रदीपन। ब्रह्मसू। शौल्किकेय।

साँप पकड़नेवाला—सँपेरा। मदारी। व्यालग्राह। गारुड़ी। अहितुंडिक।

बिच्छू—बीछी। अलि। द्रोण। वृश्चन। अरुण। आली।

कान खजूरा—कर्णसूचिका। शतपदी। गोजर। कर्णजलौका।

बिल—कुहर। सुषिर। विल। छिद्र। सुषि। निर्व्यथन। रोक। श्वभ्र। दर। विवर। छेद। वया। सूराख।

गोह—निहाका। गोधिका।

केंचुआ—गण्डूपद। किञ्चुलुक। शिली। गण्डूपदी। शूककीट।

गिरगिट—सरट। कृकलास। गिरगिटान।

छिपकिली—गृहगोलिका। गृहगोधी। गृहगोधिका। मुषली। गृहालिका। विषतुइया। पल्ली।

३. पक्षी वर्ग

पक्षी—खग। विहङ्ग। विहग। विहङ्गम। विहाया। शकुनि। शकुन्ति। शकुन्त। शकुन। द्विज। पत्री। पतत्री। पतग। पत्ररथ। अण्डज। नगौका। वाजी। विकिर। नीडोद्भव। गरुत्मान्। नभसङ्गम। नभचर। नाडीचरण। पतङ्ग। चंचुभृत्। छुरण्ड। सरण्ड। धुग। चिड़िया। चिरई। चिरैया। पंछी।

मोर—मयूर। वर्ही। वर्हिण। नीलकण्ठ। भुजङ्गभुक्। शिखावल। शिखी। चन्द्रकी। सितापाङ्ग। ध्वजी। मेघानन्दी। केकी। कलापी। शिखण्डी। चित्रपिच्छिक। मेघनादानुशासक। भुजगभोगी।

मोर-शिखा—बर्हिचूड़ा। शिखिनी। शिखालु। शिखा। सुशिखा। शिखाबला। केकीशिखा।

मोर-चन्द्रिका—मेचक। चन्द्रक। चन्द्रिका।

पपीहा—चातक। स्तोकक। सारङ्ग। मेघजीवन। हरि। तोकक। पपीहरा। पपैया।

हंस—राजहंस। कलकण्ठ। सितच्छद। सितपक्ष। सरःकाक। पुरुदंशक। धवलपक्ष। मानसालय। श्वेतगरुत्। मानसौक।

बगुला—बलाका । बिसकंठिका ।

बत्तख—कादम्ब । कलहंस । प्लव । कारण्डव ।

सारस—लक्ष्मण । लक्ष्ण । सरसीक । पुष्कराह्व । गोनर्द । नाङ्कुर । सरसीक । सरोत्सव । रसिक । कामी ।

[नोट—मादा सारस = सारसी, लक्ष्मणा ।]

कुररी—कुरर । उत्क्रोश । कुरल । खरशब्द । क्रौञ्च । पंक्तिचर । टिट्टिभ । टिटिह । टिटिहरी । टिड्डी ।

चकवा—कोक । चक्र । रथाङ्ग । भूरिप्रेमा । द्वन्द्वचारि । सहाय । कान्त । कामी । कामुक । रात्रिविश्लेषगामी ।

गरुड़—गरुत्मान् । ताक्ष्र्य । वैनतेय । खगेश्वर । विष्णुरथ । नागान्तक । सुपर्ण । पन्नगाशन । महावीर । पक्षिसिंह । शाल्मली । हरिवाहन । अमृताहरण । खगेन्द्र । भुजगान्तक । तरस्वी । ताक्ष्र्यनायक ।

खंजन—खिड़रिच । खञ्जरीट । कणाटीन । काकछर्दि । खञ्जखेल । तातन । मुनिपुत्रक । भद्रनामा । रत्ननिधि । खञ्जखेट । गूढ़नीड़ । तण्डक । चर । काकच्छद । नीलकण्ठ । कणाटीर । कणाटारक ।

कोयल—कोकिल । परभृत । पिक । वनप्रिय । परपुष्ट । काल । वसन्तदूत । ताम्राक्ष । गन्धर्व । मधुगायन । वासन्त । कलकण्ठ । कामन्ध । काकलीरव । कुहूरव । मत्त । मदनपाठक ।

आड़ी—शराली । आटी । आठी । शराडी । शराटी । शराती ।

गिद्ध—गृद्ध । दूरदर्शन । दाक्षाय्य । वज्रतुण्ड ।

चील—चिल्ल । आतायी । आतापी । पिल्ल ।

कौआ—काक । काग । करट । अरिष्ट । बलिपुष्ट । ध्मांक्ष । आत्मघोष । बलिभुक् । वायस । दीर्घायु । कृष्ण । पिशुन । ग्रामीण । कटखादक । सूचक । काण । धूलिजंघ । कौशिकारि । मुखर । खर । महालोल । चिरंजीवी । चलाचल । करटक । नागवीरक । सकृत्प्रज । गाढ़मैथुन । श्रावक । रतज्वर ।

डोमकौआ—द्रोण काक । काकोल । द्रोण । कालकंटक ।

चमगादर—जतुका । जतूका । चमगुदरो । परोष्णी । तैलपायिका । अजिन पत्रा । चर्मचटिका । चमगीदर ।

हारिल—हरीत । हारिल सुग्गा ।

सुग्गा वा तोता—शुक । कीर । वक्रतुण्ड । मेधावी । रक्तुण्ड । दाड़िमप्रिय । वक्रचञ्चु । चिमि । चिमिक । शूक । प्रियदर्शन । मञ्जुपाठक ।

मैना—सारिका । सारी । पीतपादा । गोराटी । शारिका । गोकिराटिका । चित्रलोचना । मधुरालापा । पूती । मेधाविनी । गोराण्टिका । गोकिराटी । गोरिका । कलह प्रिया । धड़वा ।

तीतिर—तित्तिरी । तैतिर । तीतुर । तीतल । कुक्कुभ । याजुषोदर ।

बटेर—वर्त्तका । वर्त्तिका । वर्त्तिक ।

नीलकंठ—चाष । चास । किकीदिवी । किकीदिव ।

भुजंगा—कलिंग । भृंग । धूम्याट । नौवा ।

कठफोरा—शतपत्रक । दार्वाघाट ।

उल्लू—घुग्घू। उलूक। कौशिक। तामस। घूक। कुशि। दिवान्ध। नक्तञ्चर। निशार। काकारि। घोरदर्शन। लक्ष्मी-वाहन।

बाज—श्येन। शशादन। पत्री। कपोतारि। पतङ्गीरु। घाति पक्षी। ग्राहक। पक्षी। शशाद। क्रव्याद। क्रूर। बेगी। खगान्तक। करग। नीलपिच्छ। लम्ब कर्ण। रणप्रिय। रणपत्री। पिच्छवाण। स्थूल नील। भयंकर। शशघातक। कुही।

लवा—भरदूल। भरद्वाज। भरुई। व्याघ्राट। लाव। भरद्वाजक। कोरक।

कबूतर—कपोत। पारावत। गृहकपोत। कलरव। छेद्य। पारापत। गृहकुक्कुट। रक्तलोचन।

रुरुआ*—कर्करेटु। करेटू। ररुई। कौड़िला।

टिटिहरी—टिट्टिभी। कोयष्टी। टिटिही।

मुर्गा—ताम्रचूड़। अरुणशिखा। कुक्कुट। चरणायुध। कृकवाकु। कालज्ञ। नियोद्धा। विष्किर। नखरायुध। रात्रिवेद। उषाकर। वृताक्ष। काहल। दक्ष। यामनादी। शिखण्डिक। कुक्कुड़।

गौरैया—चटक। कलविंग। चित्रपृष्ठ। गृहनीड़।

---

* कहते हैं कि रुरुआ पक्षी जिस किसी का नाम सुन पाता है, वह उसी नाम की रट लगाने लगता है। जिससे उस मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। यह निचाट रात में बोलता है। इसकी बोली कर्कश होती है और अशुभ मानी जाती है।

वृषायण। कामुक। नीलकण्ठक। कालकण्ठक। काम चारी। कला विकल।

चकोर—चन्द्रिकापायी। कौमुदीजीवन। चकोरक। कोरक।

काका कौआ—काकातूआ। तूआ।

चोंच—चञ्चु। ठोर। टोंट। त्रोटि। चंचू। चंचुका। सृपाटिका। तुंड।

अंडा—पेशी। कोष। पेशीकोष। डिम्ब।

घोंसला—नोड़। कुलाय। खोता।

पंख—पखना। पर। डैना। पक्ष। पत्र। छद। पतत्र। गरुत्।

चिड़ियों के बच्चे—पोत। पोतक। शावक। अर्भक। पाक। डिम्भ। पृथुक। शिशु। पोआ। गेदा।



४. कीट-पतङ्गादि वर्ग

मक्खी—मक्षिका। माखी। माछी। मच्छी। भम्भ। माचिका। पतंगिका। पत्तिका। अमृतोत्पन्ना। वमनीया। नीला। पलङ्कषा। ववंणा।

मच्छर—मच्छड़। डाँस। दंश। सूक्ष्ममक्षिक। वक्रतुण्ड। सूच्यास्य। मसा। (मासा)। वनमक्षिका।

भौंरा—भ्रमर। अलि। मधुकर। मधुव्रत। मधुलिट्। मधुप। द्विरेफ। पुष्पलिट्। भृंग। षट्पद। अली। कालालाप। शिलीमुख। मधुकृत्। द्विप। भसर। चञ्चरीक। सुकाण्डी। मधुलोलुप। इन्दिन्दिर। मधुपर। लम्ब। पुष्पकीट। भृंगराज। मधुमारक। मधुसूदन। मधुलेही। रेणुवास।

मधुमक्खी—मधुमक्षिका। सरघा। शहद की माखी। मछोह। भौंर।

[नोट—शहद की मक्खी चार प्रकार की होती है—पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा, मक्षिका।]

बर्रै—भिड़। ततैया। वरट। वरटा। गन्ध मक्खी। गन्धोली। भिर्रै।

[नोट—लाल बर्रें को 'हड्डा' वा 'हाड़ा' कहते हैं। इनके डंक मारने पर डँसा हुआ स्थान प्रायः पक जाता है और जब तक उसके अन्दर से टूटे हुये डंक के आर नहीं निकल जाते तब तक घाव अच्छा नहीं होता।]

झींगुर—झिल्ली। झिल्लरी। भृंगारी। भीरुका। चीरी। झीरिका। झिल्लिका। चिल्लिका। चीलिका।

फतिंगा—दीपपतङ्ग। शलभ। पतङ्ग। फनगा।

टिड्डा-टिड्डी—शलभ। पत्रांग। पत्राङ्क। पतंग। फनगा।

[नोट—चपड़ा, फनगा आदि अनेक प्रकार के फतिंगों के भी ये ही पर्य्याय होंगे।]

जुगुनू—खद्योत। ज्योतिरिङ्गण। प्रभाकीट। उपसूर्य्यक। तमोमणि। दृष्टिबन्धु। तमोज्योति। ज्योतिरिंग। निमेषक। खज्योति। सोनकिरवा। पटवीजना।

मकड़ी—लूता। तन्तुवाय कीट। मर्कटक। ऊर्णनाभ। मर्कट। लूतिका। शनक। मकरी।

खटमल—खटकीरा। खट्वमल। उद्दंश। उड़ुँस। मत्कुण। कोणकुण। उत्कुण। किटिभि। रक्तपायी। मञ्चकाश्रय।

चीलर—चिल्लड़। चैलकीट। चैलारि।

जूँ—जुँआ। ढील। लीख (लीक)। लिक्षा। लिक्का। लिक्षिका। यूका। केशकीट। पाली। बालकृमि। स्वेदज। षट्पद।

घुन—घुण। काष्ठभेदक। काष्ठकृमि। काष्ठवेधक।

चींटी—च्युँटी। पिपीलिका। पिपील। पीलक। पिपीली।

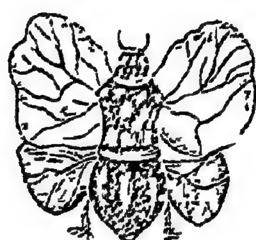
चींटा—च्यूँटा। चिमटा।

लाल चींटा—वेमटा। माटा।

[नोट—यह लालरंग का चींटा होता है जो कि आम, इमली, अमरूद, आदि मीठे फलवाले वृक्षों पर अधिक रहता है। यह बहुत तेज़ काटता है।]

वीरबहूटी—वीरवधूटी। इन्द्रवधूटी। मखमली कीड़ा। वैराट। इन्द्रगोप। अग्निरज। तितिभ। अग्निक। वर्षाभू। रक्तवर्ण।

[नोट—यह छोटी मकड़ी के आकार का लाल मखमल जैसे मुलायम चमड़ेवाला कीड़ा बरसात के आरम्भ मे खेतों और बगीचों में बहुधा पाया जाता है। यह एक प्रकार का उष्मज कीड़ा है, जो वनस्पतियों और भूमि की उष्मा से उत्पन्न होता है।]



५. क्रियादि वर्ग

अकुलाना—व्याकुल होना। घबड़ाना। अधीर होना। आकुल होना। उकताना। ऊबना। अफरना। खिझाना।

अगोरना—रखाना। रखवाली करना। सुरक्षित रखना। यत्न से रखना। चौकी देना।

अघाना—तृप्त होना। पेट भरना। सन्तुष्ट हो जाना। छकना। पूर्ण हो जाना। अफरा उठना। अफराना। हिया भरना। जी भर जाना।

अँगेजना—बरदाश्त करना। सहना। ओज लेना। ओजना।

अचवना—मुँह धोना। कुल्ली करना। आचमन करना। अचवन करना।

अटना—समाना। भरजाना। भरना। पर्य्याप्त होना।

अटकना—रुकना। ठहरना। टिकना। अड़ना। फँसना। बझना। उलझना। अरुझना।

अटकाना—रोकना। ठहराना। टिकाना। अड़ाना। छेंकना। वारण करना। रुकावट डालना। फँसाना। उलझाना। बझाना।

अठिलाना—इतराना। ऐंठना। चोंचलाना (चोंचला

करना)। नखरा करना। ठसक दिखाना। मन्दान्ध होना। ऐंठ दिखाना। इठलाना। मटकाना। चमकाना।

अपनाना—अङ्गीकार करना। स्वीकार करना। अँगेजना। आश्रय देना।

अराधना—सेवना। पूजना। जपना। सुमिरना (स्मरण करना)।

अलसाना—सुस्ती करना। ऊँघना। तन्द्रित होना। मंद होना। ठंडे पड़ना। सुस्ताना। झपकना। प्रमत्त होना।

अवगाहना—थहाना। मथना। घंघोरना। निमज्जना। खँगारना। हिलोरना।

अवमानना—अनादर करना। अपमान करना। निरादर करना। तिरस्कार करना। अवहेलना करना।

अवराधना—[देखो 'अराधना' शब्द]

अलापना—गाना। राग काढ़ना। राग अलापना।

आँकना—अन्दाजना। अनुमान करना। निरखना। समझना।

आना—आगमन होना। उपविष्ट होना। उपस्थित होना। हाजिर होना।

उटकना—(बात) ओटना। बारबार कहना। नंगई करना। बात खोलना। (सं० उत्कथन)।

उकताना—चिढ़ना। चिढ़ाना। ऊबना। उबाना। खीझना। खिझाना। घबड़ाना।

उकसना—चढ़ना। उठना। उभड़ना। उमड़ना। तनना। ऊपर आना। उचकना। उझकना। उछलना। कूद्ना।

उकेलना—उधेड़ना। खोलना। उकिलना। उसिलना। उलटना। उतिनना।

उखड़ना—निकलना। उकसना। उभड़ना। उमड़ना।

उगना—उरोहना। उत्पन्न होना। निकलना। अँकुराना। उभड़ना। बढ़ना। अँखुआना।

उगलना—निकालना। थूकना। कै करना। उलटना। उलटी करना। वमन करना। बाहर करना। ओकाना। प्रकट करना। आगे रखना। ओकलाना। छाँट करना।

उगाहना—वसूल करना। उतारना। तहसीलना। इकट्ठा करना। एकत्र करना।

उघारना—खोलना। नंगा करना। परदा खोलना। व्यक्त करना। प्रकट करना। उद्घाटित करना। जाहिर करना।

उचटना—उखड़ना। टूटना। बिछलना। बिचलना। बिखरना। खिन्न होना। उच्चाट होना। विचलित होना।

उचाड़ना—नोंचना। खसोटना। नकोटना। निकोटना। उधेड़ना। निकालना। अलगियाना।

उछलना—कुदकना। कूदना। उछाल मारना।

उजड़ना—उखड़ना। विनाश होना। बिलटना। नष्ट होना।

उझिलना—उँडेलना। उलटना। ढालना। उलिचना। उदहना। उछिलना। निकालना।

उतरना—धँसना। नीचे आना। अवतरित होना। घटना। आजाना।

उतराना—ऊपर आना। तैरना। पैरना। थिराना। पौढ़ना।

उतारना—नीचे लाना।

[नोट—दूसरे अर्थ में देखो "उकेलना" पृष्ठ २६५]

उथलना—उलटना। औंधाना। नीचे ऊपर करना।

उद्धारना—मुक्त करना। छुटकारा देना। स्वतन्त्र करना। बचाना। तारना। पार लगाना।

उपटना—दाग पड़ना। निशान पड़ना। उभर आना। उपट आना।

उफनना—उबलना। खौलना। गरमा जाना। गरम होना। उथलना। जोश में आना।

उबालना—गरमाना। पकाना। औटाना। खौलाना। जोश लाना। औटना।

ऊँघना—झपकी लेना। तन्द्रित होना। अलसाना। सुस्त पड़ना। पलक मारना। झेंपना।

ऐंठना—उमेठना। मरोरना। मरोड़ना। मुर्री देना। अकड़ना।

ओढ़ना—पहनना। धारण करना। लपेटना।

ककोरना—खुरचना। छीलना। खोदना। उखाड़ना। खुरेदना। कुरेदना। करोना। खींचना।

कचरना—रूँधना। गूँथना। रौंदना। कूँचना। माड़ना। सानना। मसलना। कूटना। मलना। दबाना।

कतरना—काटना। छाँटना। काट-छाँट करना।

करकना—खटकना। गड़ना। चुभना। पीड़ा देना। दुखना। कसकना।

कहना—कथना। वर्णन करना। निवेदन करना। बोलना। कथन करना। बयान करना। उच्चारण करना। भाषण करना। बतराना। बताना। बतलाना। उचारना। संलाप करना।

काटना—कतरना। मारना। तोड़ना। अलग करना। टुकड़े करना।

कोंचना—चुभाना। धँसाना। गड़ाना। गोदना। गुफाना। बीधना। भोकना। गुभाना। खोंसना। घुसेड़ना।

कोसना—अपवाद करना। बुराभला कहना। सरापना। गाली देना। बदकारना। निन्दा करना। शाप देना। जी दुखाना। जलाना। कुढ़ाना। दुःखी करना।

खाना*—भोजन करना। जेवना। भोग लगाना। भोजन पाना। प्रसाद पाना।

खिसकना—टसकना। टलना। हटना। आगे बढ़ना। घिसकना। चम्पत होना। भाग जाना। रफूचक्कर होना।

---

* छः प्रकार के भोजन पदार्थों के अनुसार क्रमश खाने के लिये पर्य्याय शब्द—भक्ष्य, भोज्य = खाना, भोजन करना। चर्व्य = चबाना। चोष्य = चूसना। लेह्य = चाटना। पेय = पीना।

खेलना—क्रीड़ा करना। मौज करना। आनन्द करना। खेल करना। मन लुभाना। बहलना। खेल-कूद करना।

गढ़ना—निर्माण करना। बनाना। रचना। ठोकना। सुधारना। सँवारना।

गन्धाना—बसाना। महकना। सड़ना। बदबू करना। दुर्गन्ध करना।

गर्जना—गाजना। चिग्घाड़ना। गुर्राना। घड़घड़ाना। गर्जन करना।

गलना—पिघलना। द्रवीभूत होना। द्रवित होना। घुलना। आर्द्र करना। नरमाना।

गिरना—पतित होना। पात होना। लुढ़कना। पड़ना। नीचे आ जाना। पतन होना।

गूथना—सीना। टाँकना। पोहना। गुत्थी करना। लगाना। परोहना।

गूँधना—[देखो पृष्ठ २६७ 'कचरना' शब्द]

घिनाना—घृणा करना। नफरत करना। मुँह फेरना। निन्दा करना। जुगुप्सा करना।

घिरना—आवृत होना। छेका जाना। घेर जाना। बझना। बँध जाना। फँस जाना। फँसना।

घिसना—रगड़ना। रगड़ जाना। संघर्षण होना। मलना। घिसियाना।

घुसना—पैठना। प्रविष्ट होना। चुभना। भीतर जाना। धँसना। गड़ना।

घोंटना—चिकनाना। साफ करना। चमकाना।

[नोट—'रगड़ना' के अर्थ में भी 'घोटना' शब्द का प्रयोग होता है।]

चपाना—दाबना। थोपना। लजाना। दबाव डालना। विवश करना।

चभोरना—डुबकी देना। डुबाना। बुड़ाना। बोरना। भिगोना। तर करना। सराबोर करना।

चमकना—दमकना। प्रकाश होना। चमचमाना। बलना। झलकना। लौकना। लहकना।

चलना—गमन करना। आगे बढ़ना। पधारना। पदार्पण करना। विचलित होना। चलायमान होना। बढ़ना। प्रस्थान करना। स्थगित होना। कढ़ना। निकलना। जाना।

चसना—मरना। नष्ट होना। मसकना। फटना। गड़ना। बिगड़ना। टूट-फूट जाना। कसकना।

चहकना—खुश होना। चहचहाना। शोभित होना। प्रसन्न होना। किलकिलाना। खिल उठना।

चहलना—कचरना। माड़ना। काँड़ना। कुचलना। कूचना। गीजना।

चालना—छानना। पछोरना। झारना। फटकना।

चिढ़ना—कुढ़ना। खीझना। चिड़चिड़ाना। झल्लाना। अप्रसन्न होना।

चिताना—बतलाना। बताना। जताना। जतलाना। सूचित करना। सावधान करना। चौकस करना। याद दिलाना। चेत धराना। चैतन्य करना।

चिल्लाना—चीत्कार करना। शोर करना। हल्ला मचाना।

चिलकना—चमकना। टीसना। टीस मारना। दर्द होना। टपकना।

चुभना—धँसना। गड़ना। घुसना। गुदना। कोचाना। पैठना। छिदना। बिधना।

चुराना—हरना। अपहरण करना। चोरी करना। ठगना। लूटना। मूसना। तस्करी। बटमारी करना। गिरहकट्टी करना। छलना। डाका मारना वा पड़ना। डकैती करना। झटकना।

चूकना—भूलना। गलती करना। भ्रम करना।

छजना—शोभना (सोहना)। शोभा देना। सजना। जँचना।

छिड़कना—सींचना। तर करना। छींटना। भिगोना। आर्द्र करना। छिड़काव करना।

छिपना—लुकना। हटना। गुम होना। दुबक रहना। गुप्त रहना वा होना। लुका जाना। अप्रकट होना। आड़ करना। अप्रकाशित होना। ओट में होना।

छूना—स्पर्श करना। हाथ लगाना। परसना।

छेदना—वेधना। पार करना। छिद्र करना। गोदना। गड़ाना। चुभाना। धँसाना। बिल करना।

जनना—जनाना। उत्पन्न करना। प्रसव करना। जन्म देना।

जमाना—(१)—बोना। वपन करना। उत्पन्न करना। (२)—गाढ़ा करना। तह लगाना। थोक करना।

जागना—उठना। चैतन्य होना। सजग होना। जगना। सावधान होना।

जगाना—उद्बोधित करना। चैतन्य करना। उठाना। सजग होना। सावधान करना।

जलना—भस्म होना। खाक होना। स्वाहा होना। नष्ट होना। बरबाद होना। आग लग जाना। दहना। दग्ध होना। बरना (बलना) सुलगना।

जाना—[देखो पृष्ठ २६९ 'चलना' शब्द]

जानना—समझना। पहचानना। परिचय करना। चीन्हना।

जुटाना—जोड़ना। भिड़ा देना। मिलाना। एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमाना। सँजोवना।

जोहना—आशा देखना। राह ताकना। आशावान् होना। राह देखना। समझना। प्रतीक्षा करना। ताकना। ताक लगाना। जोवना। चितवना। बाट देखना।

झकझोरना—हिलाना। हिलोड़ना। कँपाना। झोरना। झकझोरना।

झखना—पछताना। पश्चात्ताप करना। अनुताप करना। रोना। झींखना।

झगड़ना—बकझक करना। विवाद करना। लड़ना। कलह करना। झगड़ा करना। लड़ाई करना। वाद-विवाद करना। सरबर करना। भिड़ना। मुहाँ मुहीं करना। मुहँजोरी करना।

झझकारना—फटकारना। दुत्कारना। तिरस्कार करना। डपटना। डाँटना। हटाना। अवहेलना करना। अनादर करना। अश्रद्धा करना। अवज्ञा करना। झिड़कना। झटकना।

झटकना—(१) छीनना। मार लेना। लूट लेना। (२) दूसरे अर्थ में "झझकारना" के पर्य्याय के अनुसार। उचक लेना।

झड़ना—झरना। टूटकर गिरना। गिरना। पतन होना। स्खलित होना। विचलित होना। टपकना। चूना (चूपड़ना)। विचलना।

झुँझलाना—चिड़चिड़ाना। खीझना। चिढ़ना। कुढ़ना। किटकिटाना।

झाँसना—भुलावा देना। झटक लेना। झाँसा पट्टी देना। फुसलाना। बहकाना। ठगना। धोखा देना।

झाड़ना—(१) साफ़ करना। बुहारना। बटोरना। झारना। झाड़ू देना। (२) गिराना। टपकाना। चुआना।

निचोलना। (३) फूक डालना। मन्त्र फूँकना। (भूतादि बाधा) उतारना। झाड़फूक करना। टोना-टोटका करना।

झुराना—सूखना। सुखाना। मुरझाना। शुष्क होना। झुलसना।

झूमना—काँपना। हिलना। डोलना। लहराना। झोका खाना।

झोंकना—फेंकना। ढकेलना। घुसेड़ना। डालना।

टकराना—टक्कर खाना। टक्कर मारना। धक्का खाना। चोट खाना।

टघलना—टघरना। पिघलना। गलना। द्रवीभूत होना।

टिकना—बसना। ठहरना। रहना। रुकना। अड़ना। अड़कना। थँभना।

टेकना—आश्रय लेना। थाँभना। आड़ना। सहारा लेना। आड़ लगाना। ओट लगाना। टेक लगाना।

टेवना—तेज़ करना। सान चढ़ाना। पैना करना। तीखा करना। धार देना।

टोहना—टोह लेना। पता लगाना वा लेना। खोजना। अनुसन्धान करना। ढूँढ़ना। अन्वेषण करना।

ठगना—भुलावा देना। लूटना। लूट लेना। भुलाना। प्रतारण करना।

ठठना—सजना। रचना। सवँरना। सजधज करना।

ठिठुरना—सर्दियाना। काँपना (सर्दी से)। थरथराना। अकड़ना। जड़ाना। शीत लगना। जमना वा जमजाना।

डगमगाना—लड़खड़ाना। चंचल होना। डोलना। डावाँडोल होना। काँपना। हिलना। इधर-उधर होना। विचलित होना।

ढकेलना—ठेलना। आगे बढ़ाना। रेलना। धक्का देना।

ढाकना—तोपना। झाँपना। मूँदना। बन्द करना। अव्यक्त करना।

तरसना—लालायित होना। ललकना। ललचना। लोभ करना। उत्कण्ठित होना।

तरसाना—प्रलोभन देना। ललचाना। ललकाना। व्यर्थ लालच देना। लोभाना (लुभाना)।

तरेरना—तीक्ष्ण दृष्टि से देखना। लाल आँखें करना। घूरना। आँखें दिखाना। त्योरी चढ़ाना। त्योरी बदलना। आँख-भौं चढ़ाना।

त्यागना—छोड़ना। तजना। त्याग देना। अलग करना।

दहलना—शंकित होना। आतंकित होना। काँपना। शंकाक्रान्त होना। डरना। भयभीत होना। थर्राना।

देखना—ताकना। अवलोकन करना। दृष्टिगोचर करना। निहारना। दर्शन करना। अवलोकना। निरखना। लखना। निरीक्षण करना। घूरना। दृष्टिगत होना। नजर आना। साक्षात् होना। प्रत्यक्ष होना। पेखना (प्रेक्षण)।

देना—प्रदान करना। दान करना। सौंपना। उत्सर्ग करना।

निर्वपण करना। वितरण करना। (बाँटना)। समर्पण करना। उत्सर्जन करना।

दौड़ना—(सं० धोरण)। भागना। पराना (पलायन)। प्रधावित होना। गतिमान होना। सवेग चलना। धावना। भजना। वेगवान् होना। भाजना।

धड़कना—हिलना। दहलना। डरना। कँपना। थर्राना। थरथराना। धुकधुकाना। धड़धड़ाना। फड़कना।

धधकना—भभकना। जल उठना। प्रज्वलित होना।

धमकाना—डराना। धमकी देना। भय दिखाना। डाँटना। झिड़कना। घुड़कना।

धिक्कारना—फटकारना। तिरस्कार करना। निन्दा करना। अपवाद करना।

धोना—साफ करना। पखारना। शुद्ध करना। संघालना। प्रक्षालन करना।

नकारना—अस्वीकार करना। न मानना। मुकरना। इन्कार करना।

नाघना—लाँघना। उल्लंघन करना। छलाँग मारना। डाकना। फलाँग मारना।

निकालना—बाहर करना। खदेड़ना। भगाना। काढ़ना। वहिष्कृत करना। दुरदुराना।

निखारना—उजराना। साफ करना। स्वच्छ करना। धोना। खँगारना। थिराना।

निगलना—लील जाना। घोंट जाना। गटक जाना। गटकना। गपक जाना। (गले के नीचे) उतार जाना। घूँटना।

निथारना—पसाना। निचोड़ना। गारना। फरियाना। साफ़ करना।

निवाहना—निर्वाह करना। पूरा करना। सिद्ध करना। समाप्त करना।

नियराना—नगिचाना। निकट आना। समीप आना। पास आना।

निहुरना—झुकना। नवना। नमित होना। नत होना। मुड़ना। दबना। प्रणत होना।

निवारण करना—मना करना। रोकना। दूर करना। वर्जना। बचाना। हटाना। वारण करना।

निस्तारना—उद्धार करना। बचाना। छुटकारा देना। उबारना। मुक्त करना। त्राण करना।

पकना—सीझना। रँधना। पक होना। सिद्ध होना। चुरना।

पकाना—राँधना। सिद्ध करना। चुराना। सिझाना। उबालना। जोश देना।

पगना—भिनना। डूबना। निमज्जित होना। मग्न होना। रस में डूबना।

पगुराना—जुगाली करना। जुगलाना। चबाना। रोमन्थ करना।

पढ़ना—अध्ययन करना। स्मरण करना। याद करना। रटना। अभ्यास करना।

पढ़ाना—अध्यापन करना। रटाना। अभ्यास कराना।

पलना—पोस पाना। पालित होना। पोषित होना। बढ़ना। प्रतिपालित होना। पनपना।

पलोटना—दबाना। कुचलना। मींजना। सेवना।

पहनना—परिधान करना। धारण करना। लपेटना।

पहचानना—परिचय पाना। जानना। चीन्हना।

पाना—प्राप्त करना। उपलब्ध करना। लहना।

पालना—रक्षा लरना। पोसना। रखना। पालन करना। पोषण करना। भरण करना। प्रतिपालन करना।

पिचकना—सिमिटना। सिकुड़ना। पचकना। दबना। धँसना। चुचुकना। विचिकना।

पिछलना—बिछलना। फिसलना। गिर पड़ना। पड़ना। गिरना। सकिलना। सरकना। (सं० पिच्छिल)।

पीना—पान करना। आचमन करना। अँचवना।

पुकारना—गोहराना। बुलाना। हाँक लगाना। हाँक मारना। डाँकना। आह्वान करना।

पैरना—[देखो पृष्ठ २६६ "उतराना" शब्द]

पोसना—[देखो "पालना" शब्द]

प्रकट होना—प्रकाशित होना। प्रत्यक्ष होना। अवतरित होना। आना। आ जाना। व्यक्त होना। प्रसिद्ध होना। ज़ाहिर होना। विदित होना। स्पष्ट होना। साक्षात्कार होना वा करना। साक्ष होना।

फँदना—फँसना। अटकना। उलझना। बझना। रुकना।

फरकना—चमकना। फड़कना। दमकना। छटकना। थिरकना। फुदकना। उछल-कूद करना। इधर उधर होना।

फूलना—(१) खिलना। हुलसना। प्रफुल्लित होना। आनन्दित होना। प्रसन्न होना। प्रस्फुटित होना। विकसित होना। कुसुमित होना। पुष्पित होना। (२) सूजना।

फेंकना—दूर करना। प्रक्षेपण करना। निकाल देना। त्यागना।

फैलना—पसरना। बिथरना। बिखरना। छिटाना। इधर-उधर होना।

फैलाना—पसारना। छीटना। बिथारना। बिखेरना। प्रचार करना। प्रकाश करना।

बकना—अकबक करना। जल्पना। बकझक करना। बकवाद करना।

बटोरना—संग्रह करना। संकलन करना। एकत्र करना। जुटाना। इकट्ठा करना।

बनाना—प्रस्तुत करना। रचना। तैयार करना। ठीक करना। निर्माण करना।

बरजना—मना करना। वारण करना। निषेध करना। वर्जन करना।

बरना—(१) वरण करना। स्वीकार करना। ब्याह करना। चुनना। निमंत्रण करना। (२) बलना। सुलगना।

बहाना—प्रवाह करना। भसाना। फेंकना। चलाना। बहा देना।

बहाना करना—बातें बनाना। भुलाना। भुलावा देना। बात बदलना। छिपाव करना। छिपाना। दुराव करना।

बहलाना—फुसलाना। बहलाव करना। प्रसन्न करना। मनोरञ्जन करना।

बाँटना—(१) भाग करना। हिस्सा लगाना। बखरा लगाना। बाँट करना। विभाजित करना। विभक्त करना। (२) पीसना। रगड़ना। घिसना।

बासना—सुवासित करना। बसाना। सुगंधित करना। महकाना। गमकाना। गंधाना।

बिचकना—भड़कना। सतर्क होना। सावधान होना।

बिचलना—विचलित होना। फिसलना। बिछलना। खसकना। स्खलित होना। टरकना। टलना। हटना।

बिछुड़ना—जुदा होना। अलग होना। वियोग होना। पृथक् होना।

बिदारना—विदीर्ण करना। फाड़ना। चीरना। करना।

बींधना—डसना। डंक मारना। डॉस मारना। आर धँसाना।

बिलसना—(१) भोगना। उपभोग करना। चमकना। आनन्द करना। मौज उड़ाना। (२) शोभा देना। प्रकाशित होना।

बीतना—समाप्त होना। पूरा होना। व्यतीत होना। गुजरना। अवसान होना।

बूकना—पीसना। कूटना। चूर्ण करना। सफूफ करना।

बेधना—गड़ाना। चुभाना। गोदना। कोचना। धसाना।

बैठना—उपविष्ट होना। उपवेशन करना। विराजना। आसन लगाना वा जमाना। विराजमान होना। स्थिर होना। आसन ग्रहण करना। स्थापित होना। बैसना।

बोलना—[देखो पृष्ठ २६७ "कहना" शब्द]

भकुआना—अकचकाना। भुलाना। चकित होना। कर्तव्य विमूढ़ होना। स्थकित होना। सन्न होना।

भगाना—हटाना। दूर करना। हँकाना। खदेड़ना। खेदना। दुरदुराना।

भजना—(१) भजन करना। स्तुति करना। रटना। विनय करना। आराधना करना। स्मरण करना। उपासना करना। पूजना। अर्चना। ध्याना। गुणानुवाद करना। कीर्त्तन करना। जपना। लव लगाना। (२) भागना। दूर हटना। बिलग होना।

भटकाना—भुलावा देना। धोका देना। बहकाना। भुलाना। भ्रमित करना। भ्रम में डालना।

भड़काना—चमकाना। चौंकाना। झिझकाना। उचाटना। जी हटाना।

भरमाना—ठगना। वञ्चन करना। छलना। धोखा देना। भुलावा देना।

भसाना—[देखो पृष्ठ २७९ "बहाना" शब्द]

भागना—[देखो पृष्ठ २७५ "दौड़ना" शब्द]

भाना—अच्छा लगना। सुहावना लगना। सोहाना। प्रिय लगना। जँचना।

भासना—विदित होना। प्रकाशित होना। ज्ञात होना। शोभित होना। [भास् = शोभा, प्रकाश]

भुनना—भुँजाना। सेंकना। भर्जन करना।

भुलाना—प्रतारण करना। फुसलाना। धोखा देना। छलना। भुलवाना।

भूलना—चूकना। विस्मरण होना। बिसरना। विस्मृत होना।

भेजना—पठाना। पहुँचाना। प्रस्थापित करना।

भेंटना—मिलना। भेंट होना वा करना। मुलाकात करना।

भोंकना—गोदना। चुभाना। घुसाना। घुसेड़ना। ठूँसना।

मचलना—हठ करना। घमंड करना। दुराग्रह करना। ज़िद करना। रूठना। चिढ़ना। मटकना। नंगई करना।

मटकाना—कटाक्ष करना। आँख चमकाना। बिराना (बिड़ाना)।

मथना—महना। बिलोना। बिलोड़ना।

मनाना—प्रसन्न करना। मिन्नत करना। मनौती करना। प्रसादन करना। राज़ी करना।

मरना—निधन होना। प्राणान्त होना। समाप्त होना। अवसान होना। मृत्यु होना। निपात होना। देहान्त होना।

मलना—रगड़ना। मींजना। मसलना। साफ करना। वँसना। मर्दन करना।

मानना—स्वीकार करना। मान जाना। राजी होना।

माजना—स्वच्छ करना। उजराना। निर्मल करना। धोना। (सं० मार्जन)।

मारना—(१) प्राणान्त करने के अर्थ में पृष्ट २३६ "वध" शब्द के पर्य्याय के साथ 'करना' जोड़ देने से बोध हो जायगा।

(२) पीटना। ताड़ना। ठोंकना। ठठाना। पीठपूजा करना।

मिटाना—बिगाड़ना। नष्ट करना। मेट देना। मेटना।

मिलना—प्राप्त होना। उपलब्ध होना। लाभ होना। पाना। जुड़ना (जुरना)। हाथ लगना।

मीचना—ढाकना। ढाँपना। मूँदना। वन्द करना। तोपना।

मुड़ना—घूमना। फिरना। झुकना। टेढ़ा होना। ऐंठना। बल खाना। मुर्री पड़ना।

मुरझाना—सूखना। शुष्क होना। कान्तिहीन होना। मलीन होना। उदास होना। निष्प्रभ होना।

मूड़ना—(१) ठगना। ऐंठना। छलना। धोखा देना। फुसला कर ले लेना। (२) सिर घोंटना। बाल मूँड़ना। बाल काटना।

मूसना—चोरी करना। लूटना। सर्वस्व चोरी जाना। खसोटना।

रचना—निर्माण करना। बनाना। सजाना। तैयार करना। प्रस्तुत करना। विधान करना।

रमना—(१) रमण करना। क्रीड़ा करना। आनन्द करना। जी लगना। मौज उड़ाना। खेलना-कूदना। (२) घूमना। पर्यटन करना। स्वेच्छया यात्रा करना। भ्रमण करना।

रहना—बसना। टिकना। ठहरना। होना। स्थिर होना। स्थान ग्रहण करना। स्थापित होना।

रिसाना—क्रोध करना। रोष करना। रूसना। कोपना।

रीझना—प्रसन्न होना। प्रेम करना। मोहित होना। मुग्ध होना।

रूठना—अप्रसन्न होना। रूसना। कोहाना। झगड़ना। बिगाड़ करना। अनबन होना।

रोकना—कीलन करना। रोक करना। प्रतिषेध करना। थाम्हना। ठहराना। कीलना। प्रतिरोध करना। अटकाना। हटकना। बरजना (वर्जन)।

रोना—रुदन करना। विलाप करना। विलपना। कलपना। राग काढ़ना। आँसू बहाना। प्रलाप करना। दाढ़ें मारना।

रोपना—(१) (पेड़) लगाना। बोना। वपन करना। (२) ठान ठानना। आरम्भ करना।

लखना—पहचानना। ताड़ना (ताड़ जाना)। चीन्हना। देखभाल लेना। जानना।

लजाना—लाज करना। हया करना। व्रीड़ा करना। शर्माना। सकुचाना। संकोच करना।

लटपटाना—लड़खड़ाना। विचलित होना। डिगना। हिलना।

लपेटना—ओढ़ाना। बाँधना। वेठन लगाना।

ललचाना-तरसाना। लुभाना। लालच दिखाना। लहकाना।

लहना—लगना। ठहरना। जँचना।

लहकना—[देखो पृष्ठ २७९ "चकमना" शब्द]

लहकाना- (१) उभाड़ना। चिट्टा देना। ताल देना। शह देना। वहकाना। (२) बालना। सुलगाना। जलाना। धधकाना।

लहलहाना—खिलना। फूलना। विकसना। उमगना। विकसित होना। हराभरा होना।

लादना—बोझना। भरना।

लिपटना—चिपकना। सटना। गले लगना। गले पड़ना। चिमटना। अँगेजना। भिड़ना। चिपटना। जुटना।

लिपटाना—सटाना। भिड़ाना। युक्त करना। गले लगाना। चिपकाना। चिमटाना। अङ्क लगाना। आलिङ्गन करना।

लुटाना—उड़ाना। दे देना। गँवाना। बाँट देना। खोना। बरबाद कर डालना।

लुकना—छिपना। गुप्त रहना। ओट देना। आड़ में आना। हट जाना।

लुटना—हर जाना। छिन जाना। अपहृत होना। नष्ट हो जाना। बरबाद हो जाना।

लेना—ग्रहण करना। स्वीकार करना। अङ्गीकार करना। प्राप्त करना।

लेटना—सोना। शयन करना। ढरकना। पोठ लगाना। पौढ़ना। विश्राम करना।

लौटना—फिरना। पलटना। घूम पड़ना वा जाना। घूमना। वापस आना। मुड़ना।

संचना—जुटाना। जुगाना। बटोरना। संग्रह करना। एकत्रित करना। संचय करना।

सँवारना—सजाना। सिगारना (शृंगार करना)। बनाना। ठठाना। चमकाना।

सकाना—शंकित होना। भयभीत होना। डरना। त्रास पाना।

सकारना—स्वीकार करना। मान लेना। मंजूर करना। हामी भरना।

सड़ना—बसियाना। उबसना। गलना। बजबजाना।

सधना—सिद्ध होना। सिझना। बनना। होना। ठीक होना।

समाना—अँटना। घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। भरना।

समेटना—सिकोड़ना। बटोरना। संकोच करना।

सँभालना—सुधारना। सँवारना। बनाना। प्रबंध करना। थाँभना।

सराहना—प्रशंसा करना। सराहना करना। बखानना। बड़ाई करना।

सहमना—डरना। भय खाना। संकुचित होना।

सहलाना—खुजलाना। सहराना। हाथ फेरना।

सहेजना—सौंपना। सुपुर्द करना। सँभाल करा देना। देख-भाल करना। देखना-भालना। समझ-बूझ लेना। जाँच कर लेना।

सालना—भिदना। चुभना। गड़ना। टीस मारना। टीसना।

सिझाना—[देखो पृष्ठ २७६ "पकाना" शब्द]

सिधारना—जाना। चले जाना। प्रयाण करना। हट जाना। दूर होना।

सिमिटना—सिकुड़ना। बटुरना। जुटना।

सिराना—(१) बन पड़ना। हो सकना। होना। (२) जुड़ाना। ठंडा होना वा पड़ना।

सिहरना—कँपना। थर्राना। डर जाना। घबड़ा जाना।

सींचना—तर करना। सिंचन करना। पानी देना। छिड़कना। छिड़काव करना। भिगाना।

सीना—सिलाई करना। तुरपना। टाँकना। तागना। गाँथना। गूँथना।

सुनना—कर्णगोचर करना। श्रवण करना।

सूँघना—बास लेना। घ्राण लेना। महक लेना। गँध लेना।

सोना—शयन करना। निद्रित होना। खुर्राटे लेना। नींद लेना।

सौंपना—समर्पण करना। सुपुर्द करना। रखना। दे देना।

हँकाना—आगे बढ़ाना। चलाना। बढ़ाना। रेंगाना।

[नोट—"हँकाना" का प्रयोग पशुवर्ग के लिये ही होता है।]

हँसना—स्मित होना। प्रसन्न होना। बत्तीसी दिखाना। खिलखिलाना। हास्य करना। हास करना।

हकबकाना—घबड़ाना। व्याकुल होना। उद्विग्न होना। भौचक्का होना। सन्न होना।

हकलाना—तुतलाना। हकारना।

हटकना—मना करना। निषेध करना। प्रतिषेध करना। रोकना। थाम्हना। अटकाना। बाधा डालना।

हटना—(१) अलग होना। पृथक होना। विलग होना। बिलगाना। किनारे होना वा रहना। किनारा कसना। दूर रहना। दूर भागना। पीछे होना। पीछा दिखाना। मुँह मोड़ना। मुँह चुराना वा लुकाना। जी चुराना। सरक जाना। टलजाना। खसक जाना। (२) बात से हटना = मुकरना। नकारना। बात बदलना।

हटाना—दूर करना। अलगियाना। अलग करना। टाल देना।

हराना— थकाना। जीतना। पराजित करना। हार देना।

हड़पना—हज़म कर लेना। मार लेना। खा डालना। ले लेना।

हारना—(१) पराजित होना। विजित होना। अजयी वा अजित होना। पराभूत होना। अवनत होना। नत होना। (२) बात हारना = वचन देना। बात देना। वचन-बद्ध होना।

हिचकना—आगा पीछा करना। अटकना। रुकना। सन्देह मे पड़ना। संशयित होना। हिचकिचाना।

हिलोरना—घँघोरना। खँगारना। हिलाना। छानना। हलकोरना। लहराना।

हुलसना—प्रसन्न होना। आनन्दित होना। हर्षित होना। आनन्द विभोर होना।

होना—विद्यमान होना वा रहना। उपस्थित रहना। वर्तमान रहना वा होना। रहना।

समाप्त



अकारादि क्रम-सूची

—०—

श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत

रामचरितमानस-सातो काण्ड

नवाह, मास पारायण पाठ-विधि सहित

जिसको श्री १०८ माधोदासजी रामायणी तथा १०८ बा० रामदासजी की सम्मति से श्री बाबा रामबालक दासजी महाराज जिनकी कृपा इस दास के ऊपर है उन्हीं से पठन-पाठन कराकर काशीनिवासी दास पूरणभक्त रामायणी ने संशोधन किया।

❀ उसीको ❀

भार्गव पुस्तकालय काशी ने

निज भार्गवभूषण प्रेस में बढ़िया काग़ज और खूब मोटे मोटे अक्षरों में मुद्रित कर प्रकाशित किया। आशा करते हैं कि प्रत्येक रामायण भक्त इस शुद्ध संस्करण की एक एक प्रति अपने पास रखकर लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रम को सफल करेंगे। पुस्तक बहुत मोटे अक्षरों में चिकने काग़ज पर छापी गई है। जिल्द कपड़े की होते हुए भी मूल्य रफ काग़ज का ३॥) तथा ग्लेज का ४) बिना कमीशन लागत मात्र रक्खा गया है।

पुस्तक मिलने का पता—
भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,
बनारस सिटी।



दूसरा संस्करण

यह पुस्तक क्या है। दुनियाँके दुरंगेपनका मार्मिक चित्र है। इस पुस्तक में लेखक ने चालबाजी, विश्वप्रेम, शासनप्रणाली, विश्वासघात, दरिद्रता, पतिभक्ति, वात्सल्यप्रेम और सौख्य आदिका सच्चा नमूना खींच दिया है। राखाल का मातृ-पितृ हीन होने के कारण ननिहाल में पलना, समय आने पर राज-कन्या से विवाह होना, राजाका राखाल का घरजमाई बनाकर रखना, राखाल की स्त्री मणिमाला की पति भक्ति, राखाल का दीन प्रजा और राजसेवकों पर प्रेम और उनका पक्ष करना, राजाकी प्रजा पर क्रूरता, राखाल और राजा में द्वेष, राखाल का राज्य छोड़कर भागना, राखाल की स्त्री मणिमाला का पति प्रेम में राजत्याग करना, राखाल का राज-कन्या के साथ अपने ननिहालमें दुःखमय जीवन व्यतीत करना, राजाके मर जाने पर रानी के भाई भतीजोंका राज्य, घर, दखल कर रानी का कष्ट देना, राखालका रानी की सहायताकरना, दुष्टों पर विजय, अन्त में अगाध कष्टों को झेल कर राखाल के पुत्र भूपाल का पहाड़पुर के राज्यका अधिकारी होना आदि इसमें इस प्रकारसे लिखा गया है कि एक बार पढ़ने से पुस्तक बिना समाप्त किये छोड़ने को जी नहीं चाहता, अवश्य मँगाकर देखिये। पृष्ठसंख्या ३०४ मूल्य केवल १॥)

पता-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी।

'प्रणय'

(दूसरा संस्करण छप गया)

लेखक—देवनारायण द्विवेदी ।

यह मौलिक उपन्यास एक सत्य घटनाके आधार पर लिखा गया है। इस पुस्तककी कापी पढ़कर द्विवेदीजीके कई साहित्यिक विद्वान मित्रों ने तो यहाँ तक कह डाला कि "यद्यपि कर्त्तव्याघात हिंदीके उपन्यासोंमें बहुत ऊँचा स्थान पा चुका है, तथापि प्रणयकी भाषा, भाव और चरित्र-चित्रण चातुरी इतनी उत्तम है कि यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि ये दोनों पुस्तकें एक ही लेखककी लिखी हुई हैं।" प्रेममें कैसी आकर्षण शक्ति है, मनुष्य में किस प्रकार भ्रांत धारणा उत्पन्न हो जाती है और कोमल हृदय भी कभी कभी कितना कठोर बन जाता है, इसका बड़ा सुन्दर और उपदेश प्रद चित्र खींचा गया है। अल्पावस्था होते हुए भी पंडिता रमाका गाम्भीर्य, उत्साह तथा कष्ट सहिष्णुता एवं निर्लोभके साथ अद्भुत ढंग से देश-सुधार करना और रूठे हुए पतिको विना मनाये ही हिंदी संसार में बिलकुल नयी वस्तु है। अहा ! रमाके चरित्र-बल के सामने उसके पतिको भी लज्जित होकर उससे क्षमा माँगनेका वर्णन कितना हृदय ग्राही और मर्मस्पर्शी है। स्त्री पुरुष दोनों ही के पढ़ने योग्य है। मू० १॥)

पाठकगण इसकी प्रशंसा 'मॉडर्न रिव्यू' आदि प्रतिष्ठित और संसार प्रसिद्ध पत्रिकाओंमें पढ़ चुके होंगे।

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

दर्शनीय सचित्र जन्मपत्र।

संसार में बेजोड़ हजारों की लागत से तैयार, अभूतपूर्व शास्त्रोक्त विधि से उचित २ स्थानों में सैकड़ों चक्रों से सुसज्जित एवं राशियों के चित्र तथा अनेकों तिरंगे पँचरंगे नवग्रहों से सम्भव नौ अवतारों के चित्र, फल लिखने को रूलदार बेलबूटेदार कागज आदि लगाकर इस तरह से छापे गये है कि एक जन्मपत्र जिस गाँव या शहर के मुहल्ले में पहुँच जायगा, वहाँ उसके दर्शन करने को सैकड़ों लोग आवैंगे, ये जन्मपत्र नीचे लिखे माफिक पांच तरह के छापे गये हैं।

(१)	जिसे पण्डित लोग	पाँच	रुपये	में बनावैंगे।	१।)
(२)	,,	दस	,,	,,	१॥।)
(३)	,,	पन्द्रह	,,	,,	२।)
(४)	,,	बीस	,,	,,	४॥)
(५)	,,	पचीस	,,	,,	५॥)

हम इस जन्मपत्र के प्रकाशन से आशा करते हैं कि इस कार्य से सभी वर्ग के लोग प्रसन्न होकर इसे अपनावैंगे।

पुस्तके मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी